“श्रीरामनन्द-साहित्य माला” पुष्प ७२ वाँ

श्रीसीतातत्त्वमुपास्महे

श्रीसीतास्तोत्र सुधासागरः

सम्पादक—

अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव

“प्रेमनिधि”

—: अम्मा से आरजू :—

कबहुँक अम्ब अवसर पाई ।
मेरियौ सुधि ध्यायबी कछु करुण कथा चलाई ॥
दीन सब विधि हीन छीन मलीन अघी अघाई ।
नाम लै भरौं उदर प्रभु एक दासी दास कहाई ॥
बूझिहैं सो है कवन ? कहिबी नाम दशा जनाई ।
सुनत रामकृपालु के मेरी बिगरियौ बनि जाई ॥
श्रीजानकी जगजननि जनकी किये वचन सहाई ।
तरै 'तुलसीदास' भव तव नाथ गुण गण गाई ॥

॥ जय जानकनन्दिनी ॥

जय जनकनन्दिनीं जगतवन्दिनि जन अनन्दिनि जानकी ।
रघुवीर नयन चकोर चान्दनी वल्लभा प्रिय प्राण की ॥
तवकञ्जपदमकरन्द स्वादित योगि जन मन अलि किये ।
करि पान किये तन आन हिय निर्वाण सुख आनन्द लिये ॥
सुखखानि मङ्गलदानि जन जिय जानि शरण जो जातु है ।
तव नाथ सब सुख साथ करि, तेहि हाथ रीझि बिकातु है ॥
ब्रह्मादि शिव सनकादि सुरपति, वादि निज पद भाषहीं ।
तव कृपा नयन कटाक्ष चितवनि, दिवस निशि अभिलाषहीं ॥
तनु पाय तुमहिं विहाय जडमति आन मानहिं देवहीं ।
हत भाग्य सुरतरु त्याग करि अनुराग रेंडहि सेवहीं ॥
यह आश रघुवरदास की सुखराशि पूरण कीजिये ।
निज चरण कमल सनेह जनकविदेहजा वर दीजिये ॥

ॐ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम ॐ

"श्रीरामानन्द–साहित्य माला" पुष्प ७२ वाँ

"श्रीसीतातत्त्वमुपास्महे"

॥ श्रीसीता-स्तोत्र सुधा-सागरः ॥

(पूर्वार्द्ध)

जगज्जननी श्रीजानकीजी के दिव्य मङ्गल मय स्वरूप का वर्णन करने वाले वेद-उपनिषद्–तन्त्र-आगम-पञ्चरात्र–इतिहास-रामायण-संहिता तथा पुराणोक्त स्तोत्र-कवच-स्तव-प्रार्थना-स्तुति-सहस्रनाम-शतनाम-द्वादश-नामादिक पूजन पद्धति तथा उनके नित्य परिकरों के स्तोत्रों का प्राचीन अर्वाचीन अप्राप्य दुर्लभ एक साहित्यिक सङ्कलन

सङ्कलनकर्ता :—
श्रीरामानन्द आश्रम श्रीजनकपुर धाम निवासी
पंडित अवधकिशोरदास श्रीवैष्णव
"प्रेमनिधि"

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

प्रकाशकः—
श्रीरामानन्द आश्रम
जनकपुर धाम (नेपाल)
वाया जयनगर जि० मधुबनी (बिहार)

निछावर पूर्वार्द्ध १५)
पन्द्रह रुपये
निछावर उत्तरार्द्ध ११)
ग्यारह रुपये

प्रथम संस्करण
प्रति १०००
सम्वत् २०३६

श्रीसीताराम विवाहोत्सव
मार्गशीर्ष (अगहन) शुक्ला
श्रीविवाह पञ्चमी

१—
२—
३—
४—
५-

मुद्रकः—शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य)
श्याम मुद्रणालय, कटरा श्रीअयोध्याजी
(उत्तर प्रदेश)

समर्पणम्

परमपूज्य प्रातःस्मरणीय अनन्त श्रीविभूषित आचार्यचरण

श्रीसीतारामीय श्रीमथुरादासजी महाराज

अनन्त करुणानिधान जिन श्रीसद्गुरु भगवानने

१— श्रीमिथिला अवध में निवास करवा कर श्रीधाम के रहस्य को हृदयङ्गम कराया।

२— श्रीमिथिला-अवध श्रीयुगलधाम में दृढ़ निष्ठा प्रदान की।

३— श्रीमिथिला-अवध का दर्शन करवा कर जीवन कृतार्थ किया।

४— श्रीमिथिला के नाते से श्रीकिशोरीजू से आत्मीय भावना स्नेह सम्बन्ध प्रदान कर श्रीप्रिया प्रियतम से नाता जोड़ा।

५— अन्तर्यामी स्वरूप से अन्तर में विराजमान होकर यह "श्रीसीतास्तोत्र सुधासागर" की विशाल आनन्द भरी मधुर ललित तरङ्गे लहरायीं।

उन दीनदयालु श्रीसद्गुरु भगवान के शीतल सुखद अभय वरद करकमलों में यह "श्रीसीतास्तोत्र सुधासागर" सादर सविनय सप्रेम समर्पित है।

आपका ही वात्सल्य भाजन

एक उच्छृंखल अधम शिष्य

प्रेमनिधि 'अवध'

निवेदन तथा क्षमा प्रार्थना

सीता यश वारिधि निगम, मति पीपिलिका मोरि।
कृपा दृष्टि स्वामिनि करौं, गाऊँ रतन बटोरि॥
—श्रीराम रसामृत सिन्धु।

श्री किशोरी जी के भाव पूर्ण सुन्दर स्तोत्रों का एक संग्रह हो जाता तथा उसका प्रकाशन कर श्रीजू के धाम निवासियों को एवं श्रीजू के उपासकों को समर्पण करता तो उनको बड़ी प्रसन्नता होती, मेरा भी जीवन कृतार्थ हो जाता, ऐसी भावना बहुत दिनों से हृदय में लहरा रही थी। उनकी कृपा तो अपने बालकों पर निरन्तर बरसती ही रहती है, उसमें भी मेरे जैसे अकिञ्चन निराधार साधन सम्पति हीन अयोग्य बच्चों पर तो अपरम्पार कृपा रहना स्वाभाविक ही है। उनकी वही निर्हेतुकी महती कृपा ने मेरे लाख अस्वस्थ तथा उद्विग्न चित रहने पर भी यह लघु सेवा सहज भाव से करवा ही ली। धीरे-धीरे स्तोत्रों का बहुत सुन्दर तथा विशाल एक संग्रह तैयार हो गया। संस्कृत न समझने वालों के लिए जिन स्तोत्रों की टीका नहीं थी उसकी संक्षिप्त टीका भी उनकी ही कृपा से हो गई। जिनकी टीका उपलब्ध थी वहां परिश्रम उठाने का काम भी न करना पड़ा ज्यों की त्यों छपवा दी गई।

मेरे परमपूज्य श्री सद्गुरु भगवान ने बचपन से ही श्रीजू की उपासना तथा श्रीमिथिला जी के दास्य भाव की शिक्षा दीक्षा देकर इस अधमजन को कृतार्थ कर दिया था, तथा श्री गुरुदेव की ही अनुपम कृपा से श्रीधाम मिथिला में निवास भी प्राप्त हो गया था, अपनी योग्यानुसार दो अक्षर लिखने पढ़ने का अभ्यास भी श्री आचार्य चरणों ने अनुग्रह करके करवा दिया था, पुस्तक लिखने तथा प्रकाशन करने की परम्परा मेरे विद्यार्थी जीवन में ही आपने अपने द्रव्य से अपनी तथा मेरी पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर "श्री रामानन्द-ग्रन्थमाला" के नाम से प्रारम्भ करवा दी थी, उसी का परिणाम है कि आज यह एक विशाल ग्रन्थ आपकी सेवा में समर्पण करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

श्रीधाम में रहकर श्रीकिशोरीजू के गुण न गाये जायँ यह एक भयङ्कर अपराध है, असह्य दुःख है महा कवि हर्ष ने उचित ही कहा है कि—"वाग्जन्म वैफल्यमसह्य शल्यं गुणाढ्य ते वस्तुनि मौनिता चेत्" अद्भुत गुणगणालङ्कृत वस्तु के वर्णन करने में यदि उपेक्षा की जाय वाणी मौन ही रह जाय तो यह जन्म की निष्फलता का एक महान् असह्य दुःख (शूल) विद्वानों के हृदय में खटकता ही रहता है। अनन्त करुणामयी श्री किशोरीजी की कृपा ने कृपा कर उस खटकते हुए मेरे हृदय के शूल को अपने गुणानुवाद गवाकर निकाल कर फेंक दिया। छोटी मोटी कई पुस्तकें "श्री जानकी चालीसा" से लेकर इस "इस श्रीसीता स्तोत्रसुधा सागर" जैसी सेवा करने का सौभाग्य प्रदान कर अधम का उद्धार कर दिया।

अब इसके प्रकाशन का प्रश्न उपस्थित हुआ, आर्थिक सहयोग प्रभु इच्छा से प्राप्त हो उसी में निर्वाह करना, किसी से पैसे की भीख न माँगना" इस श्री सद्गुरु भगवान् के उपदेशानुसार किसी को कुछ न कह कर बिना माँगे जो पैसे गुरुदक्षिणा में मिल जाते उसका संग्रह कर मेरे अन्तिम जीवन में काम आवेंगे अथवा शरीर मुक्ति के पश्चात् संतो की सेवा में भोज भंडारे में लगाने वाले लगा लेंगे ऐसी व्यवहारिक भावना से श्री अवध में जमा कर रखे थे, परन्तु मनीराम ने कहा—" धन संग्रह करना तो साधु का काम नहीं है" "रामभरोसे जो रहे पर्वत पै हरियाय" आगे का काम सम्भालने वाला तो समर्थ स्वामी

शिरपर बोझ है, जिसने आज दिया है वही कल भी देना होगा तो देगा । उड़ाते रहना ही सन्तों की शोभा है । " बस मना था लगा दिये जायँ इस ग्रन्थ रत्न के प्रकाशन में, ऐसी भावना आते ही प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हो गया । सीमित शक्ति तथा स्वल्पधन होते हुए भी मनोरथ तो बहुत बड़ा था, यहाँ तो " चहिय अमिय जग जुरै न छाछी " वाली कहावत चरितार्थ हो रहा थी, इस बीच में कागज का मूल्य तथा छपाई का मूल्य भी तेजी से बढ़ गया अधिक दाम देने पर भी एक नमूने का कागज मिलना दुर्लभ हो गया । मन की सब मन ही मन रह गई । विपरीत वातावरण ने पीछे धकेल दिया ।

मैं चाहता था, ऐसा सुन्दर छपे, ऐसे सुन्दर कागज लगे, ऐसे सुन्दर चित्र लगे, ऐसे सजधज के मनोहर आवरण पृष्ठ के साथ नयन मनोहर रूप में इसका ऐसे सुन्दर से सुन्दर ढङ्ग से प्रकाशन हो कि जो देखे उसी का मन ग्रन्थ पढ़ने को–देखने को–लेने को–श्रवणमनन करने को लालायित हो जाय, परन्तु यह मन की भावना अधूरा ही रह गई ।

मेरे कुछ स्नेही सन्तों ने "यह ग्रन्थ संस्कृत की आधिक्यता वाला है अतः श्रीकाशीपुरी में छपवाने से शुद्ध छपेगा, ऐसी कृपा पूर्ण सम्मति प्रदान की वहाँ छपाई अधिक महँगी पड़ जायेगी, तथा अपनी सुख सुविधा भी यहाँ ठीक है, द्रव्य तथा शक्ति भी सीमित है , यही सब उलटा सीधा अपने मन में विचारकर श्री अवध में सानुकूलता देखकर यहीं कार्य प्रारम्भ करवा दिया । परिणाम तो जो होना था वही हुआ " मृषा न होहि देव ऋषि भाषा '' सन्तों की वाणी सत्य ही होती है, यहाँ के छोटे छोटे प्रेस, अनभिज्ञ कम्पोजीटर–घिसे पिटे पुराने टाइप, प्रूफ रीडरों की असावधानी सबने मिल कर पुस्तक के भविष्य पर आघात पहुँचा ही दिया । जहाँ मैं चाहता था पुस्तक में खोजने पर भी एक अशुद्धि न मिले, वहाँ अशुद्धियाँ आगे खड़ी होकर पुकारने लगीं । अशुद्धियों का और त्रुटियों का भण्डार ही हो गया । विद्वानों के हाथ में देते हुए लज्जा लगे ऐसा कार्य हो गया, परन्तु करूं तो क्या करूं ! अब तो एक भाग्य और विधाता ही ऐसा सीधा है जिसके शिरपर उल्टा सीधा जो मढ़ दिया जाय कुछ भी नहीं बोलता विचारा चुप चाप सब सह लेता है ।

मेरी असावधानी कहें–रोगी शरीर रहने से मस्तिष्क की दुर्वलता का दोष कहें–परिश्रम करने की क्षमता का अभाव कहें–प्रेस वालों की उपेक्षा असावधानता अथवा अज्ञानता कहे–प्रूफ देखने वाले तथा कम्पोजिटरों की अज्ञता एवं अकर्मण्यता कहें–द्रव्याभाव एवं कृपणता को कारण बतावें–मेरे करमचन्द का प्रचण्ड प्रभाव कहें अथवा " सहसा करि पीछे पछिताही '' समझे दोष चाहे जिसपर लगावे जो होना था हो गया । अतएव विद्वान पाठकों से क्षमा प्रार्थना करते हुए यथार्थ परिस्थिति निवेदन कर देना उचित समझकर ये दो चार शब्द विवश होकर लिखने पड़े हैं । यों तो मेरे सभी कार्य त्रुटि पूर्ण ही होते आये हैं तो यह कौन से बच जाता ! मैं इस लिए पुनः पुनः क्षमा प्रार्थना करते हुए आप सबकी कृपा चाहता हूँ ।

अस्तु अब जो है आपकी सेवा में समर्पित है इसके एक-एक पृष्ठ में ही नहीं प्रत्येक पंक्ति में, एक एक वाक्य में अनन्त करुणा मयी श्री सीताराम जी का परम पावन–परम सरस दिव्यामृत स्वरूप गुणानुवाद गाया गया है, परम पुरातन सनातन वेदों से लेकर अर्वाचीन सभी विद्वानों की रचना पर्यन्त पुनीत उद्‌गार इसमें उद्धृत किये गये हैं । ऐसे-ऐसे दुर्लभ कवच स्तोत्र--द्वादशनाम--शतनाम-सहस्रनाम-प्रार्थना--स्तुति-स्तव-पूजन-पद्धति-परिकर--परिचय--ध्यान--वन्दना आदि अप्राप्य साहित्य बड़े परिश्रम से प्राचीन पुस्तक कालयों से ढूढ़ ढूंढ कर इसमें दिया गया है । अनेकों सिद्ध सन्तों की कृपा से उपलब्ध सम्पूर्ण श्रीसीता साहित्य का मन्थन कर यह नवनीत दिव्यामृतस्वरूप ग्रन्थ आपकी सेवा में समर्पण किया जा रहा है । कञ्चन रत्न में यदि धूली लगी हुई हो तो भी उसको स्वच्छ करके अपने रत्नागार भण्डार में सुरक्षित रूप में रख लेने में

एक अपूर्व सुखानुभूति होती है मिट्टी के पात्र में भरे हुए गुण तथा स्वाद में कोई अन्तर नहीं आता है। भगवती भागीरथी के प्रवाहें में आस पास का कूड़ा कर्कट मिल जाने पर भी उस पावन तीर्थ जल को सभी सिर पर चढ़ाते हैं ऐसे ही परमानन्द सच्चिदानन्द प्रदायक इस श्रीजू के स्तोत्रों के सुधासागर में गोते लगाकर आप भी अवश्य प्रेममग्न हो जायेंगे। ऐसी सात्त्विक दिव्य भावना से यह पुस्तक श्रीजू के श्रीचरणारविन्दों के उपासकों की सेवा में समर्पण किया जा रहा है आशा है। आप मेरी सभी त्रुटियों को भूलाकर इसका दिव्य प्रेम रसामृत रस पान करके कृतार्थ हो जायेंगे। तथा इस अलभ्य दुर्लभ रहस्य ग्रन्थ को अपार भाव से अपना कर सुधीजन मेरा श्रम सफल करेंगे। तथा शुद्ध अशुद्ध किसी रूप से नष्ट होते हुए सैकड़ों स्तोत्रों का प्रकाशन हो जाने से उनकी सुरक्षा हो गयी यही श्रीजू की कृपा क्या कम है! यह उनकी अपरम्पार कृपा का फल है यही समझें जो अन्त में जिन-जिन श्री मिथिला अवध निवासी सबों ने अपने पुस्तकालयों का निरीक्षण करने की अनुमति प्रदान कर मेरे पुस्तक कार्य में सहयोग देकर एवं उचित परामर्श तथा आशीर्वाद देकर मेरे कार्य को सरल बना दिया है, सहयोग प्रदान किया है, मैं उन सभी का कृतज्ञ हूँ, वारंवार उपकार मानकर उनके श्री चरणों में बन्दन करता हूँ।

बहुत प्रयत्न करने पर भी मेरुतन्त्र का "श्री मिथिला माहात्म्य" तथा 'श्री जनकपुर उपनिषद्' उपलब्ध न हो सका तथा सूची पत्रक के अभाव में श्री लक्ष्मण किला अयोध्या के अनेकों दुर्लभ स्तोत्र प्राप्त न हो सके, इस अभाव को श्री किशोरी जी की कृपा से पूर्ण करने का प्रयास इसका द्वितीय संस्करण छपवाने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले अवश्य करेंगे ऐसी मेरी भावना है।

परमपूज्य पण्डित सम्राट श्री वैष्णवाचार्य जी महाराज अहमदाबाद ने अपने तथा पूर्वाचार्यों के प्रकाशित स्तोत्र तो प्रदान किये ही, साथ ही स्वयं अपने कर कमलों से लिखकर अप्राप्य तथा अप्रकाशित स्तोत्रों को देने की कृपा भी की एवं ग्रन्थ प्रकाशन के लिए बार-बार प्रोत्साहन भी देते रहे तथा परमदरणीय पं० श्री रामकुमार दासजी महाराज रामायणी मणिपर्वत श्री अयोध्या, श्री सीतारमशरण जी महाराज श्रीलक्ष्मणकिला श्री परम स्नेही श्रीराम स्नेही दासजी कार्तिकेय सेवासदन गुप्तारघाट श्री अयोध्या, परम प्रिय श्री जानकी दासजी श्री वैष्णव (जयपुर वाले) श्रीरामवल्लभा कुञ्ज, श्रीजानकी घाट, श्री अयोध्या तथा परम पूज्य पं० श्री रामकृपालु शरणजी महाराज अग्निकुण्ड जनकपुर धाम, परमपूज्य वयोवृद्ध सन्त श्री रामसुन्दर शरण जी महाराज श्री चारुशिला कुञ्ज बिहार कुण्ड श्री जनकपुर धाम तथा मेरे प्रिय शिष्य वयोवृद्ध विद्वान् पं० उर्मिलाकान्त शरण 'ज्योतिषीजी' श्री रामानन्द आश्रम जनक पुर धाम इत्यादि सभी का मैं यहां सादर सप्रेम स्मरण करता हुआ उपकार मानता हूं जिनके हार्दिक सहयोग से दुरूह कार्य भी अति सरल भी हो गया है। ये सब श्री किशोरी जी अन्तरङ्ग परिकर हैं, उनके परम प्रिय हैं इन्होंने यह अपना ही कार्य मानकर सबकुछ प्रेम से किया है। मैं इन सब को पाकर अपने को धन्य कृतार्थ मानता हूं।

अन्त में मेरे गुरुजन परमपूज्य श्री मैथिली शरणजी महाराज-श्री माधुरीकुञ्ज, नजरबाग अयोध्याजी का आत्मीय भाव तथा कृपामय आशीर्वाद का स्मरण करते हुए हृदय में परमानन्द होता है, आज्ञा हुई इतना विशाल ग्रन्थ दो भागों में रहना चाहिए अधिक बड़ा हो जाने से पढ़ने वालों को भारी लगेगा। दो भाग बनाने में खर्च बढ़ जायेगा तो मैं दे दूँगा परन्तु एक मोटा पोथा न बनाओ" आपकी ही आज्ञा शिरोधार्य करके इसके पूर्वार्द्ध-उत्तरार्द्ध दो भाग बनाये जाते हैं। पाठकों को भी यह कार्य प्रिय ही लगेगा। ऐसी आशा है।

श्री गुरुपूर्णिमा सं० २०३६
श्रीसीतारामीय सेवा मन्दिर
नजरबाग, श्री अयोध्याजी
(उत्तर-प्रदेश)

निवेदक :-
श्रीजू के सेवकों का अनुचर' श्रीजू का छोटा भैया
अवधकिशोर दास "श्री वैष्णव"
"प्रेमनिधि"

श्रीसीतास्तोत्र सुधासागर (पूर्वार्द्ध)

संहिता—

पुराण—

श्रीजानकीवल्लभ दुलहा भगवान् की झाँकी, श्रीजनकपुर धाम ।

रराजरसघनविग्रह रसिकानामतिप्रियतमश्चाऽसौ । यं वदन्ति रसमुग्धा दुलहाभगवान्निति प्रेम्णा ॥

❀ श्रियः श्रियै श्रीरामवल्लभायै श्रीसीतायै नमः । श्रीजानकी वल्लभो–विजयतेतराम् ❀
❀ श्रीमते हनुमते नमः । श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः । श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः ❀
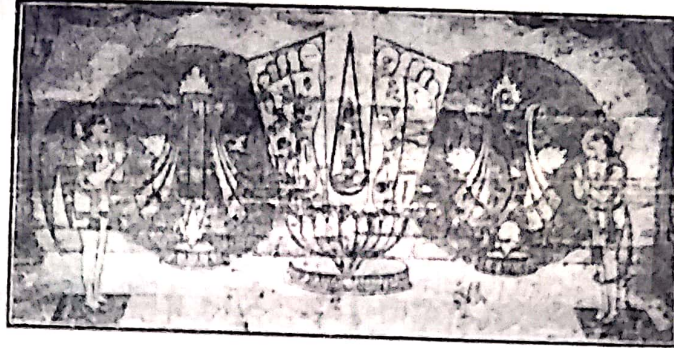
अथ श्रीसीता-स्तोत्र-सुधा सागरः ।

श्री सीता–सूक्तम् (१)

ॐ अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहेत्वा ।
यथा नः सुभगा असति यथा नः सुफला असति ॥१॥

— ऋ० ४।५७।६ अथर्व० ३।१७।८ तैत्तरेय आरण्यक ६।६।२

ॐ घृतेन सीतां मधुना समक्ता,, विश्वेदेवैरनुमतामरुद्भिः ।
सा नः सीते पयसाभ्यववृत् स्वोर्जस्वतीघृतवत्पिन्वमाना ।।२।।

— अथर्व० ३।१७।६

ॐ इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषानुयच्छतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥३॥

— ऋ० ४।५७।७ अथर्व ३।१७।४

ॐ इन्द्र पत्नीमुपह्वये सीता सा मेत्वनपायिनी भूयात् ॥४॥

— पराशरगृह्य सूत्र २।१७।६ ।

यहाँ 'इन्द्र' का अर्थ सर्वैश्वर्य सम्पन्न परब्रह्म श्रीराम ही होता है । क्योंकि 'इन्द्र' देवता की पत्नी का नाम 'सीता' कहीं भी प्राप्त नहीं होता है । अतः "एष ब्रह्मैव इन्द्रः" ऐतरेय उपनिषद् तथा शतपथ ब्राह्मण में ६।५। १ । ३३ में "इन्द्रो यज्ञस्यात्मा" ब्रह्म ही कहा गया है ।

ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्त्वा याथास्तं विपरेतन ॥ ५ ॥

ऋग्वेद १०।८५।३३ अथर्व० १४।२।२८।

❀ ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु ।
श्रेष्ठतमाय कर्मणाऽआप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय ॥
भागं प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मामावस्तेन, ईशतेमाघशंसो ।
ध्रुवाऽअस्मिन् गोपतौस्यात बह्वीयजमानस्यपशून पाहि ॥ ६ ॥

—शुक्ल यजुर्वेद १ । १ ।

सीता भगवती ज्ञेया मूलप्रकृति संज्ञिता । प्रणवत्वात् प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्म वादिनः ।
श्रीरामसानिध्यवशाज्जगदानन्द दायिनी । उद्भवस्थिति संहारकारिणी सर्वदेहिनाम् ॥७॥

—श्रीरामतापनीयोपनिषद्

इच्छा—ज्ञान—क्रियाशक्ति त्रयं यद्भाव साधनम् ।
तद्ब्रह्मसत्ता सामान्यं सीतातत्वमुपास्महे ॥ ८ ॥

—२ । ४ ।—श्रीसीतोपनिषद् ।

ॐ नित्यां निरञ्जनां शुद्धां रामाभिन्नां महेश्वरीम् । मातरं मैथिलीं वन्दे गुणग्रामां रमा रमाम् ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तद्वीपावसुमतीत्रयोलोका अन्तरिक्षं सर्वंत्वयि निवसन्ति । आमोदः प्रमोदः विमोदः सम्मोदः सर्वास्त्वं संधत्से, आञ्जनेयाय ब्रह्मविद्याप्रदात्री धात्री त्वां सर्वेवयं प्रणमावहे प्रणमावहे ॥ ६ ॥

—श्रीमैथिली-महोपनिषदि ॥

ॐ साक्षाच्छक्तिर्भगवतः स्मरणमात्ररूपाविर्भावप्रादुर्भावात्मिका निग्रहानुग्रहरूपा ॥ शक्तितेजो रूपा व्यक्ताव्यक्त कारण चरण समग्रावयवमुखवर्णभेदा भेदरूपा । भगवत् सहचारिणी । अनपायिनी अनवरत सहाश्रयिणी । उदितानुदिताकारा निमेषोन्मेष सृष्टिस्थितिसंहारतिरो—धानानुग्रहादि सर्वशक्तिसामर्थ्यान् साक्षाच्छक्तिरितिगीयते ॥ १० ॥

—श्रीसीतोपनिषदि—१० ॥

श्री सीता—सूक्तम् (१)

हे श्रीसीताजी ! हम आपकी वन्दना करते हैं । जिस प्रकार हमारा परम कल्याण हो वैसी कृपा करने के लिये आप सानुकूल हो जाइये । क्योंकि आप तो अपने भक्तों को परम ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं तथा आश्रितजनों को सुप्रकाशित करने वाली हैं ॥ १ ॥

❀ टिप्पणी:—ईषालाङ्गलदण्डस्यात् । सीतालाङ्गलपद्धतिः—इति अमरः कोष वचनात् ईषे ! सीतायाः सम्बोधनमित्यर्थः ॥

देवताओं द्वारा इस प्रकार पूजा-स्तुति होने के पश्चात् ऋषि-मुनि-मनुष्यों ने प्रार्थना की—

विश्वेदेव तथा मरुद्गणों द्वारा घृत तथा मधु से पूजित तथा स्तुति-प्रार्थना से प्रसन्न की गई हे श्रीसीताजी ! आप घी आदि यज्ञीय द्रव्यों से परिपुष्ट हुई हैं, अत: आप परम तेजस्विनी हैं, कृपा करके आप हमको लौकिक अलौकिक सुखों से सर्वथा परिपूर्ण करिये ॥ २ ॥

विवाह के समय श्रीविदेहराज पुरोहित ने यह मन्त्र पढ़ा—

परमैश्वर्य सम्पन्न परब्रह्म श्रीरामजी श्रीसीताजी को ग्रहण करें। उनका पालन पोषण करने वाले श्रीजनकजी उन श्रीसीताजी को कन्यादान रूप में देवें। किसी की कन्या न होते हुए भी अयोनिजा आद्याशक्ति श्रीसीताजी जो पुत्री रूप से पाली गई हैं वे हम लोगों की पृथिवी को उत्तरोत्तर प्रतिदिन-प्रतिवर्ष कामधेनु के समान सर्वकाम प्रद बनावें ॥ ३ ॥

परब्रह्म की पराशक्ति श्रीसीताजी का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ। वे मेरे लिए अन्नपायिनी (अन्नपूर्णा) बनें। अविचल अक्षय शक्ति प्रदा बनें ॥ ४ ॥

श्रीजनकजी ने श्रीरामजी से कहा—

यह मेरी कन्या सुमङ्गलमयी है। इसको आप वधू रूप में (देखिये) ग्रहण करिये, इसको सब प्रकार का सुख प्रदान करके अब अपने धाम (श्रीअयोध्या) ले जाइये। इस मंत्र में श्री जू की सुखद सेवा सर्वेश्वर भी करते हैं, यह भाव व्यक्त होता है ॥ ५ ॥

हे ईषे ! हे श्रीसीते ! आपकी माया से विजय पाने वाले पराक्रम को प्राप्त करने के लिये मैं आपकी वन्दना करता हूँ। क्योंकि वायु पुत्र पवनकुमार श्रीहनुमानजी के हृदय में विराजमान क्रीड़ा शील सच्चिदानन्द दिव्यमङ्गल विग्रह रविकुल सूर्य श्रीरामचन्द्रजी आपके प्रेमाधीन हैं, उनकी प्राप्ति हम भक्तजनों को आप कृपा करके कराइये। सर्वैश्वर्य सम्पन्न सर्वश्रेष्ठ इन्द्र प्रभु श्रीरामजी के पूजन के लिये अवध्य गायों की अभिवृद्धि करके उनके गव्य दूध-दही-घी आदि परिपुष्ट कीजिये, बढ़ाइये, क्योंकि वे आपकी रक्षणीया हैं। सवत्सा प्रजावती गायें कभी कृमी कीटादि सामान्य रोगपीड़ित न हो तथा यक्ष्मा आदि प्रबल रोग से पीड़ित भी न हों। चोरों के द्वारा कभी चुराई न जायँ। वधिक पापी उन्हें किसी प्रकार का कष्ट देने में समर्थ न हों। इस लोक में रहते हुए हमारी गोपालक (सर्वरक्षक) श्रीरामजी में सदैव दृढ़ प्रीति हो। आप अपनी दया से यजमान (उपासक) के बहुत से पशुओं की सदैव रक्षा करे ॥ ६ ॥

इन मंत्रों का अर्थ तथा मन्त्राङ्क "वेदों में राम कथा" लेखक श्रीरामकुमारदासजी रामायणी मणिपर्वत, अयोध्या की पद्धति के अनुसार लिखा गया है।

श्री सीता—सूक्त का पद्यानुवाद

१— देववृन्दों की प्रार्थना—

कल्याण प्रदा हों हे सीते ? तेरा वन्दन हम करते हैं।
सब विधि से जो अनुकूल रहें, वे भवसागर से तरते हैं ॥

जो परमैश्वर्य प्रदान सदा,निज भक्त जनों को करती हैं।
चरणाश्रित का सुप्रकाश सदा, करके जो आनन्द भरती हैं॥

२— ऋषि-मुनि-भक्तजनों की प्रार्थना—

विश्वेदेव तथा मरूद्गण, द्वारा घृत-मधु से पूजितहैं।
स्तुति और प्रार्थना से प्रसन्न, परिपुष्ट यज्ञ रव गुञ्जित है॥
हे सीते ? तेजस्विनी परम, हम सब पर पूर्ण कृपा करिये।
लीलाविभूति और पर विभूति,सुख परमानन्द हिये भरिये॥

३— श्री जनक पुरोहित शतानन्द जी ने यह मन्त्र विवाह के समय पढा—

परब्रह्म-परम ऐश्वर्य युक्त, श्रीराम ! सियाकर ग्रहण करें।
पालक-पोषक श्री जनक आज, अनुमति दें पति को वरण करें॥
जो हैं अयोनिजा-जगदम्बा, कन्या स्वरूप जो पाली है।
प्रतिदिन पृथिवी को कामधेनुवत् करें शस्य सुखशाली वे॥

४— श्री जनक जी ने श्रीराम जी से कहा—

मङ्गलमय मेरी मैथिली हैं, वधु रूप आप इनको देखें।
सब प्रकार सुख से रखिये, निजपुर ले जावें, हम देखें॥

५— श्रीभक्तजनों की प्रार्थना-

परब्रह्म की पराशक्ति श्रीसीता आश्रय दायिनी हों।
अविचल-अक्षय-निजशक्ति सदा, मेरे हित ये अनपायिनी हों।

६— हे ईषे ! हे श्रीसीता जी ! तेरी माया से विजय मिले।
हो प्राप्त पराक्रम ऐसा ही, वन्दन करता हूँ हृदय खिले॥
जो वायु पुत्र के अन्तर में, बसते हैं दिव्य मङ्गल विग्रह।
रविकुल रवि वश में तेरे हैं, सच्चिदानन्द लखि प्रेमाग्रह॥
उनकी प्राप्ति सुख पूर्वक हो, ऐसी करूणा हम सब पर हो।
श्रीराघवेन्द्र के पूजन को गायें अवध्य सब धर-धर हों॥
गायें सुपुष्ट हों पयस्विमी, हों प्रजावती हों स्वस्थ सदा।
नहिं किसी रोग से पीड़ित हों, नहिं चोर चुरावे यदा-कदा॥
उनका वध वधिक न करें कभी, गोपालक राम सदैव रहें।
प्रीती हो प्रभु में हम सब की, यह विनय आप स्वीकार करें॥

७— श्रीसीता भगवती सदा जो, प्रकृतिमूल कहाती हैं !
जो ज्ञेय ब्रह्मवादी कहते, प्रणवत्त्व प्राण लहराती हैं॥

जो सदा राम सानिध्य: रहे, जग में आनन्द मचाती है ।
जो उद्भव स्थिति संहार करे,सबको निजतन्त्र चलाती है ।
– श्रीरामतापनीयोपनिषद् ।

७— इच्छा-ज्ञान क्रिया शक्ति , सद्भाव साधना साधक हैं ।
हम उसी ब्रह्म सत्ता समान, श्रीसीतातत्व उपासक हैं ॥
—श्री सीतोपनिषद् ।

६— श्री नित्य-निरञ्जन-परमशुद्ध-श्रीरामाभिन्न महेश्वरी हैं ।
गुण गणागार श्रीजू की श्री,मां मैथिली पूज्य हमारी हैं ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तद्वीप वसुमती लोकत्रय अन्तरिक्ष ।
सब तुममें वसते हैं माता ! आमोद-प्रमोद-विमोदादिक ॥
सम्मोद सर्व धारण करती, ब्रह्म विद्यादात्री धात्री हैं ।
आचार्य अञ्जनी नन्दन की प्रणमामि सदा सुखदात्री हैं ।
--श्री मैथिली-महोपनिषद् ।

१०— साक्षात् शक्ति जो भगवन् की,सप्रेम स्मरण से निजस्वरूप ।
आविर्भाव और प्रादुर्भाव, निग्रहानुग्रह तेजः स्वरूप ॥
हैं परम शक्ति हैं परमतेज जो सर्वप्रकार अनूपा हैं ।
अव्यक्त व्यक्त का कारण हैं जो भेदा भेद स्वरूपा हैं ॥
अनुदित-उदित-निमिषोन्मेष,जो श्रीभगवत् सहचारिणि है ।
निराकार-साकार प्रकट जो, भक्तानुग्रह कारिणि हैं ॥
साकार समग्र सुन्दर स्वरूप,श्री मुख चरणों के दर्शन हैं ।
अनपायिनि निरन्तर आश्रयिणी,जो सदाराम आकर्षण हैं ॥
जो सर्वशक्ति सम्पन्ना हैं,सामर्थ्य अनूपम जिनका है ।
साक्षात् शक्ति वह 'सीता' हैं , वर्णन वेदों में उनका है ।
—श्री सीतोपनिषद् ।

दोहा— श्री-श्री सीता-सूक्त का, यह भाषा अनुवाद ।
प्रेमनिधी पढकर सदा, दीजै आशीर्वाद ॥

॥ इति श्री सीतासूक्त पद्यानुवादः ॥

श्री सूक्तम् (२)

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥
अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् ॥ श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम् ॥३॥
काँसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलन्तींतृप्तांतर्पयन्तीम्॥ पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम्॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्येऽअलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥
आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याऽअलक्ष्मीः ॥६॥
उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ ७ ॥
क्षुत्पिपासामला ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ।८।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ९ ॥
मनसः कामामाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ १० ॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भ्रम कर्दम । श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥ ११ ॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥ १२ ॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेम मालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्म मालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।१४।
तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्,यस्यांहिरण्यं प्रभूतिंगावो दास्योश्वान्विन्देयंपुरुषानहम्
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहूयादाज्यमन्वहम् । श्रियः पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

॥ इति श्री सूक्तं सम्पूर्णम् ॥

अथ श्रीसूक्तम्

हे जातवेद-अग्निदेव ! हिरण्य के समान जिनकी स्वर्णमयी कान्ति है,हरिणी मृगी के समान जो परमचञ्चल है, स्वर्ण तथा रजत की दिव्यमाला धारण करने वाली है, चन्द्रमा के समान जो परम आह्लादिनी तथा प्रकाश स्वरूपा हैं, ऐसी सर्वलक्षण सम्पन्न श्रीलक्ष्मीजी का आप मेरे लिये आवाहन करें। अर्थात् उनकी कृपा से "जासुकृपा निर्मल मति पावौं"सार्थक करें।

सुवर्ण-वर्ण हरिणी¹वत् चञ्चल, हेम रजत माला धारी।
चन्द्रोज्वलसम सुप्रकाश जो, श्री-लक्ष्मी हरिकी प्यारी॥
हे अग्निदेव कर ! आवाहन। उन लक्ष्मी का मेरे कारण॥ १॥
जिससे-हिरण्य-गऊ-अश्वादिक-पाकर प्रसन्न होऊँ सत्वर।
सर्वज्ञ राम ? कर आवाहन,उस अचल लक्ष्मी का अतिसुन्दर॥
अर्थात् सात्विक सद्गुणगणालङ्कृत हमको बनाइये॥ २॥
रथमध्य रहे-आगे घोड़े-गजके निनाद से जगती हैं।
श्रयणीय-शरण्या श्री देवी-अतिपूज्य सदा मम लगती हैं॥

अर्थात् आचार्य स्वरूप सन्तों की कथा श्रवण से जिनकी कृपा प्राप्त होती है,उनकी शरणागति मैं ग्रहण करता हूँ। मुझे अपनावें यही चाहना है॥ ३॥

जो ब्रह्म स्वरूपा-मन्दस्मित–सोने से ढकी दयालू हैं।
ज्योति स्वरूप हैं आत्मतृप्त, भक्तों पर परम कृपालू हैं॥
में आवाहन उनका करता। श्री कमले ! ध्यान सदा धरता॥

जो हिरण्य से भी उत्कृष्ट सुवर्णवाली है,जो अपने ऐश्वर्य में छिपी हुई है,ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि देवगण शक्तियों के सहित जिनकी सेवा करते हैं। जो भक्तों पर सदा द्रवित रहती हैं,जो स्वयं तृप्त रहते हुए भक्तों की आशा तृप्त करती है, पूर्ण करती हैं, जो कमल के समान कोमल हृदय वाले भक्तों के अन्तःकरण में निवास करती हैं। उनका में प्रेम से आवहन करता हूँ॥ ४॥

चन्द्रप्रभा सी अति उज्वल यश से सुप्रकाशित श्री देवी।
जो जगका रक्षण करती हैं, पद रज पूजें वे भी देवी॥
अति पूज्य उदार अतिशय कोमल,श्रीजू की शरणागत आया।
मेरी अपलक्ष्मी दूर करों,मैं वरण करूँ करिये दाया॥ ५॥

मेरी अलक्ष्मी–अविद्या-माया-दरिद्रता नष्ट करने की कृपा करें। क्यों कि आप अपनी-कृपा दया उदारता-सौहार्दता-वात्सल्यतादि चन्द्रकिरणों से सबका परम मंगल करती है॥ ५॥

हे सूर्यसमान सुन्दर लक्ष्मी, तप किया तुम्हारे दर्शन को।
यह वृक्ष वनस्पति बिल्व हुआ, उसके शुभफल के परसन को॥

टिप्पणी– १ हरिणी रूपमरण्ये संचचार ह इतिपुराण वचनात्

अपलक्ष्मी तथा अज्ञान सदा, हो नष्ट कृपामयि कृपा करो।
सुखसम्पति-सन्मति-ज्ञान-विमल शरणागत के उर आप भरो ॥६॥

"बिल्वो लक्ष्म्याः करे भवन्" इति वामन पुराण वचनात् बेल खाने से, हवन करने से, श्रीफल बेल का पूजन करने से लक्ष्मी प्राप्त होती है। अलक्ष्मी माया का आवरण—कठिनकर्म भोग-नष्ट होता है। आप हमारे लिये यह बात सार्थक करें ॥६॥

हे श्री जू! प्रभु के साथ सदा-चिन्तामणि-कीर्ति-मिले सुन्दर।
जिस राष्ट्र में जन्मा हूँ उसमें,हो रिद्धि सिद्धि-कीर्ति सुखकर॥

देवताओं के सखा श्री हरि-के सहित कल्पवृक्ष तथा चिन्तामणि की भांति आप सदा सुखकर हों ऐसी कृपा करें, अर्थात् मैंने अभी जिस योनि में अथवा राष्ट्र में जन्म लिया है उसको सभी प्रकार से सफल समृद्ध बनाकर कृतार्थ हो जाऊँ,हे श्री जू! आप मुझपर ऐसी कृपा करें॥ ७॥

भूख-प्यास-दारिद्रय और मालिन्य दुःख का नाश करूँ।
अपविभूतिअरु अपसमृद्धि का, मेरे घर से निस्कास करूँ॥
दुख-द्वन्द सदा ममदूर करो। हे श्री जू! सुख भरपूर करो ॥८॥

जिसका सुगन्ध से द्वार भरा, जो दुराधर्ष हैं नित्य पुष्ट।
गोमय में नित्य निवास करें, ईश्वरी सभी की सदातुष्ट॥
ऐसी श्री जू का आवहन। करता हूँ प्रेमसहित पावन॥ ६॥

हे श्री जू! हैं अभिलाष यही सब कर्म सत्यसङ्कल्पित हों।
वाणी अमोघ मम सत्य सदा-पशु रूप अन्न से तर्पित हों।
बाह्याभ्यान्तर सब हो पवित्र। उरमें श्रीजू का दिव्य चित्र ॥१०॥

कर्दम से प्रजा हुई तेरी मैं भी कर्दम का शिशु तेरा।
हे पद्ममालिनी! मम कुल में, श्री वास करे विनवैं चेरा॥
मैं तेरा पुत्र दुलारा हूँ। जननी मैं तेरा प्यारा हूँ॥
मेरे कुल में इस लिये बसो,आकर मेरे घर में विलसो ॥११॥

हे लक्ष्मिपुत्र चिक्लीत मुने! जल सहित वसो मेरे घर में।
अपनी माता! श्री देवि अचल, बस जायें मेरे ही कुल में॥
सरस स्नेह हो सुखदाई। श्री जू की कृपा हो चिकनाई ॥१२॥

हे श्रीभगवन्! करूणार्द्र हृदय,कर कमल लिये पुष्टीकरणी।
श्री पद्ममालिनी चन्द्रोज्वल लावें मम गृह पिङ्गल वरणी॥
हे जातवेद! अब कृपा करो। श्रीपद अनुरक्ति हृदय भरो ॥१३॥

वेंत छड़ी कर कंज लिये, सेवा सखियां सब करतीं हों।
सुन्दर उर माला सोने की शोभित सब का मन हरती हैं॥

जो सूर्य प्रभा संयुक्त हेमवर्णाभ लक्ष्मी सुखदायी हैं।
हे रामचन्द्र ! वह करुणामयि, हम देखें कि घर आयी हैं॥ १४ ॥
हे अग्निदेव ! कर आवाहन, अविचल लक्ष्मी मेरे घर में।
आगमन करें जो करुणा से, परिपूर्ण हिरण्य भरें कर में॥
गऊ-दासी-घोड़ा-सेवक जन, मैं प्राप्त करूँ सब सुखकर हो।
परमार्थ-स्वार्थ सब सुफल सदा, प्रभु चरण प्रीति अति सुन्दर हो॥
विनियोग सदा हो सेवा में। सुख उभय लोक का हम पावें॥ १५ ॥
होकर पवित्र अति नियमित हो, गोघृत से हवन करे पावन।
ये पन्द्रह ऋचायें पढ़ा करे, श्री काम सदा ही मन भावन॥
मन इन्द्रिय को वश में रखकर, जप श्रद्धा सह जो करता है।
श्री जू प्रसन्न होती उस पर, वह सबका ही दुःख हरता हैं॥१६॥
पद्यानुवाद यह "प्रेमनिधि"। है पूर्ण हुआ सन्तुष्ट सुखी।
श्री जू की करुणा प्राप्त करें। श्री सूक्त पढ़ें सब दुःख हरें॥
दोहा—सानुवाद श्री सूक्त यह, पढ़िये सन्त सुजान।
प्रेमनिधी को दीजिये श्री पद रति वरदान॥
॥ इति श्री सूक्त पद्यानुवाद ॥

॥ श्रीलक्ष्मी सूक्तम् ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥१॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्योधनंवसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥२॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥३॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृत पुण्यानां भक्तानां सूक्त जापिनाम् ॥४॥
पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।

तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥५॥

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।

धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे ॥६॥

पुत्र पौत्रं धनं धान्यं हस्त्यश्वादिगवे रथम् ।

प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे ॥७॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधव प्रियाम् ।

विष्णु प्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम् ॥८॥

ॐमहालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि ।

तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ ९ ॥

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।

विश्वप्रिये विष्णु मनोऽनुकूले त्वत्पाद पद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥१०॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।

ऋषयः श्रियः पुत्राश्च मयि श्रीर्देवी देवता ॥११॥

ऋण रोगादि दारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः ।

भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥१२॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्य माविधाच्छोभमानं महीयते ।

धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसम्बत्सरं दीर्घमायुः ॥१३॥

॥ इति श्रीलक्ष्मीसूक्तं सम्पूर्णम् ॥

श्री लक्ष्मी सूक्त का पद्यानुवाद

१- हे कमल वासिनि ! कमल हस्त ! उज्वल-सुगन्ध माला धारी ।
भगवती-वल्लभे श्रीहरि की, त्रिभुवन विभूतिदा सुखकारी ॥
मन हरणि सदा मङ्गलकारी । मुझ पर प्रसन्न हों दुःखहारी ॥ १ ॥

२- धन अग्नि है, धन वायु है, धन सूर्य तथा धन वसु सदा ।
धन इन्द्र-बृहस्पति-वरुणदेव, धन अश्विकुमार सदा सुखदा ॥

३- हे गरुड़ ! सोमरस पीवो तुम, वृत्रारि इन्द्र अमृत पीवें ।

हे चन्द्र ! परम धन अमृतमय, मुझको देवें, सुख से जीवें ॥
४- नहि क्रोध न ईर्षा-द्वेष करें, नहि लोभ अशुभ मति दूर रहें ।
श्री सूक्त पाठ जो करते हैं, कृतकृत्य पुण्य मय सदा रहें ॥
५- मुख कमल-कमल पद कमलाक्षी हे पद्म संभवे ! माँ ! कमले !
मुझ पर प्रसन्न ही सदा रहें जिससे सुख पाऊँ माँ ! विमले !
६- अश्व-गऊ-धन देती हो, निज भक्तों को हे महाधनी !
मैं भी सब कुछ हूँ चाह रहा, करिये सनाथ श्रीहरि रमणी !!
७- पुत्र - पौत्र - धन - धान्य तथा हाथी घोड़ा रथ सदा रहे ।
तुम सभी प्रजा की माता हो, हम दीर्घायु हों कृपा करें ॥
८- क्षमा स्वरूपा विष्णु पत्नी ! माधवी श्रीमाधव की प्यारी ।
प्रिय सखि हो प्रभु की श्रीदेवी ! प्रणमामि अच्युते! सुखकारी ॥
९- हम महती देवी को जानें, श्री विष्णु पत्नि का ध्यान धरें ।
प्रेरिका सदा शुभ लक्ष्मी हो, श्रद्धा सह तुम्हें प्रणाम करें ॥
१०- हे कमलमुखी ! प्रिय कमलाक्षी ! कर चरण कमल तेरे कमले !
अनुकूल सदा हो विश्व प्रिये ! करुणामयि ! हमको दर्शन दें ॥
११- आनन्द सुकर्दम श्री दायक, चिक्लीत हैं विश्रुत जगती में ।
ये ऋषी पुत्र हैं श्री जू के, मुझ पर प्रसन्न हो जननी हे ॥
१२- ऋण रोग पाप अपमृत्यु और, दारिद्रय आदि भय शोक ताप ।
हों नष्ट सदा सब मेरे अब, मन की चिन्ता समस्त अभिशाप ॥
१३- वर्चस्व आयु आरोग्य तथा शोभायमान श्री महती हो ।
धन धान्य पशु बहु पुत्र लाभ शतवर्षायु शुभ जगती हो ॥
यह लक्ष्मी सूक्त पद्यानुवाद । हो 'प्रेमनिधी' सुखकर प्रसाद ॥

दोहा—यह श्रीलक्ष्मी सूक्त का, पढ़कर शुभ अनुवाद ।
"प्रेमनिधी" को दीजिये, सिय पद प्रेम प्रसाद ॥

❀ इति श्रीलक्ष्मी सूक्त पद्यानुवाद सम्पूर्णः ❀

अथर्ववेदीया--श्रुतिः

जनकस्य राज्ञः सद्मनि सीतोत्पन्ना सा सर्वपरानन्दमूर्तिः गायन्ति मुनयोऽपि देवाश्च कार्यकारणाभ्यामेवपरा, तथैव कार्यकारणार्थे शक्तिर्यस्याः विधात्री श्रीगौरीणां

सैव कर्त्री रामानन्दस्वरूपिणी सैव जनकस्ययोगफलमिव भाति । महाविष्णोः सर्वाङ्गेषु विहारिणी निरतिशय सौन्दर्य लावण्यमयीं वैष्णवीमहायोगमायापूर्तिमद्भिः ।

—इति अथर्व परिशिष्टे ।

जो श्री जनक महाराज के राजसदन में श्रीसीताजी उत्पन्न हुई हैं, वह परात्परा परमानन्दमयी सर्व प्रकार के सुखों की साक्षात् मूर्ति है । देवता तथा मुनिजन भी उनके गुणों का गान करते हैं । क्योंकि यह कार्य कारण दोनों से परे हैं । तथा कार्य कारण सभी इनकी शक्ति के आधीन है । ब्रह्माणी श्री (लक्ष्मी) तथा पार्वती आदि देवियों को अनन्त रूप बनाकर अनन्त ब्रह्माडों की व्यवस्था अपने हाथ में रखने वाली हैं । परब्रह्म श्रीराम की आनन्द स्वरूपिणी प्राणवल्लभा हैं । मानो यही श्री जनक जी की योगसाधना का परम दुर्लभ फल हैं, ऐसी प्रकाशित हो रही है । महाविष्णु श्रीराम के सर्वाङ्ग में रोम रोम में विहार करने वाली हैं । जिनसे अधिक तो क्या समान भी सौन्दर्य लावण्य कहीं देखने सुनने को नहीं मिलता है, ऐसी वैष्णवी महायोगमाया की यह साक्षात् मूर्ति हैं ।

यह अथर्ववेदीय परिशिष्ट की श्रुति संग्रह ग्रन्थों में तथा टीका ग्रन्थों में अनेक बार दृष्टिगत होती है अतः इसका यहाँ उल्लेख किया गया है ।

—:❀:—

❀ श्रींसीतायै नमः ❀

श्रीसीतोपनिषत्प्रारम्भः
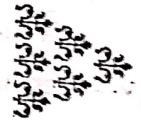
[अथर्ववेदीय]

ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः—

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥
हरिः ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

इच्छाज्ञानक्रियाशक्तित्रयं यद्भावसाधनम् । तद् ब्रह्मसत्ता सामान्यं सीतातत्त्वमुपास्महे ॥

श्री सीता जी के स्वरूप का तात्त्विक वर्णन

हम उपासक लोग, जिसकी प्राप्ति के साधन इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति ये तीन शक्तियां हैं, उस ब्रह्म सत्ता का सामान्य स्वरूप जो सीता तत्व है उसकी उपासना करते हैं ॥ १ ॥

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्का सीता, किं रूपमिति । स होवाच प्रजापतिः सा सीतेति । मूलप्रकृतिरूपत्वात्सा सीताप्रकृति स्मृता । प्रणव प्रकृतिरूपत्वात्सा सीताप्रकृति-रुच्यते । सीता इति त्रिवर्णात्मा साक्षान्मायामया भवेत् । विष्णुः प्रपञ्च बीज च माया ई कार उच्यते । स कारः सत्यममृतं प्राप्तिः सोमश्चकात्यंते । तकारस्तार लक्ष्म्या च वैराजः प्रस्तरः स्मृतः । ईकाररूपिणी सोमामृतावयव दिव्यालङ्कार स्रङ् मौक्तिकाद्याभरणालङ्कृति महामायाऽव्यक्तरूपिणी व्यक्ता भवति ॥२॥

एक बार देवताओं ने प्रजापति ब्रह्मा जी से पूछा कि 'श्री सीता जी कौन हैं? उनका क्या स्वरूप है? तब उन प्रजापति ने बतलाया कि "वे शक्ति रूपा ही श्री सीता जी हैं। मूल प्रकृति स्वरूपा होने के कारण वे सीता जी ही प्रकृति कहलाती हैं। वे श्री सीता जी प्रणव की प्रकृति स्वरूपा होने से भी प्रकृति कही जाती हैं। 'सीता' यह उनका नामात्मक रूप तीन वर्णों का है और वे साक्षात् योगमाया स्वरूपा हैं। सम्पूर्ण जगत्-प्रपञ्च के भगवान् विष्णु बीज हैं और उनकी योगमाया 'ईकार' रूपा है। 'सकार' सत्य, अमृत, प्राप्ति (सभी इच्छित वस्तुओं की प्राप्ति होने की शक्ति) नामक ऐश्वर्य अथवा सिद्धि एवं चन्द्र का वाचक कहा गया है। दीर्घ रूप-मात्रा युक्त 'तकार' महालक्ष्मी का स्वरूप, प्रकाश मय एवं विस्तार (जगत् स्रष्टा) कहा गया है। वे 'ईकार' रूपिणी अव्यक्त रूपा महामाया अपने चन्द्र सन्निभ अमृतमय अवयवों एवं दिव्य अलंकार, माला, मुक्तामालादि आभूषणों से अलंकृत स्वरूप में व्यक्त होती है॥२॥

प्रथमा शब्द ब्रह्ममयी स्वाध्यायकालेप्रसन्ना उद्भावन करी सात्मिका, द्वितोया भूतले हलाग्रे समुत्पन्ना, तृतीया ईकाररूपिणी अव्यक्तस्वरूपा भवतीति सीता इत्युदाहरन्ति । शौनकीये । श्रीरामसान्निध्य वशाज्जगदानन्दकारिणी । उत्पत्तिस्थिति संहार-कारिणी सर्व देहिनाम् । सीता भगवती ज्ञेया मूलप्रकृति संज्ञिता । प्रणवत्वात्प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिन इति । अथातो ब्रह्म जिज्ञासेति च ॥३॥

उनके तीन स्वरूप हैं; जिनमें अपने प्रथम स्वरूप से वे शब्द ब्रह्ममयी हैं। वे बुद्धि स्वरूपा स्वाध्याय काल में प्रसन्न होने पर बोध को प्रकट करती हैं। अपने दूसरे स्वरूप में वे पृथ्वी पर महाराज सीरध्वजजनक की यज्ञ भूमि में हलाग्र से उत्पन्न हुई हैं। इन्हीं तीनों रूपों को 'सीता' कहा जाता है। शौनकीय तन्त्र में निम्नलिखित भाव के श्लोक मिलते हैं। "श्री सीता जी श्रीराम की नित्य सन्निधि के कारण जगदानन्दकारिणी हैं। समस्त शरीर धारियों की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली हैं। श्री सीता जी को मूल प्रकृति कही जाने

वाली षडैश्वर्य सम्पन्ना भगवती जानना चाहिये। प्रणव स्वरूपा होने के कारण ब्रह्मवादी उन्हें प्रकृति बतलाते हैं। ब्रह्मसूत्र के 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' इस सूत्र में उन्हीं का प्रतिपादन है॥३॥

सा सर्ववेदमयी सर्वदेवमयी सर्वलोकमयी सर्वकीर्तिमयी सर्वधर्ममयी सर्वाधार कार्यकारणमयी महालक्ष्मीर्देवस्य भिन्नाभिन्नरूपा चेतना-चेतनात्मिका ब्रह्मस्थावरात्मा तद् गुणकर्मविभाग भेदाच्छरीररूपा देवर्षि मनुष्यगन्धर्वरूपा असुरराक्षस भूत-प्रेत-पिशाच भूतादिभूत शरीररूपा भूतेन्द्रियमनः प्राणरूपेति च विज्ञायते॥४॥

वे श्री सीता जी सर्व वेदमयी, सर्वलोकमयी, सर्वकीर्तिमयी, सबकी आधार भूता, ब्रह्मा जी से लेकर जड़ पदार्थों तक की आत्म भूता, इन सबके गुण एवं कर्म के भेद से सबकी शरीर रूपा, देवता, ऋषि मनुष्य एवं गन्धर्वों की स्वरूप भूता, असुर, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच प्रभृति प्राणियों की शरीर रूपा, पञ्च महाभूत, दस इन्द्रियां, मन एवं प्राण रूपा अर्थात् समस्त विश्व रूपा महालक्ष्मी देवताओं के भी स्वामी भगवान् से भिन्न एवं अभिन्न स्वरूपा जानी जाती हैं॥ ४॥

सा देवी त्रिविधाभवति, शक्त्यासना इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिः साक्षाच्छक्तिरिति। इच्छाशक्तिस्त्रिविधा भवति। श्रीभूमिनीलात्मिका, भद्ररूपिणी प्रभावरूपिणी सोम सूर्याग्निरूपा भवति। सोमात्मिका औषधीनाम् प्रभवति, कल्पवृक्षपुष्पफललतागुल्मात्मिका, औषध भेषजात्मिका, अमृतरूपा देवानां, महस्तोम फलप्रदा, अमृतेन तृप्तिं जनयन्तीं; देवानामन्नेन पशूनां तृणेन तत्तज्जीवानां सूर्यादि सकल भुवन प्रकाशिनी, दिवा च रात्रिःकाल कलानिमेषमारभ्य घटिकाष्टयाम दिवस (वार) रात्रिभेदेन पक्ष मासर्त्वयन वत्सर भेदेन मनुष्याणां शतायुः, कल्पनया प्रकाशमाना चिरक्षिप्र व्यपदेशेन निमेषमारभ्य परार्धपर्यन्तं कालचक्रं जगच्चक्रमित्यादि प्रकारेण चक्रवत् परिवर्तमाना॥५॥

"वे श्री सीताजी शक्त्यासना-शक्ति स्वरूपा होकर इच्छा शक्ति, क्रिया शक्ति एवं साक्षात् शक्ति-इन तीन रूपों में प्रकट होती हैं। इच्छा शक्तिमय उनका स्वरूप भी त्रिविध होता है-श्री देवी, भूमिदेवी एवं नीला देवी के रूप में कल्याण रूपा, प्रभाव रूपा तथा चन्द्र, सूर्य एवं अग्नि रूपा वे होती हैं। चन्द्र स्वरूप में वे औषधियों का पोषण करती हैं। कल्प वृक्ष, पुष्प, फल, लता एवं गुल्मों (झाड़ियों), औषधियों एवं दिव्य औषधियों की स्वरूप भूता होती हैं तथा उसी चन्द्र के अमृत स्वरूप देवताओं के लिये 'महस्तोम' नामक यज्ञ के फल को देने

वाली होती हैं। अमृत के द्वारा देवताओं को, अन्न के द्वारा पशुओं (प्राणियों) को तथा तृण के द्वारा उसपर अवलम्बित रहने वाले जीवों को-इस प्रकार सम्पूर्ण प्राणियों को वे तृप्त करती हैं।

"वे सूर्यादि समस्त भुवनों को लोकों को प्रकाशित करने वाली हैं। दिन, रात्रि, निमेष से लेकर घड़ी प्रभृति काल की कलाएँ, आठ पहरों से युक्त दिन-रात्रि के भेद से पक्ष मास, ऋतु, अयन तथा संवत्सर के भेद से मनुष्यों की सौ वर्ष की आयु की कल्पना के द्वारा वे स्वयं ही प्रकाशित होती हैं। विलम्ब तथा शीघ्रता से उपलक्षित निमेष से लेकर परार्ध पर्यन्त कालचक्र तथा जगच्चक्रादि प्रकार से चक्र के समान घूमने वाले काल के सभी विशेष-विभाग उन्हीं के स्वरूप हैं, जो प्रकाश रूपा एवं कालरूपा हैं ॥ ५ ॥

सर्वस्यैतस्यैव कालस्य विभागविशेषाः प्रकाशरूपाः कालरूपा भवन्ति। अग्निरूपा अन्नपानादि प्राणिनां क्षुत्तृष्णात्मिका, देवानां मुखरूपा, वनौषधीनां शीतोष्णारूपा, काष्ठेष्वन्तर्बहिश्च नित्यानित्यरूपा भवति। श्रीदेवी त्रिविधरूपं कृत्वा भगवत्संकल्पानुगुण्येन लोकरक्षणार्थं रूपं धारयते। श्रीरिति लक्ष्मीरिति लक्ष्यमाणा भवतीति विज्ञायते। भू देवी ससागराम्भः सप्तद्वीपा वसुन्धरा भूरादि चतुर्दश भुवनानामाधाराधेया, प्रणवात्मिका भवति, नीला च मुखविद्युन्मालिनी सर्वौषधीनाम् सर्वप्राणिनां पोषणार्थंसर्वरूपा भवति। समस्त भुवनस्याधो भागे जलाकारात्मिका मण्डूकमयेति भुवनाधारेति विज्ञायते ॥६॥

वे अग्नि रूपा होकर प्राणियों के लिये अन्न एवं जलादिपान के लिये क्षुधा एवं पिपासा रूप से, देवताओं के लिये मुखरूप से [देवता अग्नि में होमे हुए पदार्थ ही पाते हैं], वनौषधियों के लिये शीतोष्ण रूप से, तथा काष्ठों के बाहर एवं भीतर नित्य एवं अनित्य दोनों प्रकार से [नित्य रूप में व्यापक अग्नि तत्त्व एवं अनित्य रुप में प्रज्वलिताग्नि प्रभृति रूपों में स्थित हैं।

वे श्री सीता जी अपने श्री देवी रूप में तीन प्रकार का रूप धारण करके श्री भगवान् के संकल्पानुसार सम्पूर्ण लोकों की रक्षा के लिये व्यक्त होती हैं। वे लोक रक्षणार्थ श्री तथा लक्ष्मी रूप में लक्षित होती हैं, यों जाना जाता है। भूदेवी-सम्पूर्ण जलमय समुद्रों सहित सातों द्वीप वाली पृथिवी के रूप में भूः भुवः आदि चौदहों भुवनों की आधार एवं आधेय भूता प्रणव स्वरूपा होकर व्यक्त होती हैं। विद्युन्माला के समान मुख वाली नीला देवी भी सम्पूर्ण औषधियों एवं समस्त प्राणियों के पोषण के लिये सर्वरूपा हो जाती हैं। समस्त भुवनों के अधो

भाग में, जलाकार, स्वरूप, मण्डूकमयी तथा भुवनों की आधार रूपा वही आदि शक्ति जानी जाती है ॥६॥

क्रियाशक्तिस्वरूपं हरेर्मुखान्नादः । तन्नादाद्बिन्दुः । बिन्दोरोंकारः ॐकारात्परतो राम वैखानस पर्वतः । तत्पर्वते कर्मज्ञानमयीभिर्बहुशाखा भवन्ति । तत्र त्रयीमयं शास्त्रमाद्यं सर्वार्थदर्शनम् । ऋग्यजुः साम रूपत्वात्त्रयीति परिकीर्तिता । ·········कार्यसिद्धेन चतुर्धा-परिकीर्तिता । ऋचो यजूंषिसामानि अथर्वाङ्गिरसस्तथा । चातुर्होत्र प्रधानत्वाल्लिङ्गादित्रितयं त्रयी । अथर्वाङ्गिरसंरूपं साम ऋग्यजुरात्मकम् । तथा दिशान्त्याभिचार सामान्येन पृथक्-पृथक् । एकविंशति शाखायामृग्वेदः परिकीर्तितः । शतं च नवशाखासु यजुषामेव जन्मनाम् ॥ साम्नः सहस्रशाखाः स्युः पञ्चशाखा अथर्वणः । वैखानसमतस्तस्मिन्नादौ प्रत्यक्ष दर्शनम् । स्मर्यते मुनिभिर्नित्यं वैखानस मतःपरम् । कल्पो व्याकरणं शिक्षानिरूक्तं ज्योतिषं छन्दः एतानिषडङ्गानि । उपाङ्गमयनं चैव मीमांसा न्यायविस्तरः । धर्मज्ञसेवितार्थं च वेद वेदोऽधिकं तथा । निबन्धाः सर्वशाखा च समयाचारसङ्गतिः । धर्मशास्त्रं महर्षीणामन्तःकरण संभृतम् । इतिहास पुराणाख्यमुपाङ्गं च प्रकीर्तितम् । वास्तुवेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्च तथा मुने । आयुर्वेदश्च पञ्चैते उपवेदाः प्रकीर्तिताः । दण्डो नीतिश्चवार्ता च विद्या चायुजयः परः । एकविंशति भेदोऽयं स्वप्रकाशः प्रकीर्त्तितः ॥७॥

"उन श्री सीता जी की क्रिया शक्ति रूप श्रीहरि के मुख से नाद के रूप में व्यक्त हुआ। उस नाद से बिन्दु प्रकट हुआ। बिन्दु से ॐकार का आविर्भाव हुआ। ॐकार से परे राम-वैखानस नाम का पर्वत है। उस पर्वत की कर्म एवं ज्ञानात्मिका अनेक शाखाएँ व्यक्त हैं। उसी पर्वत पर वेदत्रयी स्वरूप सर्वार्थ को प्रकट करने वाला आदि-शास्त्र हैं। तात्पर्य यह कि श्रीराम-वैखानस पर्वत ही नित्य वेद स्वरूप है और लोक में वह वेदों के रूप में व्यक्त होता है। उस आदि-शास्त्र को ऋक, यजुः, एवं सामात्मक होने से त्रयी कहा जाता है। कार्य-सिद्धि के लिये चार नामों से उसका वर्णन होता है। अर्थात देव स्वरूप वर्णन के मन्त्र—यज्ञविधि निर्देशक मन्त्र तथा यज्ञ में गाने के मन्त्र ये हीं तीन प्रकार होने से वेदों को त्रयी कहते है, किन्तु यज्ञ में ब्रह्मा, होता, अध्वर्यु एवं उद्गाता के कार्य की दृष्टि से वेदों को चार नामों से सम्बोधित किया जाता है-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्वाङ्गिरस वेद। यज्ञ कर्म में चातुर्होत्र प्रधान है और उसमें देव स्वरूपादि तीन का ही उपयोग होने से वेदों को त्रयी कहते हैं। अथर्वाङ्गिरस वेद साम, ऋक एवं यजुः स्वरूप ही

है। आभिचारिक कर्मों की समानता से इन चारों का पृथक्-पृथक् निर्देश होता है ॥७॥

ऋग्वेद की इक्कीस शाखाएँ कही गयी हैं। यजुर्वेदीयों की एक सौ नौ शाखाएँ हैं। सामवेद की एकसहस्र शाखाएँ हैं और अथर्ववेद की पाँच शाखाएँ हैं। इन वेदों में प्रथम (सर्वश्रेष्ठ) वैखानस मत है, जो प्रत्यक्ष दर्शन है। इसलिये मुनियों द्वारा नित्य परम वैखानस (श्रीरामरूप) का स्मरण किया जाता है। कल्प, व्याकरण, शिक्षा निरुक्त, ज्योतिष तथा छन्द-ये छः वेदाङ्ग हैं। अयन मीमांसा और न्यायशास्त्र का विस्तार-ये वेदों के उपाङ्ग हैं। धर्मज्ञ पुरुषों के सेवन के लिये चारों वेद तथा वेदों से अधिक ये अङ्गउपाङ्गादि हैं। सभी वैदिक शाखाओं में उनके समयाचार (साम्प्रदायिक आचरण) की शास्त्र के साथ संगति लगाने के लिये निबन्ध हैं। धर्मशास्त्रों (स्मृतियों) को महर्षियों ने अपने अन्तःकरण के दिव्य ज्ञान से पूर्ण किया है। मुनियों ने इतिहास-पुराण, वास्तुवेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, तथा आयुर्वेद-ये पाँच उपवेद बताये हैं। इन सबके साथ दण्ड, नीति और व्यापार-विद्या तथा परतत्त्वों में प्राणजय करके स्थिति-इस प्रकार इक्कीस भेदयुक्त यह स्वतः प्रकाश-स्वयं प्रकटित शास्त्र है ॥८॥

वैखानस ऋषेः पूर्वं विष्णोर्वाणी समुद् भवेत्। त्रयीरूपेण संकल्प इत्थं देही विजृम्भते। संख्यारूपेण संकल्प्य वैखानस ऋषेःपुरा। उदितो या दृशः पूर्वं तादृशं शृणुमेऽखिलम्। शश्वद् ब्रह्ममयंरूपं क्रियाशक्तिरुदहृता ॥९॥

साक्षाच्छक्तिर्भगवतः स्मरणमात्र रूपाविर्भावप्रादुर्भावात्मिका निग्रहानुग्रहरूपा, शान्ति तेजोरूपा, व्यक्ताव्यक्तकारणचरणसमग्रावयवमुखवर्णभेदाभेदरूपा, भगवत्सहचारिणी अनपायिनी अनवरत सहाश्रयिणी, उदितानुदिताकारा, निमेषोन्मेष सृष्टिस्थिति संहारतिरोधानानुग्रहादि सर्वशक्ति सामर्थ्यात्साक्षाच्छक्तिरितिगीयते ॥१०॥

"पूर्वकाल में वैखानस ऋषि के हृदय में भगवान् विष्णु की वाणी प्रकट हुई। उसी वाणी को वेदत्रयी के रूप में इस प्रकार कल्पित करके देहधारी अपनी उन्नति करता है। वैखानस ऋषि ने अपने हृदय में प्रकट उस भगवद्वाणी को संख्यारूप में संकल्प करके पहले जिस प्रकार प्रकट किया, उसी प्रकार वह सब मैं बतलाता हूं; सुनो। जो सनातन ब्रह्ममय रूपधारिणी क्रियाशक्ति कही गयी है, वह भगवान् की साक्षात् शक्ति है। भगवान् के स्मरण मात्र (संकल्पमात्र) से वे जगत् के रूपों को प्रकट करती तथा दृश्य-जगत् में स्वयं व्यक्त होती हैं। वे शासन एवं कृपास्वरूपा; शान्ति तथा तेजोरूपा, व्यक्त (प्राणियों की, अव्यक्त (प्रकृति) की कारणभूता एवं उनके चरणादि समस्त अवयव तथा मुख एवं वर्ण (रूपादि) भेदस्वरूपा भगवान् के साथ चलनेवाली (उनके संकल्प से ही गति करनेवाली); भगवान् से कभी विलग न होनेवाली एवं अविनाशिनी, निरन्तर भगवान् के साथ का ही आश्रय करने वाली, कहे हुए और न कहे हुए सभी स्वरूपों वाली, निमेष-उन्मेष से लेकर सृष्टि, स्थिति,

तिरोधान, अनुग्रह आदि समस्त सामर्थ्यों से युक्त होने के कारण साक्षात् शक्ति रूप में वर्णित होती है ॥ ९-१० ।

इच्छाशक्तिस्त्रिविधा प्रलयावस्थायां विश्रमणार्थं भगवतोदक्षिणा वक्षस्थले श्रीवत्साकृति भूत्वा विश्राम्यतीति सा योगशक्तिः ॥११॥

'श्रीसीताजी का इच्छाशक्ति रूप भी तीन प्रकार का है । प्रलय के समय विश्राम के लिये भगवान् के दाहिने वक्षःस्थल पर श्रीवत्सकी आकृति धारण करके जो विश्राम करती हैं, वे योग शक्ति हैं ॥ ११ ॥

भोगशक्तिर्भोगरूपा कल्पवृक्ष कामधेनु चिन्तामणि शंखपद्म निध्यादि नवनिधि समाश्रिता भगवदुपासकानां कामनया अकामनया वा भक्तियुक्ता नरं नित्यनैमित्तिक कर्मभिरग्निहोत्रादिभिर्वा यम-नियमासनप्राणायामप्रत्याहारध्यानधारणासमाधिभिर्वालिमनत्रपि गोपुर प्राकारादिभिर्विमानादिभिः सह भगवद्विग्रहार्चा पूजोपकरणैरर्चनैः स्नानादिभिर्वा पितृपूजादिभिरन्नपानादिभिर्वा भगवत् प्रीत्यर्थमुक्त्वा सर्वं क्रियते ॥ १२॥

भोगशक्ति भोगरूपा हैं । वे कल्पवृक्ष, कामधेनु, चिन्तामणि तथा शङ्ख; पद्म (तथा मकर, कच्छप) आदि नौ निधियों में निवास करती हैं और भगवद्भक्तों की कामना के अनुसार अथवा उनकी कामना के बिना भी नित्य-नैमित्तिक कर्म के द्वारा, अग्निहोत्रादि से अथवा यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि से-किसी भी निमित्त से भगवान् की उपासना करने वालों के उपभोग के लिये बड़े-बड़े भोगों से, विशाल द्वार एवं प्राकरण वाले भवनों से विमानों से अथवा भगवद्वि- ग्रह के अर्चन-पूजनादि की सामग्रियों से अर्चन रुप में स्नानादि (तीर्थ स्नानादि) रुप में, पितृ पूजा आदि के रूप में, अन्न (भोज्य पदार्थ) एवं पीने योग्य रस आदि से, यह भगवान् को प्रसन्न करने के लिये है—यों कहकर वे सब उपभोग-सामग्रियों का सम्पादन करती हैं ॥१२॥

अथातो वीरशक्तिश्चतुर्भुजाऽभय वरद पद्मधरा, किरीटाभरण युता, सर्वदेवैः परिवृता, कल्पतरु मूले चतुर्भिर्गजैरत्नघटैरमृतजलैरभिषिच्यमाना, सर्वदैवतै ब्रह्मादिभिर्वन्द्यमाना; अणिमाद्यष्टैश्वर्ययुता, संमुखे कामधेनुना स्तूयमाना, वेदशास्त्रादिभिः स्तूयमाना, जयाद्यप्सरस्त्रीभिः परिचर्यमाणा, आदित्य सोमाभ्यां दीपाभ्यां प्रकाशमाना, तुम्बुरु नारदादिभिर्गीयमाना, राकासिनीवालीभ्यां छत्रेणाह्लादिनी मायाभ्यां, चामरेण स्वाहा स्वधाभ्यां व्यजनेन, भृगुपुण्यादिभिरभ्यर्च्यमाना, देवी दिव्यसिंहासने पद्मासनारुढ़ा सकल कारण कार्यकरी लक्ष्मीर्देवस्य पृथग्भवन कल्पना । अलंकारस्थिरा प्रसन्नलोचना सर्वदैवतैः पूज्यमाना वीरलक्ष्मीरिति विज्ञायत-इत्युपनिषद् । ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

॥ इति अथर्वणीया-सीतोपनिषत् सम्पूर्णा ॥

"श्री सीता जी की वीरशक्ति चतुर्भुजा है । उनके हाथों में अभय एवं वरदान की

मुद्राएँ तथा दो कमल हैं। किरीट एवं आभूषणों से वे भूषिता हैं। सम्पूर्ण देवताओं से घिरी हुई, कल्प वृक्ष के मूल में चार श्वेत हाथियों द्वारा रत्न जटित कलशों के अमृत-जल से अभिषिक्त होती हुई वे आसीन हैं। ब्रह्मादि समस्त देवता उनकी वन्दना करते हैं। अणिमादि अष्ट ऐश्वर्य से वे युक्त हैं और उनके सम्मुख खड़ी होकर कामधेनु उनकी स्तुति करती हैं। वेद और शास्त्र आदि भी मूर्तिमान होकर उनकी स्तुति करते हैं। जया आदि अप्सराएँ एवं देव नारियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। सूर्य एवं चन्द्र दीपक बनकर वहां प्रकाश कर रहे हैं। तुम्बुरु एवं देवर्षि नारद आदि उनका गुणगान कर रहे हैं। राका और सिनीवाली नाम की देवियाँ उनपर छत्र लगाये हैं। ह्लादिनी एवं माया उनके दोनों ओर चँवर डुला रही हैं। स्वाहा एवं स्वधा उनपर पंखे झलती हैं। भृगु और पुण्य आदि महात्मा उनकी पूजा कर रहे है। दिव्य सिंहासन पर अष्टदल पद्म के ऊपर आसीन वे महादेवी समस्त कारणों एवं कार्यों को निर्मित करने वाली हैं। इस प्रकार भगवती लक्ष्मी के भगवान् से पृथक् निवास का ध्यान करना चाहिये। उन्होंने अपने को अनुरूप दिव्य आभूषणों से अलंकृत किया है। वे स्थिर होकर प्रसन्न नेत्रों से समस्त देवताओं द्वारा पूजित वीर लक्ष्मी कही जाती हैं॥१२॥ यह अनुवाद 'कल्याण' के उपनिषदङ्क से साभार उद्घृत है।

॥ यह अथर्ववेदीय श्रीसीतोपनिषद् सम्पूर्ण हुआ ॥

❀ ॐ भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ❀

—❀—

—: श्रद्धास्पदा श्रीसीता :—

शिशुर्वा शिष्या वा यदसि मम तत्तिष्ठतु तथा—

विशुद्धे रुत्कर्षास्त्वयि तु मम भक्तिं जनयति।

शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु ननु वन्द्याऽसि जगतां—

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः॥

—उत्तररामचरिते भगवान् वाल्मीकिः॥ (४।११)

हे सीते! आप मेरी पुत्री हैं अथवा शिष्या हैं, जो हो वह लौकिक व्यवहार दृष्टि से भले रहें, परन्तु आपका विशुद्ध उत्कृष्ट जीवन आपके प्रति मेरा भक्ति प्रकट करता है; शिशुपन तथा स्त्रीपना भले अपनी जगह पर बने रहें तो भी आप तो त्रिभुवन जगत् की वन्दनीया हैं, यथार्थ बात तो यह है कि पूजा का स्थान तो जगत् में श्रेष्ठ गुण ही होते हैं, अवस्था अथवा लिङ्ग स्त्री-पुरुष आदि देह पूज्य नहीं होते हैं॥

॥ अथ श्रीमैथिलीमहोपनिषत् प्रारम्भः ॥

श्रीगिरिजोवाच— नाथ ! कथं त्वयाऽऽदिष्टा महोपनिषदश्रुता ।
मैथिल्यास्तु महालक्ष्म्यास्तन्मे ब्रूहि दयानिधे ! ॥ १ ॥

श्रीरुद्र उवाच— शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नित्यां शुद्धां सनातनीम् ।
महोपनिषदं वेद विश्रुतां वेद रूपिणीम् ॥ २ ॥

अथ मैथिली महोपनिषद्—

नित्यां निरञ्जनां शुद्धां रामाऽऽभिन्नां महेश्वरीम् । मातरं मैथिलीं वन्दे गुणग्रामां रमा रमाम् ॥

ॐतत्सत् । रामरूपिणे परब्रह्मणे नमः ।

अथ ह वै कदा रत्नसिंहासने समारूढां भगवतीं मैथिलीं लाट्यायनः कौञ्जायनः खाडायनो भलन्दनो विल्व ऐलाक्यस्तालुच्य एते सप्त ऋषयः प्रेत्य तामूचुः भूर्भुवः स्वः । सप्तद्वीपा वसुमती । त्रयोलोकाः । अन्तरिक्षम् । सर्वे त्वयि निवसन्ति । आमोदः । प्रमोदः । विमोदः । सम्मोदः । सर्वांस्त्वँ सन्धत्से । आञ्जनेयाय ब्रह्मविद्या प्रदात्रि धात्रि त्वां सर्वे वयं प्रणमामहे प्रणमामहे ॥

अथ हैं नान्मैथिल्युवाच । वत्साः कुशलिनोऽदब्धासोऽरेपसः किं कामा यूयं प्रत्यपद्यध्वम् ॥ ते होचुर्मात मोक्षःकामैः किं जाप्यं ? किं प्राप्यं ? किं ध्येयं ? किं विज्ञेय मित्येतत्सर्वँ नो ब्रूहि ॥

सोवाच । राम इत्यक्षरद्वयं जाप्यम् । रिं राम इत्यक्षर त्रयं जाप्यम् । रुं राम इत्यक्षरत्रयं जाप्यम् । रे राम इत्यक्षरत्रयं जाप्यम् । रैं राम इत्यक्षरत्रयं जाप्यम् । रों राम इत्यक्षरत्रयं जाप्यम् । एतदेवहितारकम् । एतदेव हि बन्धनबन्धनम् ॥ सार्द्ध तिस्रोमात्रा ओमित्यत्र । इमानि त्र्यक्षराणि जपंस्तज्जयति ॥ त्रीणि वै दुःखानि । आध्यात्मिकमाधिदैविकमाधिभौतिकम् । इमानि त्र्यक्षराणि जपंस्तानि प्रणाशयति ॥ विष्णुलोकात्परे लोके साकेते शुभशंसिनी । राजन्तँ रामचन्द्रेति जपन् बन्धाद्विमुच्यते जपन्बन्धाद्विमुच्यते ॥ इति प्रथमोपनिषत् ॥

परात्परतरो निखिल हेय प्रत्यनीक गुणाकारो जगदादिकारणममिततेजोराशि ब्रह्मादिदेवै रप्युपास्यः स श्रीभगवान् दाशरथिरेव प्राप्यः ॥ इति द्वितीयोपनिषत् ॥

सकलजगत्कारणबीजं भक्तवत्सलः स एव भगवाञ्ज्ञेयः ॥ इति तृतीयोपनिषत् ॥

ते ह पुनरेनामूचुः । षट्स्वपि मन्त्रेषु कतमो मन्त्रो गरीयान् । कमभिमन्त्र्य स्वकं कल्याणमभिपश्यामः । तन्नो ब्रूहि महेश्वरि ॥ सोवाचैनान् । सर्व एव मन्त्राः सुखप्रदाः

शुभप्रदाः क्षेमप्रदाः धनप्रदाः । एकमप्यक्षरमुच्चारितं शतजन्मभिरर्जितानि महापातकान्यपि विनाशयति । तत्रापि । षडक्षरो मन्त्रः सर्वोत्कृष्टः । आशुफलप्रदः । सर्वमेव वाञ्छितमभिपूरयति । मोक्षार्थी मोक्षंलभते स्वर्गार्थी च स्वर्गम् । पुत्रार्थी पुत्रम् । धनार्थी धनम् । विद्यार्थी विद्याम् । यद्यत्कामयते सर्वमग्रतः स्थितमिवाभिपश्यति । ततः स एव सर्वोत्कृष्टः । स एव शिवशरणम् । स एव जाप्यः ॥ इति चतुर्थ्युपनिषत् ॥

एव मेव मनुं पूर्वं साकेतपतिर्मामवोचत् । अहं हनूमते रामप्रियाय प्रियतराय । स वेदवेदिनेब्रह्मणे । स वशिष्ठाय । स पराशराय । स व्यासाय । स शुकाय । इत्येषोपनिषत् । इत्येषा ब्रह्मविद्या ॥

ते ह प्रणम्योचुः कृतकृत्या वयम् । विदित वेदितव्याः । पूर्णकामाः । संशयाद्वियुक्ताः । त्वं हि मातर्नू नमस्माकं गुरुरस्माकंगुरुः ॥ इति पञ्चम्युपनिषत् ॥ समाप्तोपनिषत ॥

इमा मेवोपनिषदं पठित्वा श्रद्धयान्वितः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तश्चाचार्यस्तवनं पठेत् ॥ २० ॥

इति श्रीमद्वाल्मीकि संहितान्तर्गता श्रीमैथिली महोपनिषत् सम्पूर्णा ॥

—: श्रीमैथिली--महोपनिषद् :—

श्रीगिरिजाजी ने कहा हे नाथ ! महोपनिषद् विश्रुता महालक्ष्मी श्रीमैथिली का आपके द्वारा कथित उपनिषद् क्या है ? हे दयानिधे ! आप कृपा कर हमसे कहिये ॥ १ ॥

श्रीशङ्करजी ने कहा—हे देवि ! सुनो, नित्य-शुद्ध-सनातनी-वेदरूपिणी-वेद विश्रुता श्री मैथिली-महोपनिषद् का मैं वर्णन करता हूँ ॥

॥ अथ मैथिली-महोपनिषद् ॥

नित्या-निरञ्जना-शुद्धा-श्रीराम से अभिन्ना-महेश्वरी गुणगणालया-रमा की भी रमा-माता मैथिलीजू की मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥ ॐ तत् सत् परंब्रह्म श्रीराम को नमस्कार है ॥ एकबार रत्नसिंहासन पर विराजमान भगवती श्रीमैथिलीजू के पास-लाट्यायन कौञ्जायन-खाण्डायन-भलन्दन-बिल्व-ऐलाक्य तथा तालुव्रय ये सात ऋषि आकर इसप्रकार उनसे बोले-ये भूः भुवः स्वः सप्तद्वीपा वसुन्धरा-तीन लोक-अन्तरिक्ष-सब आप में ही प्रतिष्ठित है । आमोद प्रमोद-विमोद-सम्मोद-सबको आप ही धारण करती हैं । अञ्जनीकुमार को ब्रह्मविद्या प्रदान करनेवाली हे माँ ! हम सब आपको प्रणाम करते हैं-प्रणाम करते हैं ॥ श्रीमैथिलीजी उनके प्रति बोलीं—हे बालकों ! आप सब सानन्द सकुशल रहें । आप यहां किस कामना से आये हैं ? सो हमसे कहिये । उन्होंने कहा—हे जगदम्बे ! मोक्ष चाहने वालों को क्या जपना चाहिये ? क्या प्राप्त करना चाहिये ? किसका ध्यान करना चाहिये ? क्या जानना चाहिये ? यह सब कृपा कर हमको आप कहें ।

श्रीमैथिलीजू बोलीं—"राम" यही दो अक्षर जपना चाहिये। "रिं राम" इन तीन अक्षरों का जप करना चाहिये। 'रं राम' इन तीन अक्षरों का, तथा 'रें राम' इन तीन अक्षरों का, तथा "रौं राम" इन तीन अक्षरों का,—"रः राम" इन तीन अक्षरों का जप करना चाहिये। यही तारक महामंत्र है। यह बन्धनों को भी बाँध कर रखनेवाला है। साढ़े तीन मात्रा वाला 'ॐ' इसी में रहता है। इन तीनों अक्षरों को जप कर जो प्रणव का जप करता है। उसके दैहिक-दैविक-भौतिक तीनों दुःख इन तीन अक्षर के जप करने से नष्ट हो जाते हैं। विष्णुलोक से भी-परलोक श्रीसाकेतधाम की महान शुभ प्रसंसा है, उसमें विराजमान श्री रामचन्द्रजी का जप करने से जीवात्मा बन्धनों से मुक्त हो जाता है। जप करने से ही बन्धन से मुक्त हो जाता है॥ इति प्रथमोपनिषद्॥ परात्पर समस्त हेयगुणों से रहित सद्गुणगणागार-जगत का आदि कारण-असित तेज की राशि-ब्रह्मादिदेवों द्वारा भी उपास्य-श्रीदशरथ-नन्दन श्रीराम ही प्राप्य हैं-प्राप्त करने योग्य हैं॥ इति द्वितीयोपनिषत्॥ भक्तवत्सल भगवान् श्रीराम ही सकल जगत् का कारणरूप बीज है, अतएव वही ज्ञेय-जानने योग्य हैं॥ इति तृतीयोपनिषत्॥

वे सातो ऋषिः पुनः बोले—इन छह मन्त्रों में कौन मन्त्र सबसे श्रेष्ठ है? किसका जप करके हम अपना परम कल्याण प्राप्त कर सकते हैं? हे महेश्वरि! आप कृपाकर यह तत्त्व हमसे कहें! श्रीमैथिलीजी ने ऋषियों के प्रति कहा—सभी मन्त्र सुखप्रद-शुभप्रद-क्षेमप्रद तथा धनप्रद हैं। मन्त्र के एकाक्षर का उच्चारण करने पर भी सैकड़ों जन्मों के किये महापातकों को भी विनाश कर देता है। उन मंत्रों में भी—षडक्षर श्रीराममन्त्र सर्वोत्कृष्ट है। शीघ्रफल प्रदायक है। सभी वाञ्छित मनोरथ को पूर्ण करता है। मोक्षार्थी मोक्ष प्राप्त करता है। स्वर्गार्थी स्वर्ग में जाता है। पुत्रार्थी पुत्र को-धनार्थी धन को-विद्यार्थी विद्या को जो मनुष्य जो चाहता है उसको सन्मुख रखा हुआ हो ऐसे प्राप्त हो जाता है। इसलिये षडक्षर मन्त्रराज ही सर्वोत्कृष्ट है। वही शिव-कल्याण है शरण-रक्षक है। वही परम जाप्य है॥इति चतुर्थ्युपनिषत्॥

यही मंत्र पूर्व में श्रीसाकेतपति राम ने मुझसे कहा था—मैंने मेरे प्रियों में भी परम प्रिय हनुमानजी को—उन्होंने वेदविद् ब्रह्मा को—उन्होंने वशिष्ठ को वशिष्ठ ने पराशर को-पराशर ने व्यास को—व्यास ने शुकदेव को इस प्रकार मन्त्र-परम्परा का प्रचार हुआ॥ यही यह ब्रह्मविद्या है। यही उपनिषद् है।

उन सातों महर्षियों ने प्रणाम कर श्रीमैथिलीजू से कहा-हम लोग कृत-कृत्य हो गये। जानने योग्य वस्तु का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया। हमारी जिज्ञासा पूर्ण हो गयी। हमसब संशयों से रहित हो गये। आप ही हमारी माता हैं। आप ही हमारे यथार्थगुरु हैं॥ इति पञ्चम उपनिषद्॥

इस उपनिषत का श्रद्धापूर्वक पाठ करके सर्वपाप विमुक्त होकर तब आचार्य का स्तवन पाठ करे।

"यह श्रीमद् वाल्मीकिसंहितान्तर्गत श्रीमैथिली महोपनिषद् सम्पूर्ण हुआ।"

श्रीरामवल्लभास्तोत्रम्

[अथध्यानम्]

कैशोरपीतवसनामरविन्दनेत्रां रामप्रिया मम वरोद्यतपद्महस्ताम् ।
उद्यच्छतार्कसदृशीं परमासनस्थां ध्यायेद्विदेहतनयां सखिभिः सहस्रैः ॥१॥

स्वर्णाभामम्बुजकरां रामालोकनतत्पराम् । ध्यायेत्षट्कोणमध्यस्थां रामाङ्कोपरिशोभिताम् ॥
रामां राजीवनयनां रामवक्षस्थलालिताम् । रामाङ्कपीठेराजन्तीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
विदेहतनयां देवीं मन्दस्मितमुखाम्बुजाम् । इन्दीवरविशालाक्षीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
दिव्यमाल्याम्बरधरां तप्तचामीकरप्रभाम् । चारुचन्द्राभवदनां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
पद्मासनां पद्महस्तां पद्मपत्रनिभेक्षणाम् । पद्मालयां पद्मगन्धां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
हेमपद्मसमासीनां नीलकुञ्चितमूर्धजाम् । तरुणादित्यसंकाशां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
विद्युत्पुञ्जप्रभाभासां सुरासुरनमस्कृताम् । त्रयीमयीं सूक्ष्मरूपां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
चन्द्रमण्डल मध्यस्थां चन्द्रविम्बोपमाननाम् । चन्द्रकोटिप्रभां देवीं वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
यक्षकिन्नर गन्धर्व सिद्धविद्याधरैः सदा । सेव्यमान पदाम्भोजां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
ब्रह्मेन्द्रवन्दितपदां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम् । परानन्दमयीं रम्यां वन्दे श्रीरामवल्लभाम् ॥
सर्वलोकशरण्ये श्रीसीते वात्सल्यसागरे । मातर्मैथिलि सौलभ्ये रक्ष मां शरणागतम् ॥
कृपारूपिणि कल्याणि रामप्रिये श्रीजानकी । कारुण्यपूर्णनयने दयादृष्ट्या विलोकय ॥
कोटिकन्दर्पलावण्यां सौन्दर्यैक स्वरूपताम् । सर्वमङ्गलमाङ्गल्यां भूमिजां शरणं व्रजे ॥
शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणां । सर्वस्यार्त्तिहरणैक धृद्व्रतां शरणंव्रजे ॥
सीतां विदेहतनयां रामस्यदयितां शुभाम् । हनूमता समाश्वस्तां भूमिजां शरणं व्रजे ॥
अस्मिन् कलिमलाकीर्णे काले घोरभयावहे । प्रपन्नानां गतिर्नास्ति श्रीमद्रामप्रियांविना ॥

॥ इति श्रीनारद पञ्चरात्रोक्तं रामवल्लभास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

टिप्पणी—मेरुतन्त्रान्तर्गत "श्रीजनकपुर-उपनिषद्" प्रयत्न करने पर भी प्राप्त न हो सका, यदि कोई सज्जन कृपा कर भेज देंगे तो उसको सहर्ष प्रकाशित करने का प्रयत्न किया जायगा ।

❀ श्रीराम प्रियतमायै नमः ❀

—: श्रीराम वल्लभास्तोत्रम् :—

अथध्यानम्—

रेशम के पीले वस्त्र पहने हुए–कमल के समान नेत्र वाली श्रीरामप्रिया अभय वरदान देने के लिये उद्यत हाथ कमल पुष्प धारण किये हुए प्रातः कालीन नवोदित सैकड़ों सूर्यों के समान प्रकाश करती हुई हजारों सखियों सहित परम दिव्य आसन पर विराजमान श्री विदेहनन्दिनी जू का ध्यान करे ॥ १ ॥

स्वर्ण के समान कान्ति सम्पन्न–हाथ में कमल पुष्प लिये हुए, षट्कोण के मध्य में विराजमान श्रीराम की गोद में सुशोभित श्रीरामजी की शोभा देखने में निमग्न श्री जानकी जी का ध्यान करे ॥ २ ॥ राजीव लोचनी श्रीराम वक्षस्थल में सुलालित श्रीरामङ्क पीठ पर विराजमान श्रीरामवल्लभा रामा की मैं वन्दन करता हूँ ॥ ३ ॥ विदेह राजकुमारी मन्द मन्द विहँसती हुई मुख शोभा सम्पन्न कमल के समान विशाल नेत्र वाली श्रीरामवल्लभा का मैं वन्दन करता हूं ॥ ४ ॥ दिव्य माला तथा दिव्य वस्त्र पहने हुई, तपाये हुए के सोने की भाँति चमकती सुन्दर चन्द्रमा के समान मुखवाली श्रीरामवल्लभा की मैं वन्दन करता हूँ ॥ ५ ॥ कमल के आसन पर विराजमान कमल पुष्प हाथ में लिए हुए कमल के दल के समान नेत्र वाली कमल वन में निवास करने वाली; कमल के समान सुगन्ध जिसके श्री अङ्ग से छिटकनी रहती है, ऐसी श्रीराम वल्लभा जू की मैं वन्दन करता हूं ॥ ६ ॥ स्वर्ण के कमलाकृति दिव्य सिंहासन पर विराजमान नीले घुंघराले केशों वाली तरुण आदित्य के समान चमकती हुई प्रभावाली श्रीरामवल्लभा जू का मैं वन्दन करता हूं ॥ ७ ॥ विजली के समूह के समान तेजस्वी प्रभा चमकाने वाली सुर असुरादिकों से नमस्कृत–वेदत्रयी के सार स्वरूप सूक्ष्म रूपी श्रीरामवल्लभा का मैं वन्दन करता हूं ॥ ८ ॥ चन्द्र मण्डल के मध्य विराजमान पूर्ण चन्द्र के समान मुखचन्द्र वाली करोड़ों चन्द्रमा के समान प्रभा वाली देवी श्रीरामवल्लभ को मैं वन्दन करता हूँ ॥ ९ ॥ यक्ष किन्नर गन्धर्व–सिद्ध–विद्याधरों द्वारा सदैव सुसेवनीय चरणारविन्द वाली श्रीरामवल्लभा का मैं वन्दन करता हूं ॥ १० ॥ ब्रह्मा–इन्द्र आदि देवों द्वारा जिनके चरण वन्दनीयहैं, सृष्टि की उत्पति–पालन प्रलय जिनकी इच्छा से होता रहता है, परमानन्दमयी परम रमणीय उन श्रीरामवल्लभा का मैं वन्दन करता हूं ॥ ११ ॥ सम्पूर्ण लोक के जीवों को शरणागति प्रदान करने वाली वात्सल्य रस की महासमुद्र हे श्रीसीते ! हे माँ मैथिली ! आप तो सबको परम सुलभ हैं, अतः आप कृपा करके आपके शरण में आये हुए मेरी भी रक्षा करिये ॥ १२ ॥ हे कृपा स्वरूपिणी हे कल्याणी ! हे राम प्रिये । हे श्रीजानकी जी ! करुणा पूर्ण दयादृष्टि से आप कृपा कर मेरी ओर निहारिये ॥१३॥ करोड़ों कामदेव से भी अत्यन्तलवणमयी परम सौन्दर्य की साक्षात् स्वरूप विग्रहा–सर्वमंगल माङ्गल्त की अधीश्वरी श्री भूमिपुत्री की मैं शरण आता हूं ॥ १४ ॥ शरणागति

दीन आर्तजनों को परित्राण करने में सदैव परायण, समस्त प्राणियों के दुःख हरण का व्रत सङ्कल्प लेकर विराजमान श्रीकिशोरीजू की मैं शरण आता हूं ।।१५।। श्रीसीता-विदेह राजनन्दिनी श्रीराम की प्राण प्रिया-परम शुभ स्वरूपा श्रीहनुमानजी के द्वारा आश्वासन प्राप्त करने वाली श्री भूमि नन्दिनी के हम शरण में आते हैं ।। १६ ।। इस महान् घोर कलिकाल दोष दुर्गुणों से भरे हुए भयङ्कर समय में शरणागत जीवों को श्रीराम प्रिया जू की कृपा विना अन्य कोई गति है ही नहीं ।। १७ ।।

"इस प्रकार यह श्री नारद पञ्चरात्र में पठित श्रीरामवल्लभास्तोत्र, टीका सहित सम्पूर्ण हुआ।"

—❀—

।। अथ श्रीसीतानमस्कारस्तोत्र प्रारम्भः ।।

एकदा नैमिषारण्ये शौनकाद्याः महर्षयः । नारदं परिपप्रच्छ कथां परमपावनीम् ।।१।।
कथयस्व महाबाहो स्तवञ्च परमं पदम् । यस्य श्रवण मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।२।।

।। श्रीनारद उवाच ।।

सीतास्तोत्रं प्रवक्ष्यामि सर्वपाप प्रणाशनम् । सीता च जानकी देवीमैथिली राघवप्रिया ।।
लोकमाता जगद्धात्री कुशस्य जननी शुभा । वैदेही वेदमाता च सावित्री- भुवनेश्वरी ।।
रामस्य महिषी पुण्या सर्वपाप प्रणाशिनी । अयोनिजा-महाविद्या- महापातक नाशिनी ।।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै सीतायै च नमोनमः । इदं स्तोत्रं महत्पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।।
सर्वपापविमुक्तात्मा विष्णुलोकं स गच्छति । पुत्रार्थी लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम् ।।
मोक्षार्थी लभते मोक्षं कन्याविन्दति सत्पतिम् । तस्यगृहे सदालक्ष्मी कर्हिचिन्नैव मुञ्चति ।।
दातव्यं भक्तियुक्ताय शिष्याय विमलात्मने । दाम्भिकाय न दातव्यं भक्तिहीनाय सर्वथा ।।
गोपनीयमिदंस्तोत्र त्रिषुलोकेषु सर्वदा ।।१०।।

।। इति श्रीरुद्रयामले शिव-भैरवसम्वादे श्रीसीता नमस्कारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

अस्य पाठान्तरोऽपि प्राप्यते तद्यथा--

सीता च जानकी देवी मैथिली राघवप्रिया । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।
लोकमाता जगद्धात्री कुशस्य जननीशुभा । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।
वैदेही वेदमाता च सावित्री भुवनेश्वरी । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।।

एवं प्रकारेण सर्वत्रैव पठनीयम् ।।

।। इति श्रीसीतानमस्कारस्तोत्रम् ।।

❀ श्रीसीता नमस्कार स्तोत्र ❀

—:❀:—

एक बार नैमिषारण्य क्षेत्र में शौनकादिक महर्षियों ने श्री नारद जी से परम पावनी कथा श्रवण का प्रस्ताव रखते हुए कहा कि हे श्रीनारदजी ! आप आज तो कोई ऐसा परम श्रेष्ठ स्तोत्र हमको सुनाइये कि जिसके श्रवण करने मात्र से ही सभी पापों से जीव मुक्त हो जाय ॥ १-२ ॥ श्री नारद जी ने कहा—आज मैं सर्व पाप नाशक श्री सीता स्तोत्र आपको सुनाता हूं—श्रीसीता-जानकी देवी-मैथिली राघव प्रिया हैं उनको मैं नमस्कार करता हूं ॥ ३ ॥ जो लोक माता-जगदम्बा कुश की माता हैं- जो वैदेही-वेदमाता-सावित्री-भुवनेश्वरी है ॥ ४ ॥ जो परम पुण्य स्वरूपा श्रीराम की पटरानी हैं, जो सर्व पापों का विनाश करने वाली हैं, अयोनिजा महाविद्या तथा महापातक नाशिनी हैं श्रीसीताजी को वारम्वार नमस्कार हैं ॥ ५ ॥ इस महा पुण्यप्रद स्तोत्र का प्रातःकाल उठकर जो पाठ करता है वह सर्व पापों से मुक्त होकर श्रीविष्णु लोक में जाता है । पुत्रार्थी पुत्र पाता है, मोक्षार्थी मोक्ष प्राप्त करता है कन्या सदाचारी पति प्राप्त करती है । उसके घर का लक्ष्मी कभी त्याग नहीं करती है । यह निर्मल मन भक्ति सम्पन्न शिष्य को ही देना चाहिये भक्ति हीन दंभी को नहीं देना, यह तीनों लोक में गोपनीय स्तोत्र है ।

॥ यह श्री रुद्रयामल तन्त्र में शिव भैरव सम्वाद कथित श्री सीता नमस्कार स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ।

॥ अथ श्रीमैथिली द्वादश नाम स्तोत्रम् ॥

मैथिली-जानकी-सीता- वैदेही--जनकात्मजा ।
कृपापीयूष जलधिः -प्रियार्हा--रामवल्लभा ॥ १ ॥
सुनयना सुता--वीर्यशुल्काऽयोनी रसोद्भवा ।
द्वादशैतानि नामानि वाञ्छितार्थ प्रदानि हि ॥ २ ॥

॥ इति श्रीजानकी चरित्रामृते नवयोगेश्वर प्रोक्तं श्रीमैथिली द्वादश नाम स्तोत्रम् ॥

श्री मैथिली-जानकी-सीता-वैदेही जनकात्मजा-कृपामृत सागरी-प्रियतम के परम योग्य रामवल्लभा-सुनयना जी की पुत्री-वीर्य शुल्का-अयोनिजा-रसा पृथिवी से उत्पन्ना ये श्रीकिशोरी जी के द्वादश नाम वाञ्छितार्थं प्रदायक है ।

॥ इति श्री मैथिली द्वादश नाम स्तोत्रम् ॥

श्रीरामवल्लभा ध्यानाष्टकम्

[सुन्दरीतन्त्रोक्तम्]

नीलनीरद दलायतेक्षणां लक्ष्मणाग्र भुजपाश लक्षणाम् ॥
शुद्धि सिद्ध दहने प्रदीप्तवतीं भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ १ ॥
रामपाद विनिवेशितक्षणा मङ्गकान्तिपरिपूत हाटकाम् ॥
भीतिकारि परुषोक्ति विक्लवां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ २ ॥
कुन्तलाकुल कपोलकाननां वाहुवक्त्र ग सुधांशु सुद्युतिम् ॥
वाससा विदधतीं ह्रियाकुलां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ३ ॥
वाङ्मनः करुणागाम्पदाम्बुजे स्वप्नजागृतिषु राघवस्य हि ॥
देहकान्ति विजितेन्दु मण्डनां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ४ ॥
रामपादयुगलं पुनः पुनः चेतसैवपरि चिन्तिताम्पराम् ॥
भूमिजाम्पुरुष पुङ्गवेस्थिरां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥
इन्द्र रुद्र धनदाम्बुपालितैः सद्विमानगण संस्थितैर्दिवि ॥
पुष्पवर्ष मनुसंस्तुतांघ्रिकां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ६ ॥
वैद्युतं हि वपुषा प्रतन्वतीं धाम रामतनु निर्जितत्विषाम् ॥
फुल्लनीरजनिभाम्बराननां भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ७ ॥
संचरैर्दिविषदां विमानगैर्विस्मयाकुलमनोऽभि वीक्षिताम् ॥
तेजसा विदधतीं सदा भृशं भावये मनसि रामवल्लभाम् ॥ ८ ॥
एतदष्टकमनिष्ट हानिकृद्यः पठेदथ शृणोत्यहर्निशम् ॥
अन्तराय रहितस्य मैथिली तस्य भूमिमतुलाम्प्रयच्छति ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीरामवल्लभाध्यानाष्टकम् सम्पूर्णम् ॥

श्रीसीतायज्ञपद्धतिश्रीजानकीमहायज्ञपद्धति श्रीजानकीपूजनपद्धति इन तीनों प्राचीन यज्ञ-पूजन पद्धतियों में यह स्तोत्र पठित है ।

❀ श्रीरामवल्लभायै नमः ❀

॥ श्रीरामवल्लभाध्यानाष्टकम् ॥

(सुन्दरी तन्त्रोक्तम्)

नीलकमल दल के समान सुन्दर विशाल नेत्र वाली, श्री लक्ष्मण जी के बड़े भैया श्री राम जी के करकमल की शोभा से सुशोभित-अग्निदेव को भी उज्वल करने वाली प्रभा में समाग्र श्रीरामवल्लभा जू की मैं मन में भावना करता हूँ ॥ १ ॥ श्रीराम चरणों में एकाग्र दृष्टि रखने वाली अपने श्री अङ्ग की कान्ति से स्वर्ण को भी पवित्र बनाने वाली भयप्रद कठोर बचनों को सुनकर व्यथित हुई वियोगिनी श्रीरामवल्लभा जू की मैं मनमें भावना करता हूँ ॥ २ ॥ टेढ़े मेढ़े घुंघराले केश कानों पर से कपोलों पर आये हैं, हाथ पर मुखारविन्द सुशोभित हो रहा है। चन्द्रमा के समान सुन्दर द्युति चमक रही है, लज्जा से अपने वस्त्रों के भीतर सिमटी हुई श्रीरामवल्लभा जू की मैं भावना करता हूँ ३ ॥ मन में वाणी में करुणा भरी हुई है, सोते जागते श्रीराघव जू के चरणों में चित्त लगा हुआ है, देह कान्ति से चन्द्र मण्डल की प्रभा जीतने वाली श्रीरामवल्लभा जू की मैं मन में भावना करता हूँ ॥ ४ ॥ श्री राम जी के ही युगल श्रीचरणों को पुनः मन में स्मरण करती रहती हैं ऐसी श्री भूमिनन्दिनी परम पुरुष प्रभु राम में स्थिर श्रीरामवल्लभा जू की मैं मन में भावना करता हूँ ॥ ५ ॥ इन्द्र रुद्र-धनद-वरुणादि देव विमान पर बैठकर आकाश से जिन पर बारम्बार कल्पद्रुम के पुष्पों की वृष्टि करते हुए चरणों की स्तुति करते हैं उन श्रीरामवल्लभा जू का मैं ध्यान करता हूँ ॥ ६ ॥ अपनी देह प्रभा से बिजली को भी चमकाने वाली शोभा धाम राम की भी सुन्दर शोभा को जीत लेने वाली खिले हुए कमल के फूल के समान मुखारबिन्द वाली श्रीरामबल्लभा जू की मैं मन में भावना करता हूँ ॥ ७ ॥ विमानचारी देवगण आश्चर्य में भरे हुए जिनका दर्शन कर रहें हैं। अपने तेज से सदैव सबका कल्याण करने वाली ऐसी श्रीरामवल्लभा जू का मैं मनमें ध्यान करता हूं ॥ ८ ॥ यह श्रीरामवल्लभाष्टक अनिष्ट नष्ट करने वाला है। इसका जो निरन्तर पाठ-श्रवण-मनन करता रहता है उसको निर्विघ्न अतुल सुख सम्पत्ति तथा भूमि श्री मैथिली जू प्रदान करती हैं ॥ ९ ॥

॥ यह श्री सुन्दरी तन्त्रोक्त श्रीरामवल्लभा ध्यानाष्टक स्तोत्र पूर्ण हुआ ॥

—:❀:—

—: श्रीसीताराम स्तवराज :—

॥ श्रीशंभुरुवाच ॥

ॐ रामाय परमेशाय सीतायै प्रभवात्मने । केवलायाऽद्वितीयायै परायै परमात्मने ॥१॥

नमो नित्याय भद्रायै रघुवंश विवर्द्धने । निमिवंश यशः कीर्ति प्रभायै भूतभावने ॥२॥
आनन्दकन्दरूपायै प्रज्ञायै परमात्मने । नमोऽस्तु गुरवे तुभ्यं मूलकन्दाय जिष्णवे ॥३॥
तत्त्व पद्मविकाशायै संविन्नात्मकाय च । प्रकृति त्रय रूपाय विकार केशरात्मने ॥४।
विद्यातत्त्व विभाविन्त्यै परतत्त्व स्वरूपिणे । आकाशगुण भिन्नायै जानक्यै राघवाय च ॥५॥
स्पर्शरूपा भवेत्सीता रूपार्णवो भवान्हरिः । रसरूपा तथा ज्ञेया गन्धदृग् पुरुषोभवान् ॥६॥
ब्रह्मात्वं हि जगद्धाता विश्वधात्री नृपात्मजा । त्वं विष्णुरप्रमेयात्मा रमा सीता प्रकीर्तिता ॥७॥
भवान्महेश्वरो नाथ सीता गौरी भवेत्पुनः । आद्या सा प्रकृतिस्सीता आद्यस्तु पुरुषोत्तमः ॥८॥
गुणातीतो भवान्नित्यो नित्यभूता सनातनी । प्रकृते गुणसंभिन्नः सीता प्रकृतिमातृका ॥९॥
जलशायी महाविष्णुर्भवान् देव जनेश्वरः । अहंलिङ्ग महाशंभु भवान्नाद्यो गुणेश्वरः ॥१०॥
गुणातीता भवेत्सीता महामाया गुणेश्वरी । मात्रारूपी तथा सीता पञ्चभूतात्मको भवान् ॥११॥
महातत्त्व निरूपाधि विभूतिरनपायिनी । अहं तत्त्वो विमुक्तात्मा निर्विकारो भवान् हि सः ॥१२॥
विश्वाधारो जगन्नाथो भगवान् विश्वभुक्प्रभुः । सीताशक्ति रणोत्पत्ति राधारशक्तिरुत्तमा ॥१३॥
दृश्यादृश्य जगत्कृत्स्नं त्वयाराम प्रतिष्ठितम् । तद्भावना भृतेस्वामिन् न किञ्चित्यतप्रतिष्ठति॥१४॥
जननी जानकीत्वं हि जनकोमेऽखिलार्ति हा । कृपां कुरुजगत्स्वामिन् दासोऽहमितिभावय ॥१५॥

श्रीरामोवाच—

वरंवृणिष्व भद्रं ते अहं वत्स वरप्रदः । पुनर्विभाव्यं दुराराध्यं दास्यामि तव सुव्रत ॥१६॥
अनेन स्तवराजेन यः स्तोष्यति सदा नरः । तस्यहृदि सदावासः करिष्यामि न संशयः ॥१७॥
ब्रह्महत्यादि पापेभ्यो विमुक्तात्मा भविष्यति । असिद्धोलभतेसिद्धिं ब्रह्मनिर्वाण गृच्छति ॥१८॥
विद्याहीनो लभेद्विद्यां ममात्वर विचिन्तनात् । युद्धे जयामवाप्नोति वादीषुविजयी भवेत् ॥१९॥
अगतिः कुगतिर्भ्रष्टो हेतुवादी ह्यचेतनः । पठनाच्छ्रवणान्नित्यं, मम लोके महीयते ॥२०॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

इयं हि प्रार्थनाराम श्रूयतां यदि रोचते । दीयतां मम देवेशत्वयि भक्ति र्दृढास्तिमे ॥२०॥

॥ इति श्रीमहासुन्दरी तंत्रे परम रहस्ये ॥

श्रीसीताराम स्तवराजः सम्पूर्णः

—:❀:—

❀ श्री महासुन्दरी तन्त्रोक्त ❀

॥ श्रीसीतारामस्तवराजः ॥

श्री शङ्कर जी बोले—

ॐ श्रीराम को परमेश को, श्रीसीताजी को प्रभवात्मा को-केवल अद्वितीया को परमात्मा को-परात्परा को नमस्कार है ॥ १ ॥ नित्य को-भद्रस्वरूपा को-रघुवंश की वृद्धि करने वाले को-निमिवंश की यश-कीर्ति की प्रभा को तथा भूत भावन को ॥ २ ॥ आनन्द कन्द स्वरूपा को-प्रज्ञा को परमात्मा को-गुरु स्वरूप आपको नमस्कार है, जगत् के मूलकन्द सबको जीतने वाले तत्त्व पद्म को विकसित करने वाली को, संविद् आत्मात्मक प्रकृति त्रय स्वरूप विकार केशरात्मक ॥ ४ ॥ आकाश गुण से भिन्न श्री जानकी जी को श्रीराघव को विद्या तत्व का प्रकाश करने वाली तथा परतत्व स्वरूप आपको नमस्कार है ॥ ५ ॥ स्पर्श रूपा श्री सीता हैं तो हे हरि आप रूप के सागर है, रस रूपा श्री जानकी जी हैं तो आप गन्ध को देखने वाले पुरुष हैं ॥ ६ ॥ जगत् के धाता आप ब्रह्मा हैं तो श्री राजकुमारी जी विश्व की धात्री हैं । आप अप्रमेयात्मा विष्णु हैं तो श्री सीता साक्षात् रमा कही गयीं है ॥ ७ ॥ हे नाथ ! आप महेश्वर हैं । ये सीता गौरी हैं । आद्या प्रकृति श्रीसीता हैं तो आप आद्य पुरुषोत्तम है ॥ ८ ॥ आप गुणातीत नित्य स्वरूप हैं तो श्री सीता नित्या सनातनी हैं । आप प्रकृति के गुणों से भिन्न हैं तो सीता प्रकृति की मातृका है ॥ ९ ॥ आप जलशायी महाविष्णु सर्व देवों के ईश्वर हैं, हम महाशम्भु आपके ही चिह्न हैं, आप आद्य पुरुष गुणेश्वर है ॥ १० ॥ तो श्री सीता गुणातीता महामाया-गुणेश्वरी है । माया स्वरूपिणी सीताजी हैं तो आप पञ्च महाभूतात्मक हैं । ११॥ निरुपाधि महातत्व अनपायिनी शक्ति श्री सीताजी की विभूति है; तो आप अहं तत्व से विमुक्तात्मा निर्विकार स्वयं ब्रह्म हैं ॥ १२ ॥ विश्व के आधार जगत् के नाथ विश्व के भोक्ता आप भगवान हैं तो श्री सीता जी विश्व आधार शक्ति परमोत्तमा रसोत्पत्ति करने वाली हैं ॥ १३ ॥ यह दृश्य तथा अदृश्य सम्पूर्ण जगत् हे राम ! आप में ही प्रतिष्ठित है, आपकी भावना से रहित ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो यहाँ देखने को मिलती हो ॥ १४ ॥ इस जगत् की जननी श्री जानकी जी हैं तथा सम्पूर्ण आपदाओं का हरण करने वाले पिता आप हैं । आप हम पर कृपा करें 'यह भी मेरा एक दास है' ऐसी हमारे पति आप भावना करें ॥ १५ ॥

श्री शङ्कर जी का ऐसा बचन सुनकर श्रीराम ने कहा—

हे वत्स ! तुमको जो वरदान मांगना हो सो मांगो मैं वरदान देने वाला हूँ । चाहे जैसा दुर्लभ सहज में न प्राप्त हो ऐसा वरदान मांगोगे तो भी हे सुन्दर व्रत वाले ! मैं तुम्हें बरदान दूँगा ॥ १६ ॥ इस स्तवराज का पाठ कर जो मनुष्य नित्य मेरी स्तुति करेगा उसके हृदय में मैं सदा निवास करूँगा इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥ १७ ॥ वह ब्रह्म हत्यादिक

पापों से भी मुक्त हो जायगा असिद्ध पुरुष का कार्य सिद्ध हो जायगा ब्रह्म निर्वाण पदवी प्राप्त करेगा ॥ १८ ॥ विद्या हीन को विद्या प्राप्त होगी मेरे मन्त्राक्षरों का चिन्तवन करने से युद्ध में विजय प्राप्त होगी शत्रुओं को जीत लेगा। दुर्गति वाले को सद्गति प्राप्त होगी भ्रष्ट तथा तर्क वितर्क करने वाले मूढ़ मनुष्य का भी कल्याण होगा इसके पढ़ने से सुनने से पाठ करने से मेरे धाम में आनन्द करेगा ॥ १९-२० ॥

श्री शङ्कर जी ने कहा—

हे श्रीराम! मेरी यही प्रार्थना है, यदि आपको प्रिय लगे तो श्रवण करिये, आप की हमारे पर कृपा है तो हे देव देवेश! अपने चरणों की भक्ति प्रदान करिये।

"यह महासुन्दरी तन्त्र के परम रहस्यान्तर्गत श्रीसीतारामस्तवराज सम्पूर्ण हुआ।"

(❀❀❀)

अथ श्रीजानकी पूजा-ध्यान पद्धतिः

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि पूजाविधिमशेषतः। यत्कृत्वा कृतकृत्योऽस्मि संक्षेपेण वदामि ते ॥
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय बद्ध पद्मासनः सुधीः। सहस्रारे गुरुं ध्यायेन्निज शक्ति समन्वितम् ॥
वराभयकरं शान्तं चन्द्रवत्प्रिय दर्शनम्। कनक प्रभया देव्या साधकः स्वस्थ मानसः ॥
ऐमित्येकाक्षरं जप्त्वा शतधा दशधाऽपि वा। दण्डवत्पतितस्तत्र नमेन्मन्त्र त्रयं ब्रुवन् ॥
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्। तत्पद दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

श्री शिवजी ने श्री मिथिलेश महाराज से कहा—

हे राजन्! मैं अब श्री जानकी जी की उस पूजा पद्धति का सम्पूर्ण वर्णन करता हूं, जिसको करके मैं कृत-कृत्य हो गया हूं। उसका संक्षिप्त वर्णन आपको सुनाता हूं ॥ १ ॥ बुद्धिमान साधक ब्राह्म मुहुर्त में उठकर आलस्य त्याग कर एकाग्र मन से पद्मासन लगाकर बैठ जाय, मस्तक में सहस्र दल कमल में विराजमान स्वर्ण के समान प्रकाशित अपनी कृपा शक्ति से सम्पन्न, आशीर्वादी अभय मुद्रा में विराजमान-शान्त-चन्द्र के समान प्रियदर्शन श्री गुरुदेव का ध्यान करे तथा 'ऐं' इस एकाक्षर मन्त्र का १०८ बार अथवा १० बार जप करके श्रीगुरु चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते हुए इन तीन मन्त्रों का पाठ करे ॥ २-३-४ ॥ सचराचर अखण्ड ब्रह्माण्ड मण्डल में निर्विकार रूप से विराजमान प्रभु के श्रीचरणों का जिन्होंने

कृपा कर दर्शन कराया है, उन श्री गुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूँ। अज्ञान के अन्धकार से अन्धी बनी हुई अन्तर की आँखों में ज्ञान रूपी दिव्य अञ्जन लगाकर जिन्होंने निर्मल ज्योति प्रदान की है उन श्री गुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूं। गुरुदेव मेरे दिव्य जन्म के प्रदाता ब्रह्मा हैं, श्रीगुरुदेव ही मेरे दिव्य जीवन के प्रतिपालक विष्णु हैं तथा श्रीगुरुदेव ही मेरे जन्म जन्मान्तर की पीड़ा का प्रलय करने वाले महादेव हैं, श्री गुरुदेव ही साक्षात् पर ब्रह्म श्रीराम हैं मैं उनके श्रीचरणों में प्रणाम करता हूं ।। ५-६-७ ।।

ततः कुण्डलिनींसूक्ष्मां ध्यायेच्चैतन्यरूपिणीम् । प्रसुप्तभुजगाकारां स्वयम्भू लिङ्गवेष्टिनीम् ।।
नीवारां शुकवत्तन्वीं मूलाधार निवासिनीम् । सार्द्धत्रिवलयोपेतां तडित्पटल भासुराम् ।।
वायुना वह्निमुद्बुद्धाव्य प्रोत्थितां भावयेत्ततः । ब्रह्मरन्ध्र पथेनैव षट् चक्राणि भेदयेत् ।।
शिवेपरत्र संयोज्य पाययित्वामृतं ततः । पुनराधारमानीय सीतारामं स्मरेद्धृदि ।।
मानसैरुपचारैश्च पूजयेदथ पञ्चभिः । अष्टोत्तर शतं मन्त्रं जपेद्वर्णाक्ष मालया ।।

तब चेतन्य स्वरूपिणी-मूलाधार निवासिनी-स्वयम्भू लिङ्गसे लिपटी हुई साढ़े तीन वार घूमी हुई बिजली के समान प्रकाशमान-परम सूक्ष्मा-नीवार के अंकुर की जैसी पतली-नागिन के समान सोई हुई कुण्डलिनी का ध्यान करे। तथा वह प्राणायाम के पवन की अग्नि से जगी हुई है ऐसी भावना कर ब्रह्मरन्ध्र पथ से षट् चक्रों का भेदन कर परम शिव से संयोग कर अमृत रस का पान कर तृप्त हुई वह पुनः मूलाधार में आ गई है ऐसा ध्यान करे। पश्चात् हृदय प्रदेश में श्रीसीताराम अपने इष्टदेव का स्मरण कर मानसिक पञ्चोपचार अथवा षोडश उपचार से पूजन करे। तथा कमलाक्ष अथवा तुलसी की माला से श्री युगल मन्त्रराज का अष्टोत्तर शत १०८ वार जप करे। पश्चात् जप श्री सीताराम जी के श्रीचरणों में समर्पण कर प्रणाम करके अपने आसन पर से उठकर शौचादिक करने के लिये बाहर जाय। हाथ पांव शुद्ध कर दन्त धावन करे, तब अपनी शाखानुसार वैदिक विधि से "श्री सीताराम प्रीत्यर्थे प्रातः स्नानमहं करिष्ये" सङ्कल्प करके स्नान करे। नाभि मात्र जल में खड़ा होकर (अथवा जहाँ जो साधन उपलब्ध हो उस जल पात्र में) त्रिकोण अथवा चतुष्कोण यन्त्र बनाकर उसमें "श्रीं-रां" बीजाक्षर अंगुलि से लिखकर इन दो मन्त्रों का उच्चारण कर तीर्थों का आवाहन करे (श्लोक ८ से १५ तक)

जपं समर्प्य नत्वाथ समुत्थाय वहिश्चरेत् । कृत्वा मैत्रादिकं मन्त्री कुर्याद्दन्त विशोधनम् ।।
वैदिकेन विधानेन स्नात्वा शाखानुसारतः । प्रीतयेऽमुक देवस्य सङ्कल्प्य स्नानमाचरेत् ।।
चतुरस्रं त्रिकोणं वा नाभिमात्रे जले लिखेत् । आवाह्येच्च तीर्थाणि मन्त्रद्वय मुदीरयन् ।।
ब्रह्माण्डोदर तीर्थाणिकरैः स्पृष्टानि ते रवे । तेन सत्येन मे देव तीर्थान्देहि दिवाकर ।।

टिप्पटी—(१) अथ मालया-कमलाक्षमालया-इत्यर्थः ।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती । नर्म्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिंकुरु ॥

"सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जितने तीर्थ हैं उन सबको आपकी किरणें स्पर्श करती है, उस सत्यता के कारण हे दिवाकर ! उन तीर्थों को आप इस जल में प्रदान करिये । हे गङ्गे ! हे यमुने ! हे गोदावरी ! हे नर्मदे ! हे सिन्धु ! हे कावेरी ! आप सब इस जल में सानिध्य प्राप्त करें ।" ॥ १६-१७ ॥

वमित्येवामृती कुर्यात्तज्जलं धेनुमुद्रया । कवचेनावगुण्ठ्य रक्षयेदस्त्र मन्त्रतः ॥
रुद्रसंख्या जपन्मूलं मन्त्रयित्वा प्रपूजयेत् । आवाह्य सीतारामञ्च पूजयेत्साधकोत्तमः ॥
तदङ्घ्रि गलिते वारि त्रिरात्मानं निमज्जयेत् । मूलमन्त्रित जलंमूर्ध्निसिञ्चेत्कलशमुद्रया ॥

पश्चात् स्नान करके 'वं' बीजसे मन्त्रित जलको धेनु मुद्रासे अमृतीकरण करके कवच से घुमाकर "रः अस्त्रायफट्" इस अस्त्र मन्त्र से रक्षा करके १२ बार "श्रींसीतायै स्वाहा" इस मूल मन्त्र का १२ बार जप करके श्री सीताराम जी का मानसिक पूजन कर उत्तम साधक उनके चरणारविन्दों से गिरा हुआ यह जल है ऐसी भावना कर तीन बार गोता लगावे । तथा मूल मन्त्रित जल कलश मुद्रा से तीन बार शिर पर डाले ॥ १८-१९-२० ॥

त्रिराचम्य ततः पश्चात्सन्ध्यावन्दनमाचरेत । द्विवासा विधिनाचम्य शुचौ देशे विशेत्ततः ॥
जले संयोज्य तीर्थाणि त्रिशूलेनाभि मन्त्रयेत् । त्रिर्भूमौ वारि निक्षिप्य शिरः सिञ्चेत्तु सप्तधा ॥
षडङ्गन्यासमाचर्य वामहस्ते जलं पुनः । आदाय दक्षिणेनैव सम्पुटीकृत साधकः ॥
हं यं वं लं रमित्येभिर्बीजैस्त्रिरभिमन्त्रयेत् । अभिमन्त्र्य च मूलेन सप्तधा तत्त्वमुद्रया * ॥
प्रक्षिपेत्तज्जलं मूर्ध्नि शेषमादाय दक्षिणे । शरीरान्तः प्रवेश्यांऽहः क्षिपेन्निस्सार्य चोपले ॥
करं प्रक्षाल्य चाचम्य सूर्यायार्घ्यं निवेदयेत् । शतधा दशधा वापि गायत्री जपमाचरेत् ॥

तब श्रीरामाय नमः श्रीरामभद्राय नमः श्रीरामचन्द्राय नमः इन तीन मन्त्रों को तीन बार आचमन कर "श्रीराघवेन्द्राय नमः" मन्त्र पढ़कर हाथ धोलें, तब विधिपूर्वक सन्ध्यावन्दन करे । तब दो वस्त्र धारण कर पवित्र स्थान पर पवित्र आसन पर बैठकर जल तीर्थोदक तथा तुलसीदल पधराकर त्रिशूल मुद्रा से अभिमन्त्रित कर थोड़ा थोड़ा जल तीन बार पृथिवी पर गिराकर सात बार शिर पर सिञ्चन करे। तब ॐ रां ज्ञानाय हृदयाय नमः । ॐ रामाय ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा । ॐ नमः शक्त्यै शिखायैवषट् । ॐ रां बालाय कवचाय हुँ । ॐ रामाय तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् । ॐ नमः वीर्य्याय अस्त्राय फट् ॥ इस प्रकार षडङ्गन्यास करे । पश्चात् बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से सम्पुटित कर साधक उस जल को (हं-यं-वं-लं-रं इन बीज मन्त्रों से तीन बार अभिमन्त्रित कर तत्त्व मुद्रा अर्थात् अनामिका तथा अंगूठा से चुटकी भरकर सात बार शिर पर छींटे । शेष जल को दाहिने हाथ में लेकर दाहिने

नाक से सूंघकर यह भाव करे कि वह जल शरीर में जाकर समस्त पाप धोकर बायें नाक से काला-काला होकर चला आया है, ऐसा ध्यान कर बाँयीं ओर वज्र की शिला पर पटक दे। तब हाथ धोकर पुनः सूर्यनारायण को अर्घ्य प्रदान कर १० बार अथवा १०८ बार गायत्री मन्त्र का जप करे ॥ २१-२२-२३-२४-२५-२६ ॥

ङेन्तं दाशरथिं प्रोच्य विद्महे तदनन्तरम् । सीतावल्लभमुच्चार्य ङे युतं तदनन्तरम् ॥
धीमहीति समुच्चार्य तन्नो रामः प्रचोदयात् । इति रामस्य गायत्री जानक्या श्रुयतामथ ॥
विद्महे पद तत्पूर्वं ङेयुतं जनकात्मजाम् । उच्चार्य भूमि पुत्र्यै च धीमहीति ततोवदेत् ॥
तन्नः सीते पदं प्रोच्य वदेत्पश्चात्प्रचोदयात् । सूर्यायार्घ्यं ततो दद्यादष्ट वर्णेन साधकः ॥
देवानृषीन् पितृँश्चैव तर्पयेत्तदनन्तरम् । गुरुपङ्क्तिश्च सन्तर्प्य सीतारामश्च लक्ष्मणम् ॥
नारदं पार्वतीं शम्भुं हनुमन्तश्च तर्पयेत् । एकैकमञ्जलिं दद्यात्परिवारगणाय च ॥
सूर्यायार्घ्यं पुनः दद्यादष्टार्णं मनुना पुनः । सूर्यमण्डल मध्यस्थं देवतायै निवेदयेत् ॥

"ॐ दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात् ।" यह श्रीराम गायत्री है, अब श्रीजानकी गायत्री का श्रवण करो—"ॐ जनकात्मजायै विद्महे, भूमिपुत्र्यै च धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात् ।" गायत्री जप करके "श्रीरामः शरणं मम" अष्टाक्षर मन्त्र से सूर्यनारायण को अर्घ्य प्रदान करके । तब देवर्षिपितृतर्पणकरे । तब आचार्य परम्परा के पूर्वाचार्यों सहित अपने आचार्य का तर्पण करे । तब श्रीसीता-राम-लक्ष्मण-नारद-शिव पार्वती-तथा हनुमान जी का तर्पण करे एवं एक-एक अञ्जलि प्रभु के प्रियजन-परिकर-परिवार-पार्षद आयुध-अलङ्करादि सबको प्रदान करे । सूर्यनारायण को पुनः अष्टाक्षर मन्त्र से अर्घ्य प्रदान करे । तब "सूर्य मण्डल मध्यस्थं रामं सीता समन्वितम्" ध्यान कर अपने इष्टदेव को पुण्यफल समर्पण करदें ॥ २७-२८-२९-३०-३१-३२-३३ ॥

त्रिकोण वृत्तं भूबिम्बं जलेन रचयेत्ततः । आधारशक्तिं तत्रार्च्य पात्राधारं क्षिपेत्ततः ॥
अर्घ्यपात्रश्च संशोध्य फट्कारेण ततो हृदा । जलमापूर्य तीर्थानि आवाह्य प्रणवं पठन् ॥
गन्धादिकं विनिःक्षिप्य धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत् । जलेनानेन राजेन्द्र पूजयेत्पुज्यदेवताः ॥
नन्दः सुनन्द श्चण्डश्च प्रचण्डश्च तथा बलः । प्रबलो भद्रनामा च सुभद्रो द्वारपालकाः ॥
ब्रह्माणं वास्तुपुरुषं कोणे नैरृत्य केऽर्चयेत् । विकारांश्च समादाय क्षिपेद्दिक्षु ब्रुवन्निति ॥
अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः । ये चात्र विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
पृथ्वि त्वयेति संप्रार्थ्य मायाबीजं ततो वदेत् । आधारशक्तिं कमलासनं ङेन्तं नमो वदेत् ॥

टिप्पणीः—*अनामिकांगुष्ठ संयोगः तत्त्व मुद्रा प्रकीर्त्तिता ॥:

इत्यासनं समभ्यर्च्य बद्धपद्मासनं ततः । गुरुपङ्क्तिं प्रणम्यादौ विघ्नेशं चेष्टदेवताम् ॥
वह्निप्राकार मुद्राव्यक्तो स्फोटिकाभिस्ततोध्वनिम् । कुर्वन्दिग्बन्धनं ततः पश्चात् भूतशुद्धिसमाचरेत् ॥

तब पवित्र भूमि पर भूबिम्ब सहित त्रिकोण यन्त्र बनाकर उस पर आधार शक्ति का पूजन कर इस पर "हुं फट्" मन्त्र से जलपात्र को मांज धोकर शुद्ध जल से भरकर रखे। उसमें तुलसी दल पधराकर मूल मन्त्र अथवा प्रणव मन्त्र से तीर्थों का आवाहन कर चन्दन-पुष्प-सुगन्ध द्रव्य डालकर धेनु-मुद्रा दिखाकर हे राजेन्द्र जनकजी ! उसी जल से अपने इष्ट देवता श्री सीताराम जी का पूजन करे। पश्चात् नन्द-सुनन्द चण्ड प्रचण्ड-बल-प्रबल-भद्र-सुभद्र इन द्वारपालकों का पूजन करे तब ब्रह्माजी का पूजन कर नैऋत्य कोण में वास्तु पुरुष का पूजन करे। तब हाथ में पीली सरसों लेकर— "अपसर्पन्तु ते भूताः"—मन्त्र पढ़कर दशों दिशाओं में छींट दें। तब—"पृथिवि त्वया" मन्त्र से पृथिवी की प्रार्थना कर "ऐं आधारशक्त्यै नमः" ॐ कमलासनाय नमः" मन्त्र पढ़कर आसन बिछाकर उस पर पद्मासन लगाकर पुजारी बैठे। तथा श्री गुरुपरम्परा का स्मरण कर प्रणाम करे। तथा विघ्नेश्वर तथाइष्टदेव को प्रणाम करे। पश्चात् चारों ओर दिव्य ज्योति का ध्यान कर चुटकी बजाते हुए—श्रीं रक्षतु प्राच्यां-श्रीं रक्षतु याम्याम्-श्रीं रक्षतु प्रतीच्याम्-श्रीं रक्षतु उदीच्याम्-श्रीं रक्षतु ईशान्याम् श्रीं रक्षतु आग्नेयाम्-श्रीं रक्षतु नैऋत्याम्- श्रीं रक्षतु वायव्याम्-श्रीं रक्षतु ऊर्ध्वम् श्रीं रक्षतु अधोभागम्।" इस प्रकार दिग्बन्धन करे (श्लोक ३४ से ४२ पर्यन्त)

भूतशुद्धि प्रकारश्च शृणु राजन् समाहितः । मूलाधारात्समुत्थाय कुण्डलीं परदेवताम् ॥
सुषुम्ना वर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रस्थां भावयेत्ततः । जीवं ब्रह्मणि संयोज्य हंसमन्त्रं समुच्चरन् ॥
पदादि जानुपर्यन्तं चतुरस्त्रं सवज्रकम् । लं बीजयुक्तं पीताभं ध्यायेद्धरणिमण्डलम् ॥
जान्वादि नाभि चन्द्रार्धनिभं पद्मद्वयान्वितम् । वं बीजयुक्तमिन्द्वाभं ध्यायेत्सलिल मण्डलम् ॥
हृदो भ्रूमध्य पर्यन्तं वृत्तं षड्बिन्दु लाञ्छितम् । यं बीजयुक्तं धूम्राभं ध्यायेत्पवन मण्डलम् ॥
आब्रह्मरन्ध्रं भ्रूमध्यात्वृत्तं स्वच्छं मनोरमम् । हं बीजयुक्तमुर्वीश ध्यायेद्गगन मण्डलम् ॥
अहङ्कारं महत्तत्त्वं प्रकृतिं भावयेत्ततः । एवं भूतानि सञ्चिन्त्य प्रत्येकन्तु विलापयेत् ॥
भुवं जले जलं वह्नौ वह्निं वायौ नभस्यमुम् । विलाप्येव महङ्कारे महत्तत्त्वेप्यहं कृतिम् ॥
महान्तौ प्रकृतौ मायामात्मन्येव विलापयेत् । शुद्ध सच्चिन्मयो भूत्वा चिन्तयेत्पापपूरुषम् ॥

हे राजन् ! जनकजी ! अब शान्त चित्त से भूतशुद्धि का प्रकार सुनिये, प्रथम मूलाधार निवासिनी परदेवता कुण्डलिनी को उठाकर सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्रस्थित जीवात्मा को मिल रही है ऐसी भावना करते हुए—"हंसः" मन्त्र का जप करते हुए पाँव से घुटनों तक चौखुटा वज्राञ्छित पृथिवी मण्डल का पञ्चगुण संयुक्त—पीतवर्ण 'लं' बीज सहित ध्यान करे। ॥ ४३-४४-४५ ॥ तब जानु (घुटनों) से नाभि पर्यन्त जलस्थान वरुणमण्डल अर्धचन्द्राकार

है, उसके दोनों ओर दो श्वेत कमल के मध्य में चारगुण सम्पन्न श्वेतवर्ण 'वं' बीज का ध्यान करे ॥ ४६ ॥ तब नाभि से हृदय पर्यन्त त्रिकोण में स्वस्तिक लाञ्छित अग्नि मण्डल के मध्य में लालवर्ण त्रिगुणी 'रं' बीज का ध्यान करे ॥ ४७ ॥ तब हृदय से भ्रूमध्य पर्य्यन्त गोलाकार वायुमण्डल के मध्य षट्बिन्दु से सुशोभित धूम्रवर्ण द्विगुणी 'यं' बीज का ध्यान करे ॥ ४८ ॥ तब भ्रूमध्य से ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त स्वच्छ मनोहर ध्वजचिह्न युक्त वृत्ताकार 'हं' बीज संयुक्त आकाश मण्डल का ध्यान करे हे पृथिवीपति ! तत्पश्चात्—पृथिवी को जल में, जल को तेज में, तेज को वायु में, वायु को आकाश में, आकाश को अहंकार में-अहंकार को महतत्त्व में, महतत्त्व को प्रकृति में, प्रकृति को पुरुष में तथा पुरुष को परब्रह्म श्रीराम में विलीन हो गया ऐसी भावना करे ॥ ४९-५०-५१ ॥

वाम कुक्षौस्थितं श्याम तत्राङ्गुष्ठ प्रमाणकम् । ब्रह्महत्या शिरोयुक्तं स्वर्णास्तेय भुजद्वयम् ॥
मदिरापान हृदयं गुरुतल्प कटि द्वयम् । तत्संसर्गि पद द्वन्द्वमुपपातक रोमशम् ॥
खड्ग चर्म धरं दुष्टमधोवक्त्रं सुदुःसहम् । वायु बीजं पठन् वायुमापूर्यनं विशोधयेत् ॥
स्व शरीरयुतं मन्त्री वह्निबीजं जपन्दहेत् । कुम्भको परिजप्तेन ततः पाप नरोद्भवम् ॥
बहिर्भस्म समुत्सार्य वायुबीजेन रेचयेत् । सुधा बीजेन देहोत्थं भस्म तत् सिञ्चयेत्ततः ॥
भूबीजेन घनी कृत्य तद्भस्मं कनकाण्डवत् । आदर्शतलसङ्काशं जपन्बीजं विहायसः ॥
मूर्द्धादि पाद पर्यन्ता न्यङ्गानि रचयेत्ततः । आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पाद येच्चितः ॥

इस प्रकार अपने आत्मा का शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप ध्यान कर अपनी बायीं कोख में घुसा पाप पुरुष को पहचाने यह अंगुष्ठ प्रमाण काला-काला है, ब्रह्महत्या उसका शिर है। सोना (स्वर्ण) चुराना जिसकी भुजा है, मदिरा पान हृदय है, गुरु पत्नी का भोग करना कमर है, उसके सहयोगी पातक जिसके दोनों पग हैं, छोटे-छोटे पातक रोम हैं, ढाल तलवार लिये खड़ा है, मुख नीचे लटकाया है, बड़ा दुष्ट है, अत्यन्त दुःसह है, ऐसे महा भयङ्कर असक्त काजल जैसे काले पाप पुरुष को सुखाने के लिये वायु बीज 'यं' का आठ बार जपकर बायें नाक से (पूरक) करे (श्वास ऊपर खींचे) तब 'रं' अग्नि बीज का बत्तीस बार जपकर कुंभक करे (श्वास को रोके रहे) और भावना करे कि पाप पुरुष जलकर भष्म हो रहा है। तब पुनः वायु बीज 'यं' का सोलह बार जपकर पाप पुरुष की भस्म बाहर निकल रही ऐसी भावना करते हुए दाहिने नाक से रेचक करे, श्वास धीरे धीरे बाहर निकाले। तत्पश्चात् 'वं' इस अमृत बीज का आठ बार जपकर दाहिने नाक से पूरक करते हुए भावना करे कि उस भस्म पर अमृत बरस रहा है। तब 'लं' पृथिवी बीज का बत्तीस बार जपकर कुंभक करते हुए उस भस्म का एक स्वर्ण के समान तेजस्वी दर्पण के समान स्वच्छ एक पिण्ड बना है ऐसा ध्यान करे। तब 'हं' इस आकाश बीज का सोलह बार जप करते हुए बायें नाक से रेचक करते हुए यह भावना करे कि उस पिण्ड के सभी अङ्ग प्रत्यङ्ग का निर्माण हो गया है। पहला प्राणायाम पाप पुरुष का प्रलय (संहार) तथा दूसरा प्राणायाम दिव्य देह निर्माण की भावना है। पुनः सृष्टि क्रम से

परमात्मा से आत्मा-आत्मा से प्रकृति-प्रकृति से महतत्त्व-महतत्त्व से अहँकार-अहँकार से आकाश-आकाश से वायु-वायु से तेज-तेज से जल-जलसे पृथिवी-पृथिवी से औषधी-औषधि से अन्न-अन्न से वीर्य-वीर्य से देहधारी पुरुष उत्पन्न हुआ। जो रसमय है ऐसा ध्यान करना ही भूतशुद्धि है, तत्पश्चात् "सोऽहं" यह जीव सनातन प्रभु का अंश है. देह देही सम्बन्ध से तद्रूप है, ऐसी भावना से सोऽहं जप करते हुए परब्रह्म से स्वयं अमृतमयी वनी कुण्डलिनी पराशक्ति पुनः आत्मा का हृदय में विराजमान कर अपने मूलाधार में आ गई है ऐसा ध्यान करे। (श्लोक ५२ से ५८ पर्यन्त)

सोऽहं मन्त्रेण चात्मान मानयेद् हृदयाम्बुजे । कुण्डली जीवमादाय परसङ्गात्सुधा स्वयम् ॥
संस्थाप्य हृदयाम्भोजे मूलाधार गतांस्मरेत् । पाश-मायाङ्कुशैर्युक्तः हंस मन्त्रेण साधकः ॥
देहे प्राणान्प्रतिष्ठाप्य लेलिहानाख्य मुद्रया । प्राणायामम् त्रयं कुर्यात् पूरकुम्भक रेचकैः ॥

तत्पश्चात्-"आं-ह्रीं-क्रौं-हंसः मम प्राणा इह तिष्ठन्तु स्वाहा। आं-ह्रीं-क्रौं मम जीव इह स्थितः स्वाहा। आं-ह्रीं-क्रौं मम सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुर्जिह्वा श्रोत्र घ्राण इहैवागत्य सुखेन सुचिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।" यह मन्त्र पढ़कर 'लेलिहान-मुद्रा" से जैसे परम स्वादु कुछ चूम रहे हों ऐसी मुद्रा से मुख से प्राण वायु भीतर लेते हुए भावना करे कि अब भगवत्कृपा से उनके सेवा कैंकर्य की योग्यता सम्पन्न दिव्य देह में प्राणेन्द्रियादि प्रतिष्ठित होकर यह सर्व शक्ति हो सम्पन्ना गया है। भौतिक देह का विलय [भावभूत वर] दिव्यभावनारूपच्चिदानन्दमय देह मे प्रभु सेवा करना ही इसका तात्पर्य्य है [श्लोक ५९-६०-६१]

प्रणवेनानुलोमेन विलोमेनानुलोमतः । शिरोऽन्तं मूलमारभ्य मातृकार्णं यथास्थितिः ॥
नमोऽन्तं विन्यसेदेव मन्तरो न्यास ईरितः । ललाट मुख नेत्रेषु श्रुतिघ्राणेषु गण्डयोः ॥
ओष्ठ दन्तोत्तमाङ्गस्य दोःपत्सन्ध्यग्रयु केषु च। पार्श्वयोः पृष्ठतो नाभौजठरे हृदयेंऽशके ॥
ककुदंशे च हृत्पूर्वं पाणि पाद युगे ततः । जठरानलयोर्न्यस्येन्मात्रिकार्णान्यथाक्रमम् ॥
डादिफान्ता च न्यस्तव्या प्रोक्तस्थानेषु यत्नतः। विलोमेनापि न्यस्तव्या मात्रिका सर्वसिद्धिदा ॥

तत्पश्चात्-अं नमो मस्तके। आं नमो मुखे। इं नमो दक्षिण नेत्रे। ईं नमो वाम नेत्रे। उं नमो दक्षिण कर्णे। ऊँ नमो वाम कर्णे। ऋं नमो दक्षिण नासापुटे। ॠं नमो वाम नासापुटे! लृं नमो दक्षिण कपोले। लॄं नमो वाम कपोले। एं नमो ऊर्ध्व दन्तपङ्क्तौ ऐं नमो अधः दन्तपङ्क्तौ। ओं नम ऊर्ध्वोष्टे। औं नमं ऽधरोष्ठे। अं नमः जिह्वायाम्। अः नमः ग्रीवायाम्। कं नमो दक्षिण बाहुमूले। खं नमो दक्षिण कूर्परे। गं नमो दक्षिण मणिबन्धे। घं नमो दक्षिण कराङ्गुलिमूले ङं नमो दक्षिणकराङ्गुल्यग्रे । चं नमो वाम बाहुमूले। छं नमो वाम कूर्परे। जं नमो वाममणिबन्धे। झं नामोङ्गुलिमूले। ञ नमो वामाङ्गुल्यग्रे । टं नमो दक्षिण पादमूले। ठं नमो दक्षिण जानुनि। डं नमो दक्षिण गुल्फे। ढं नमो दक्षिण पादाङ्गुलिमूले। णं नमो दक्षिण

पादाङ्गुल्यग्रे । तं नमो वामपादमूले । थं नमो वाम जानुनि । दं नमो वामगुल्फे । धं नमो वामपादाङ्गुलिमूले । नं नमो वाम पादाङ्गुल्यग्रे । पं नमो दक्षिण कुक्षौ । फं नमो वामकुक्षौ। बं नमो पृष्ठे । भं नमो नाभौ । मं नमो उदरे । यं त्वगात्मने नमो हृदि । रं असृगात्मने नमो दक्षिणांशे । लं मांसात्मने नमः ककुदि । वं मेदात्मने नमो वामांशे । शं अस्थ्यात्मने नमो हृदादि दक्षिण हस्तान्तम् । षं मज्जात्मने नमो हृदादि वामहस्तान्तम् । सं शुक्रात्मने नमोहृदादि दक्षिण पदान्तम् । हं प्राणात्मने नमोहृदादि वामपादान्तम् । लं शक्त्यात्मने नमः जठरे । क्षं परमात्मने नमोहृदादिमुखान्तम् ।" इस प्रकार मातृकान्यास करके अकार से क्षकार तक सब अक्षरों को पढ़कर व्यापक करे । तत्पश्चात्-इन्हीं को विलोम करके (क्षं से प्रारंभ कर अं तक) न्यास करने से मातृका सर्वसिद्धि प्रदान करती है ।

तत्पश्चात्—कण्ठ में षोडशदल कमल में (अं-आं-इं-ईं-उं-ऊं-ऋं-ॠं-लृं-ॡं-एं-ऐं ओं-औं-अं-अः नमः) इन सोलह स्वरों का न्यास करे । हृदय में द्वादश कमलदल पर (कं-खं-गं-घं ङं चं-छं-जं-झं-ञं-टं-ठं नमः । इन द्वादश अक्षरों का न्यास करे । नाभि में दश दल कमल पर (डं-ढं-णं-तं-थं-दं-धं-नं-पं-फं नमः) इन दश अक्षरों का न्यास करे । लिङ्ग में षड्दल कमल पर (बं-भं-मं-यं-रं-लं नमः) इन छ अक्षरों का न्यास करे । मूलाधार गुदा चक्र में चार दल कमल पर (वं-शं-षं-सं नमः) इन चार अक्षरों का न्यास करे । भ्रू मध्य में द्विदल कमल पर (हं-क्षं नमः) इन दो अक्षरों का न्यास करे । इस प्रकार विलोम न्यास भी करे । (श्लोक ६२ से ६६ पर्यन्त)

न्यसेदाधार शक्तिश्च प्रकृतिं कमठं ततः । अनन्तं पृथिवीं क्षीर समुद्रं श्वेत द्वीपकम् ॥
मण्डपं मणिपूर्वञ्च कल्पवृक्ष मनन्तरम् । रत्नसिंहासनं राजन् हृदये विन्यसेत्ततः ॥
धर्मंतु दक्षिणे स्कंधे न्यसेद् ज्ञानन्तु वामके । वामोरु भागे वैराग्यमैश्वर्य्यं दक्षिणे ततः ॥
न्यसेदधर्ममुदरे च ह्यज्ञानं वाम पार्श्वके । नाभौऽवैराग्यमितरत्पार्श्वेऽनैश्वर्य मेव च ॥

तत्पश्चात्—आधारशक्तये नमः । मूलप्रकृतये नमः । आदि कच्छपाय नमः । पृथिव्यैनमः। क्षीरसमुद्राय नमः । श्वेतद्वीपाय नमः । मणिमण्डपाय नमः । कल्पवृक्षाय नमः । तथा रत्न सिंहासनायनमः श्रीअनन्ताय नमः । इनका हृदय कमल के मध्य में न्यास करे । तत्पश्चात्—ॐ धर्माय नमः दक्षिण स्कन्धे । ॐज्ञानाय वाम स्कन्धे । ॐवैराग्याय वामोरुमूले । ॐ ऐश्वर्य्याय दक्षिणोरुमूले । ॐअधर्माय उदरे । ॐ अज्ञानाय वामपार्श्वे । ॐ अनैश्वर्य्याय दक्षिणपार्श्वे । ॐ अवैराग्याय नाभौ । इसप्रकारन्यास करे (श्लोक ६७ से ७०)

आनन्द पूर्वकं कन्दं सम्विन्नालन्तुः तत्पर । सर्वं तत्त्वात्मकं पद्मं प्रकृत्यात्मदलानि च ।
विकारमय किञ्जल्कां सूर्यश्चंद्राग्नि मण्डलं । त्रिगुणंन्यस्तथात्मान मन्तरात्मानमेव च ॥
विन्यसेत्परमात्मानं ज्ञानात्मानं क्रमाद्धृदि । केशरेषु च मध्येषु पीठशक्तीन्न्यसेत्ततः ॥

तत्पश्चात् मध्यकर्णिका में आनन्दकन्दाय नमः । ॐ संविन्नालाय नमः । ॐ सर्वतत्त्वात्मक कमलाय नमः । न्यास करके कमल दलों पर–प्रकृत्यात्मक दलेभ्यो नमः । विकारमय केशरेभ्यो नमः । ॐ सूं सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः । ॐ चं चन्द्रमण्डलाय षोडश कलात्मने नमः । ॐ रं अग्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः । ॐ सं सत्वाय प्रबोधात्मने नमः । ॐ रं रजसे प्रवृत्यात्मने नमः । ॐ तं तमसे मोहात्मने नमः । ॐ आत्मने नमः दक्षिणे । ॐ अन्तरात्मने नमः पश्चिमे । ॐ परमात्मने नमः उत्तरे । ॐ ज्ञानात्मने नमः पूर्वे । इन सबका क्रमशः हृदय में न्यास करे । तब कमल केशरों के मध्य में नव पीठ शक्तियों का न्यास करे (७१-७२-७३)

विमलोत्कर्षणी ज्ञाना क्रिया योगा च प्रह्विका । सत्येशानाऽनुग्रहेति विज्ञेया पीठ शक्तयः ॥
सीताराम योग पीठान्ते पद्मायन महत्यपि । ऋषि मूर्ध्नि मुखेछन्दो देवता हृदयेन्यसेत् ॥
षड्दीर्घ भाजावीजेन षडङ्गन्यास माचरेत् । ब्रह्मरन्ध्र भ्रुवोर्मध्ये नाभौलिङ्गेऽथ पादयोः ॥
मन्ववर्णान्यिसेद्राजन जानकी रघुनाथयोः । सीतां ध्यात्वा ततोध्यायेद्रामलक्ष्मण संयुतम् ॥

तद्यथा–ॐ विंविमलायै नमः । ॐ उं उत्कर्षिण्यै नमः । ॐ ज्ञां ज्ञानायै नमः । ॐ क्रिं क्रियायै नमः । ॐ यों योगायै नमः । ॐ प्रं प्रह्व्यै नमः । ॐ सं सत्यायै नमः । ॐ ईं ईशानायै नमः । ॐअं अनुग्रहायै नमः । इनका न्यास करके ॐ सर्वात्म संयोग पद्म पीठात्मने सर्वात्मने श्रीसीता सहित श्रीरामचन्द्राय नमः । कहकर महापद्म के मध्य में श्री सीताराम जी का ध्यान करे । तत्पश्चात्—

ॐ अस्य श्री सीतामन्त्रस्य जनक ऋषिः । गायत्री छन्दः । सीता देवता । श्रीं बीजम् स्वाहा शक्तिः । सीतायै कीलकम् । श्रीसीता देव्याः दिव्य दर्शन कृपानुग्रह प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः इस प्रकार संकल्प करे ।

ॐ जनक ऋषये नमः मूर्ध्नि । गायत्री छन्दसे नमः मुखे । सीता देवतायै नमः हृदि । श्रीं बीजाय नमः नाभौ । स्वाहा शक्तये नमः पादयोः सीतायै कीलकायनमः सर्वाङ्गे ।

तत्पश्चात्–श्रीं नमो मूर्ध्नि, सीं नमो भ्रुवो मध्ये । तां नमो हृदि । यैं नमो नाभौ । स्वां नमो लिङ्गे । हां नमो पादयोः । इस प्रकार श्री सीता जी के मन्त्रों का वर्णन्यास करे । तब श्री सीताराम जी का लक्ष्मण तथा श्रीरामजी के सहित सुन्दर ध्यान करे (७४ से ७७ तक)

ताटङ्क मण्डल विभूषित गण्डभागां चूडामणि प्रभृति मण्डन मण्डिताङ्गीम् ।
कौशेयवस्त्र मणि मौक्तिकहार युक्तां ध्यायेद्विदेह तनयां शशि गौर वर्णाम् ॥७८॥
ध्यायेत्कल्पतरोरधः प्रविततेसौवर्णचिन्तामणौ नानारत्न विराजतेऽत्र भवने सद्रत्नसिंहासने ।
दूर्वानूतन पत्र सुन्दर तनुश्चापं सबाणं महद्विभ्राणं मुकुटादि भूषणयुत पीताम्बर राघवम् ॥

रामाननाब्ज विगलद् गिर मावधानः ।
रामानुराग परिमोदित मानसो यो, रामानुजं तमपि चन्द्रनिभं स्मरामः ॥८०॥
रामावलोकन विभावन यात यामो,

कर्णभूषण ताटङ्क से जिनके कपोल विभूषित हैं चूड़ामणि चन्द्रिकादि से जिनका मस्तक सुशोभित है; कौरोय (रेशमी) वस्त्र तथा मुक्तामणि के हारसे जिनका श्रीअङ्ग अलंकृत है, ऐसी चन्द्रमा के समान गौर वर्णा श्रीविदेहराजतनया का मैं ध्यान करता हूँ । कल्पवृक्ष के नीचे सुवर्ण तथा चिन्तामणियों से मण्डित सुन्दरदिव्य भूमि है, उस पर नाना प्रकार के रत्नों से जटित रत्न सिंहासन है, उसपर नव दूर्वादल के समान श्याम सुन्दर शरीर वाले धनुर्बाण धारी मुकुटादि दिव्य विभूषणों से सुशोभित पीताम्बर पहने हुए श्रीराघवजी का मैं ध्यान करता हूँ ॥७९॥ के श्रीरामअनुराग से जिनका हृदय सदा आनन्दित रहता है, श्रीराम के मुखारविन्द से जो आज्ञा होती है उसका तुरन्त पालन करने में ही जिनका जीवन व्यतीत होता है, ऐसे चन्द्रमा के समान गौर सुन्दर श्रीरामानुज श्रीलक्ष्मणजी का हम स्मरण करते हैं ॥ ८० ॥

एवं ध्यात्वोपचारैश्च मानसैः पूजयेत्ततः । अर्पयामि नमोऽन्तेन गन्धं दद्याद्धरात्मजाम् ।
तथाऽऽकाशात्मकं पुष्पं धूपं वै मारुतात्मकम् । दद्याद्वह्न्यात्मकं दीपं नैवेद्यममृतात्मकम् ॥
वाह्नार्च्चनाय राजेन्द्र शङ्ख स्थापन माचरेत् । वामे त्रिकोण मालिख्यवृत्तं भूपुर संयुतम् ॥
त्रिपादिकं समारोप्य शंखं मन्त्रेण चालयेत् । संस्थाप्य गन्ध पुष्पादि हृन्मन्त्रेण क्षिपेत्ततः ॥
विलोम मातृका वर्णानुक्त्वा तोयेन पूरयेत् । तेषु क्रमेण सम्पूज्य वह्नि सूर्येन्दु मण्डलम् ॥
तत्रतीर्थानि चावाह्य धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत् । शंखमुद्रां प्रदर्श्याथ मत्स्य मुद्राञ्च दर्शयेत् ॥

इस प्रकार ध्यान करके मानसिक उपचारों से पूजन करे । "श्रींसीतायै नमः पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि" "श्रींसीतायै नमः आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि" इसी प्रकार पवनात्मक धूपं समर्पयामि श्रीं सीतायै नमः "तेजात्मकं दीपं संदर्शयामि श्रीं सीतायै नमः" अमृत स्वरूपं नैवेद्यं समर्पयामि, श्रीं सीतायै नमः इस प्रकार पञ्चोपचार पूजन करके हे श्रीमिथिला राजेन्द्र ! बाह्यार्चा पूजन के लिये वाम भाग में त्रिकोण लिखकर उसको भूपुर से आवृत कर उस पर शंख पधराने की 'त्रिपादिका' रखकर उस पर शंख पधरावे तथा जल से स्नान कराके चन्दन पुष्प तुलसी मिश्रित जल विलोम मातृका को वर्णावली पढ़ते हुए अथवा श्रीसीता मन्त्र जपकर उसमें भरे । तब सूर्य-चन्द्र-अग्नि मण्डल का क्रमशः पूजन करे । पश्चात् तीर्थावाहन कर "धेनुमुद्रा" दिखावे एवं "शंखमुद्रा" तथा "मत्स्य-मुद्रा" भी दिखावे [श्लोक ८१ से ८६]

तेन पूजोपचारांश्च सर्वानेवाभि सिञ्चयेत् । विभाव्य देवतान्तत्र षडङ्गानि यजेत्ततः ॥
सर्वज्ञता तथा तृप्ति विधिश्चानादि पूर्व्विका । स्वतन्त्रता ततोनित्या लुप्तशक्ति रनन्तरम् ॥
हृदादीनां षडङ्गानां देवता परिकीर्त्तिता । ससीतं राघवं पीठे पूजयेदनुजान्वितम् ॥
निवेशितं यथा पीठे सर्वपीठोत्तमोत्तमम् । तथैव भावयेन्मन्त्री यन्त्र सर्वत्र दुर्लभम् ॥

उस जल से पूजा के पार्षद तथा पूजन सामग्री सभी को सिञ्चित करे। तब अपने शरीर पर तथा इष्टदेव के विग्रह पर षडङ्ग न्यास करे ॐ रां ज्ञानाय हृदयाय नमः (जल से हृदय का स्पर्श करे) ॐ रामाय ऐश्वर्याय शिरसे स्वाहा (जल से शिर का स्पर्श करे) ॐ नमः शक्त्यै शिखायै वषट् (जल से शिखा का स्पर्श करे) ॐ रां बलाय कवचाय हुम् (जल से बाहु स्कन्धों का स्पर्श करे) ॐ रामाय तेजसे नेत्राभ्यां वौषट् (जल से नेत्रों का स्पर्श करे। ओंम् नमः वीर्यायास्त्राय फट् (जल को चारों ओर घुमाकर गिरा दें) प्रथम अपने शरीर में पश्चात् भगवान् के श्रीविग्रह में पुजारी यह षडङ्गन्यास करे। सर्वज्ञता-तृप्ति अनादिता-स्वतन्त्रता-नित्यता तथा अनन्त गुप्त शक्ति ये षडङ्गों की छह देवता हैं ॥ इनसे सम्पन्न श्रीसीताराम लक्ष्मण जी नित्य ही रहते हैं ऐसी भावना कर पूजन करे। सर्वोत्तम परम श्रेष्ठ रत्न सिंहासन पर विराजमान श्रीसीताजी की अत्यन्त दुर्लभ यन्त्र स्वरूप में मन्त्र तत्वज्ञाता श्रीवैष्णव भावना करे (श्लोक ८५ से ६० तक)

लक्ष्मीर्बिन्दुस्त्रिकोण त्रयमथ मुनिभिर्मण्डलेरष्ट पत्रं वैदेही गेहगेतद्धरणिपुरयुतं तत्र रामं ससीतम् ॥
ब्रह्मोपेन्द्रेश मध्यष्टकयुतमवनी मुख्यतावाद्देवी दिक्पालोपेतमाद्यं झटितिसलभतेपूजयित्वेष्टसिद्धिम् ॥
आधार शक्तिमारभ्य पीठमन्त्रन्तमेव च । प्रणवादि नमोऽन्तेन पूजयेद्यत्नतो बुधः ॥
पुष्पाञ्जलिमथानीय कुर्म्म मुद्रां विधाय च । ध्यायन्त्वथाप्य हृत्कञ्जात्साहस्रारं समानयेत् ॥
वामेन वर्त्मना सीतां राघवं दक्षिणेन च । पुष्पाञ्जलिं समानीय आवाह्य स्थापयेत्ततः ॥
आवाहनादिकां मुद्रां दर्शयेत्तदनन्तरम् । प्राण प्रतिष्ठा मात्रेण प्राणादि स्थापयेततः ॥
आसनं-स्वागतं-पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम् । मधुपर्कं तथाचामं स्नानं वासो विभूषणम् ॥
गन्धं च कुसुमं धूपं दीपं नैवेद्य वन्दने । दद्याद्रामाय सीताया उपचारांश्च षोडश ॥
गन्धं पुष्पञ्च धूपञ्च दीप नैवेद्यमेव वा । अन्योपचाराऽभावेतु यो जपेत्पञ्च भक्तितः ॥

सप्तावरण के मध्य में, तीन त्रिकोणों के बीच में, अष्ट दल कमल पर बिन्दु स्वरूप लक्ष्मी के मध्य में, श्री वैदेही जू का निवास है, उस भूपुर के मध्य श्री सीता जी रामजी के साथ विराजमान हैं। ब्रह्मा-उपेन्द्र-शङ्कर संयुक्त अवनि मण्डल में अष्ट देवी दश दिक्पाल समेत जो श्री सीता जी का पूजन करता है, वह झटपट इष्ट सिद्धि प्राप्त कर लेता है। तब आधार शक्ति से प्रारम्भ कर पीठाध्यक्ष इष्टदेव पर्यन्त सबका विद्वान् पुरुष आदि में ॐ तथा अन्त में नमः लगाकर चतुर्थी विभक्ति संयुक्त मन्त्र पढ़कर यत्न पूर्वक पूजन करे। तब पुष्पाञ्जलि समर्पण कर "कूर्म-मुद्रा" बनाकर हृदय से सहस्रार में देव पधारे हैं ऐसा ध्यान करे। वाम भाग में श्री जानकी जी तथा दाहिने श्रीरामजी को आवाहन मन्त्र से पुष्पाञ्जलि समर्पण कर स्थापित करे तब आवाहनी आदि मुद्राओं से प्रतिष्ठित मूर्ति न हो तो प्रतिष्ठा करके। आसन स्वागत पाद्य-अर्घ्य-आचमन-मधुपर्क-पुनराचमन-स्नान-वस्त्र-यज्ञोपवीत-चन्दन-गन्ध-पुष्प-तुलसी-धूप

दीप-नैवेद्य-जल शुद्धाचमन-आरती-प्रार्थना-परिक्रमा-प्रणाम आदि षोडशोपचार पूजन करे। षोडशोपचारों के अभाव में, शक्ति न हो तो पञ्चोपचार पूजन ही करे। (श्लोक ९१ से ११४ तक)

अग्नीशासुर वायव्यविक्षमध्ये समीपतः। षडङ्गदेवता पूज्या सीतारांघवयोर्नृप ॥
पूजयेदथ सौमित्रीं दक्षिणाग्रमुपाश्रितम्। वायव्यादीश पर्यन्तं गुरुपंक्तिं समर्चयेत् ॥
बिन्दुवाह्येषु कोणेषु ब्रह्मविष्णु महेश्वरान्। अर्चयेत् परया भक्त्या निजशक्ति समन्विताम् ॥
ध्वजहस्तं हनूमन्तं शंख पद्म निधीं तथा। पूर्वादि वसुकोणेषु अणिमाद्यष्टसिद्धयः ॥
सीतायास्सहचारिण्यो यावलावयादिकामलाः। अणिमामहिमा चेतिगरिमा लघिमा ततः ॥
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वमिति सिद्धयः। वलाकाविमला चार्थकमला वनमालिका ॥
विभीषिका मालिका च शाङ्करी वसुमालिका। महानहं नमो वायुस्तेजः पाथोवसुन्धरा ॥
मण्डलेष्वर्च्चनीयानि तत्वान्येतानि सप्त हि। ब्राह्मी महेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवीतथा ॥
वाराही च तथेन्द्राणि चामुण्डा सप्तमी तथा। अष्टमी तु महालक्ष्मी प्रोक्ताः स्युर्विश्वमातरः ॥
वसुपत्रेषु पूज्यास्युस्त्वरितं फलदायिका। इन्द्रो वह्निर्यम श्चैवनिरति वरुण स्तथा ॥
वायुः कुवेर ईशानो ब्रह्मानन्त क्रमादिमान्। दिक्पालान्पूजयेत्पश्चा द्वहिर्भू पुर मण्डले ॥
शाङ्र्गधनुस्ततस्तस्मध्ये नाराचान्दक्षिणेऽर्चयेत्। सीताया अभयं वामे वरान्दक्षिणतोऽर्चयेत् ॥
नीराजयेत्ततः पश्चात्स्तुत्वा च प्रणमेत्ततः। पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यामुरसाशिरसा दृशा ॥
मनसा वचसा चेति प्रणामोऽष्टाङ्ग मीरितः। विसर्जयेत्ससीतं तमथ संहारमुद्रया ॥
चरणामृत मापीय भुञ्जीयाच्च निवेदितम्। अहन्यहनि योनित्यमेव माराधयेन्नृप ॥
कृत्वा करतलां भुक्ति मुक्तिं प्राप्यस्य संशयम् ॥११४॥

इति श्रीयामल सारोद्धारे मिथिला खण्डे

श्री जानकी पूजा ध्यानं नाम-पञ्चमः पटलः ॥५॥

अग्नि-नैऋत-वायव्य तथा ईशानकोण में षडङ्ग देवताओं का पूजन पूर्वादि दिशाओं के मध्य में श्रीसीतारामजी के समीप ही पूजन करे। हे राजन्! श्रीसीतारामजी की दाहिनी ओर श्रीसुमित्रानन्दन लक्ष्मणजी का पूजन करे। वायव्य कोण से ईशानकोण पर्यन्त एक पंक्ति में आचार्य परम्परा के समस्त पूर्वाचार्यों का पूजन करे। विन्दु से बाहर कोणों पर उनकी शक्तियों सहित ब्रह्मा विष्णु महेश्वर का परम भक्ति पूर्वक पूजन करे। ध्वजा फहराते हुए श्री हनुमानजी का तथा शंख-कमल का पूजन कर कमल के पूर्वादि में अष्टदलों के कोणों पर श्रीकिशोरीजी की सेवा में परायण-अष्टसिद्धि नवनिधि का पूजन करे। १-अणिमा २-महिमा

३-गरिमा ४-लघिमा ५-प्राप्ति ६-प्राकाम्य ७-ईशिता ८-वशिता ये आठ सिद्धियाँ हैं । बलाका विमला-कमला-वनमालिका-विभीषिका-मालिका-शांकरी-वसुमालिका ये निधियाँ हैं । महत्तत्व-अहङ्कार-आकाश-वायु-तेज-जल-वसुन्धरा इन सातों तत्वों का भी पूजन करे । ब्राह्मी-माहेश्वरी-कौमारी-वैष्णवी-वाराही-इन्द्राणी-चामुण्डा तथा महालक्ष्मी ये आठ विश्वमातायें हैं । इनकी कमल के अष्टदलों पर पूजन करने से शीघ्र फलप्रदायिनी होतीं हैं; इन्द्र-यम-अग्नि-निऋति-वरुण-पवन-कुबेर-ईशान-ब्रह्मा तथा अनन्त इन दश दिक्पालों का क्रमशः पूजन करके पश्चात् बाह्य भूपुर मण्डल में शारंग धनुष का वाम भाग में तथा बाणों का दाहिनी ओर पूजन करे । श्रीसीताजी की बाईं ओर अभय तथा दाहिनी ओर वरदानों का पूजन करे । पश्चात् विधिवत आरती उतार कर स्तुति-प्रार्थना करके साष्टाङ्ग दण्डवत प्रणाम करे । दोनों पाँव-दोनों हाथ-दोनों घुटने हृदय तथा मस्तक इन आठों अङ्गों का प्रणाम करते समय ठीक से पृथिवी का स्पर्श होता रहे तब साष्टाङ्ग प्रणाम कहाता है । नेत्रों से श्रीयुगल प्रभु का दर्शन करे मन से प्रभु के अनुपम गुणों का स्मरण करे-वचन से विनीत भाव से प्रभु की प्रार्थना करे, यह साङ्गोपाङ्ग साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम कहाता है । तत्पश्चात् "संहार मुद्रा" से विसर्जन कर चरणोदक-प्रसाद सबको देकर-अपने स्वयं भी ग्रहण करे । हे राजन् ! जो दिन-प्रतिदिन इस प्रकार पूजन करता है वह भुक्ति (लौकिक सुखोपभोग) तथा मुक्ति (जन्म मरण से छुटकारा) उसके करतल में सदैव संप्राप्त रहती हैं । इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । (९९ श्लोक से ११४ श्लोक पर्यन्त)

यह यामलसारोद्धार तन्त्र के "श्रीमिथिला खण्ड" में वर्णित श्रीशिव-जनक संवादात्मक "श्रीजानकी पूजा ध्यान पद्धति" नामक पञ्चम पटल सम्पूर्ण हुआ ।

-: श्रीमैथिली प्रार्थना :-

प्राप्योपाय परांपूर्णां प्रपन्नामर वल्लरीम् ।
श्रीरामाऽभिन्नरूपां तां श्रियं शश्वत्समाश्रये ॥

जयदेवि ! मैथिलि ! तेऽङ्घ्रि पङ्कजमाश्रये रतिभक्ति दं-
भवताप नाशन मात्म दर्शन मन्वहं जनमुक्तिदम् ॥

करुणाद्यनन्त गुणान्विते ! सुमनोनुते ! करुणा दृशं-
सुविधाय दीनजनम्भवाम्बुधिमग्नमुद्धर मादृशम् ॥

वेदान्ती श्रीरघुवराचार्य स्वामिनः

अथ श्रीजानकी द्वादशनाम स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीजानकीद्वादशनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारदऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्रिगुणात्मिका शक्तिः श्रीजानकी देवता श्रीसीता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम्—

ध्यायेच्चम्पक गौराङ्गीं हेमाभां नील वस्त्रकाम् ।

दिव्य कल्पोज्ज्वलाङ्गीं च रामवाम स्थितां मुदा, रत्न सिंहासनगतां सर्वाभरण भूषिताम् । सर्वालङ्कार संयुक्तां वीणावादन तत्पराम् । ध्यायेत्सीतां हृदिगतां दिव्यस्त्रीगण सेविताम् ॥

नमामि जनकनंदनी, अजादि देववन्दिनी । सदा सुसन्त रञ्जिनी, पिशाच गर्व गञ्जिनी ॥

मुनीन्द्रवास रागिणी, श्रीरामवाम भागिनी । सुबुद्धिदा प्रमोदिनी, श्रीकोशलाविनोदिनी ॥

गुणादि वेद गायिनी, सुभक्त सुखदायिनो । अनन्त दुःख मोचिनी, नमोऽस्तु विश्वलोचनी ॥

पुनीत नाम द्वादशं; पठन्तित्यक्त आलसम् । प्रसन्न सर्वदेवकं, वदन्ति राम सेवकम् ॥

॥ इति श्री जानकी द्वादश नामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ-ध्यानम्—चम्पा के फूल तथा स्वर्ण के समान गौराङ्गी-नील रेशमी वस्त्रालंकृत-दिव्य कल्पवली के समान उज्वलाङ्गी प्रसन्न होकर श्रीरामजी के बायें भाग में बैठी हुई, रत्न सिंहासन पर विराजीं हुई, सभी आभूषणों से विभूषित, सर्वालङ्कार सम्पन्न वीणा बजाने में निमग्न-दिव्य स्त्रियों से सुसेवित हृदय में विराजमान श्री सीता जी का ध्यान करे ॥ ३ ॥

अथ संकल्पः— इस श्री जानकी द्वादश नाम स्तोत्र के श्री नारद ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, त्रिगुणात्मिका शक्ति है, श्रीजानकी देवता है, श्रीसीता प्रीत्यर्थ इसके जप का विनियोग है।

श्री जनक नन्दिनी को नमस्कार है, ब्रह्मादिक देव जिनका वन्दन करते हैं, सदैव सन्तों को प्रसन्न करने वाली हैं, पिशाचों के गर्व का गञ्जन करती है, मुनीन्द्रों के सत्सङ्ग में जिनकी प्रीति है, श्रीरामजी के वाम भाग में विराजमान है; सुन्दर बुद्धि प्रदान कर आनन्द बढ़ाती हैं, श्री अवधपुरी में विहार करती हैं, चारों वेद जिनके गुणों का गान करते हैं, सुन्दर भक्तों को परम सुख देती हैं, अनन्त दुखों को छुड़ाती हैं समस्त विश्व को जो कृपा दृष्टि से देख रही हैं उनको प्रणाम है ॥ ये पुनीत द्वादश श्री जानकी जी के नाम जो आलस्य का त्याग कर पढ़ते हैं, उस पर सभी देवता प्रसन्न होते हैं तथा वह श्रीरामजी का सेवक कहलाता है।

॥ इस प्रकार यह श्रीजानकी द्वादश नाम स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्रीसीता-विस्मृति व्यपोहन स्तोत्रम् ॥

—:‌❀०❀:—

॥ श्रीनारद उवाच ॥

पित्राज्ञापित वृत्तोऽपि कथं विस्मृतवानहम् ।
अत्र यत्कारणं देव तद्वदस्व दयानिधे ॥१॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

शृणु नारद यत्नेन सावधान मना भव । यस्मात्ते विस्मृतिर्याता जानतोऽपि हरिप्रिया ॥२॥
विष्णुमाया भगवती कन्न मोहयतीश्वरी । सर्वयत्नेन मान्मायामनाराध्य हि को बुधः ॥३॥
तस्मात्सर्व प्रयत्नेन ह्येषा जनक नन्दिनी । तामाराधय देवर्षे विष्णुमायां प्रयत्नतः ॥४॥
आराधनप्रकारस्तु श्रुतश्चैव त्वया मुने । मत्तः कथयतो विप्र जनकाय महात्मने ॥५॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

प्रबोधितो हरेणैवं देवर्षिरमित प्रभः । स्तोतुं समुपचक्राम जानकीं राम संयुताम् ॥६॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

जय देवि जगन्मातर्जय लक्ष्मी नमोऽस्तु ते । जय जानकि विश्वेशि जय लक्ष्मण वन्दिते ॥७॥
जय विश्व महामोह पाशच्छेदनकारिणी । जय रावणसंहारहेतुभूते सनातनी ॥८॥
जय पीताम्बरे चूड़ामणिप्रभृतिभूषिते । जय राघव पार्श्वस्थे भक्ताभयवरप्रदे ॥९॥
जयाम्ब ! हनुमद्बन्धो जय रामेति भाषिणी । जय सीरध्वजानन्द कारिणी प्रणितार्तिहे ॥१०॥
जय ब्रह्म महेशान पूजिताङ्घ्रि सरोरुहे । जय भक्त महामोह स्वकृत ग्रन्थि भेदिनी ॥११॥
जय मूलसरोजस्थे ब्रह्मशक्ति स्वरूपिणी । जय षड्दल मध्यस्थे विष्णुशक्ति स्वरूपिणी ॥१२॥
जय दिक्पत्र पद्मस्थे शिवशक्तिस्वरूपिणी । जयानाहत पद्मस्थे महामाये महेश्वरी ॥१३॥
जय षोडशपत्राब्जे सदाशिव महाप्रिये । जयद्विदलपत्रस्थे शक्तिस्त्वं परमात्मनः ॥१४॥
जय देवि सहस्रारे गुरुशक्तिस्वरूपिणी । जय देवि जगद्रूपे पाहि मां शरणागतम् ॥१५॥
सहस्रवदनानन्ते पञ्चवक्त्रो महेश्वरः । लोक कर्त्ता चतुर्वक्त्रो न स्तोतुं प्रभवोऽभवत् ॥१६॥
सोऽहं देवि गुणानन्त्यं जानतस्ते महेश्वरि । प्रभवेयं कथं नित्ये प्रकृतेस्त्वं प्रसीद माम् ॥१७॥

त्वामाराध्य महादेवी सृजति द्रुहिणो जगत् । तथा पालयति श्रीशस्तथा क्षोभयतीश्वरः ।
विक्षेपावरणाख्य शक्तिभिदृ या त्वं व्याप्य यन्निगुणं,
ब्रह्मं पेश्वर जीव भेवमकरोवाश्चर्य भूता सती ।
विश्वं नर्तयसि प्रकल्प्य विविधं सम्मोह पाशच्छिदां,
कस्तोतुं भवति प्रभुस्त्रिणिनित्वां श्रीराघवप्रेयसी ॥१९॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

एवं स्तुता जगद्धात्री रामपत्नी स राघवा । आविर्भूय यथा रूपं दर्शयित्वा वचोऽब्रवीत् ।

॥ श्रीजानक्युवाच ॥

वरं वरय देवर्षे वरवाहमुपस्थिता । तुभ्यमिष्टं प्रदास्यामि प्रसन्नाहं स बल्लभा ॥२१॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

शक्तिर्याऽवरणाख्याते मा मां स्पृशतु कर्हिचित् । त्वद्युक्त रामचरणेभ क्तिःस्यादनपायिनी ॥

॥ श्रीजानक्युवाच ॥

तत्त्वं प्रार्थयसे मत्तस्तत्ते भवतु नान्यथा । स्तोत्रेणानेन यस्तूयात्सोऽपित्वंवद्भविष्यति ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

एवं दत्वा वरं तस्मै नारदाय महात्मने । अन्तर्धाय पुनस्सीता समागान्निजमन्दिरम् ॥
नारदोऽपि महायोगी भगवन्तं प्रणम्य च । आपृच्छ्य ब्रह्मसदनं परिदृष्टो जगाम ह ॥
एवं ते वर्णितानन्दिन् मिथिला पुण्यभाजनाः ॥२६॥

इति यामल सारोद्धारतन्त्रे श्रीसीता विस्मृति व्यपोहन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीसीताविस्मृतिव्यपोहनस्तोत्रम् ॥

श्री नारद-उवाचः—

हे दयानिधे ! जब हमारे पिताजी ने सब वृतान्त बताया था तो भी मैं यह बात भूल क्यों गया ? इस विस्मृति का क्या कारण है ? यह आप कृपा करके कहें ॥ १ ॥

श्रीशिव उवाचः—

हे नारदजी ! आप सावधान होकर एकाग्र मन से सुनिये; जानते हुए भी आप श्रीहरि प्रिया जू को क्यों भूल गये, इसका कारण प्रभु की श्री वैष्णवी माया ही है । यह ईश्वरी भगवती माया किसको विमोहित नहीं करती है ? सर्व प्रकार से श्री जू का आराधन किये विना कौन विद्वान् उस माया से तर सकता है ? इस लिये हे देवर्षे ! आप सर्व प्रकार से प्रयत्न करके श्री जनकनन्दिनी जू का आराधन करिये । मैंने जब श्री जनक जी को उनके

आराधन का विधान बतलाया था तब आपने मेरे मुख से श्री जी की आराधना की पद्धति तो ठीक से सुनी ही है ॥ २-३-४-५ ॥

श्री पार्वती जी ने कहा:—

इस प्रकार भगवान् शङ्कर के द्वारा समझाने पर असीम तेजस्वी देवर्षि नारद श्री राम जीके सहित श्री जानकी जी की स्तुति करने लगे ॥ ६ ॥

जय देवी, जय जगमाता, जय श्रीलक्ष्मी, जय जनक लली ।
नमस्कार है जय विश्वेशी ! जय लक्ष्मण वन्दिता भली ॥
जयति विश्व के महा मोह का, पाशछेदनी जय तेरी ।
जय रावण संहार कारिणी, सनातनी रक्षक मेरी ॥

पीताम्बरे ! जय, जय चूड़ामणि भूषण भूषित वर वरणी ।
जय राघव के वाम भाग में, राजित जय जन भय हरणी ॥
जय माँ ! हनुमत् वन्दनीय जय, राम नाम प्रिय जय करणी ।
सीरध्वज आनन्द कारिणी, जय शरणागत दुख हरणी ॥

जय हरि-हर विधि वन्दित चरणे ! जय भक्तन की हितकारी ।
जय निज कृत दृढ़ महामोह की, ग्रन्थि भेदनी अविकारी ॥
जय अनादि कमलासन संस्थे ! ब्रह्म शक्ति जय चिद्रूपा ।
जय षट् दल मध्यस्थ विष्णु की, शक्ति सनातन जग भूपा ॥

जय दिक्पत्र कमल में राजित, जय शिव शक्ति सदा शुभदा ।
माया महा महेश्वरि जय जय, पद्म अनाहत स्थित सुखदा ॥
जय षोडशदल कमल सदाशिव, जयति सुशोभित महाप्रिये ।
जयति द्विदल पद्मस्थ शक्ति जय, जय परमात्मा प्राणप्रिये ॥

जयति सहस्रदल कमल विराजित, जय सद्गुरु की शक्ति महा ।
जयति देवि ! जय जगद्रूप जय, त्राहि-त्राहिमाम् शरण गहा ॥
सहस बदन भगवन्त अनन्त न, पञ्चबदन नहिं शङ्कर जी ।
चतुर्वदन ब्रह्म जगकर्ता, स्तुति करने में शक्ति नहीं ॥

सो मैं तेरे गुण अनन्त हैं, जान रहा हूं महेश्वरी ।
कैसे पार पाऊंगा प्राकृत, स्वयं तुष्ट हो रमेश्वरी ॥
महादेवि ! आराधन करके, तेरा विधि जग करते हैं ।
श्रीपति पालन करते, शंकर जगत सदा संहरते हैं ॥

विक्षेप आवरण रूप शक्ति का, भेदन कर हे दयामयी ।
व्याप रही सर्वत्र सदा ही निर्गुण बनकर कृपामयी ॥
जीव ब्रह्म में भेद डालकर, अति आश्चर्य दिखाती हो ।
अखिल विश्व को नाच नचाकर, मन्द मन्द मुसकाती हो ॥

महामोह का पाश तोड़ने वाली एक सामर्थ तुंही ।
रघुवर प्यारी ! कोई त्रिभुवन में, स्तुति करने में समर्थ नहीं ॥

—श्लोक ७ से १६ पर्यन्त।

श्रीदेवी पार्वती ने कहाः—

इस प्रकार श्री नारद जी के द्वारा जगज्जननी श्रीरामवल्लभा श्री जानकी जी की श्री राघव के साथ स्तुति करने पर वे स्वयं प्रकट हुई तथा अपना दिव्य दर्शन देकर इस प्रकार अमृतमय वाणी बोलीं ॥ २० ॥

श्री जानकी उवाचः—

हे देवर्षे ! आपको वरदान देने के लिये मैं उपस्थित हुई हूँ। आप इच्छित वरदान मांगे। मैं अपने प्राणवल्लभ प्रभु के सहित आप पर परम प्रसन्न हूँ ॥ २१ ॥

श्रीनारद उवाचः—

हे जगदम्बे ! आपके दिव्य-दर्शन करने में आवरण डालने वाली माया शक्ति का कभी भी मुझको स्पर्श न हो तथा आपके सहित श्रीराम चरणों में मेरी अविचल अखण्ड भक्ति प्राप्त हो, बस, यही वरदान कृपा कर प्रदान करिये ॥ २२ ॥

श्रीजानकी उवाचः—

आपने प्रार्थना पूर्वक हमसे जो वरदान मांगा वह आपको प्राप्त हो, तथा आपके द्वारा किये गये स्तोत्र का जो कोई पाठ करेगा उसको भी आपकी ही भाँति भक्ति प्राप्त होगी ॥२३॥

श्रीदेवी उवाचः—

हे नन्दीश्वर ! इस प्रकार श्री नारद जी को वरदान देकर श्री जानकी जी अन्तर्ध्यान हो गयीं। महायोगीश्वर श्री नारद जी भी श्री युगल प्रभु श्री सीताराम जी के चरणारविन्दों में प्रणाम कर उनकी आज्ञा लेकर प्रसन्न चित्त से ब्रह्म लोक में चले गये। इस प्रकार हे नन्दीश्वर ! पवित्र धाम श्रीमिथिलाजी का वर्णन मैंने तुमको सुनाया है ॥ २४-२५-२६ ॥

"श्री यामल सारोद्धार-तन्त्र का यह श्री सीता विस्मृति व्यपोहन स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

—: श्रीसीतास्मरणीय नामावलिः :—

वैदेही-जानकी-सीता-मैथिली-जनकात्मजा । भूमिजाऽयोनिजा-वीर्यशुल्का-सुनयनासुता ॥
यज्ञवेदी समुद्भूता सीरध्वज प्रियात्मजा । मिथिलेश कुमारी च श्रीमिथिलेशनन्दिनी ॥
निमिवंशसमुत्पन्ना विदेहतनया शुभा । पुण्यश्लोका परानन्दाऽह्लादिनी श्री विदेहजा ।
नामान्येतानि मुख्यानि सुतायास्तव सुव्रत । ऋषिभिः परिगीतानि भविष्यन्ति न संशयः ॥

॥ इति श्रीसीतास्मरणीय नामावलिः ॥

❀ श्रीजनकनन्दिन्यै नमः ❀

॥ अथ श्रीमज्जानकीप्रातःस्मरणीयपञ्चकस्तोत्रम् ॥

पुष्पाम्बुजधरां देवीं रामवाम विराजिताम् ।
उषायाञ्च प्रबुद्धयैव चिन्तयेद्रामवल्लभाम् ॥ १ ॥

स्मरामः प्रातः श्रीजनकतनयाचन्द्रवदनं ललाटे श्रीखण्डं जलजनयनं राम मुकुरम् ।
श्रवस्तारं कार्चं भ्रुकुटिकुटिलं कुन्ददशनं कपोल श्रीपाण्डुं फलदमरुणोष्ठं मितहसम् ॥ २ ॥

स्मरामः प्रातः श्रीमिथिलनृप कन्या करयुगं सपद्मं सौवर्णांगद वलयमंगुष्ठ सुयवम् ।
नखांसुप्रावालं तलविजयसिन्दूरनिचयं घनश्यामस्पर्शं मणिकटकमंगुल्य विधरम् ॥ ३ ॥

सदा नौमि प्रातः क्षितिपसुत पद्मन्त्यंघ्रियुगलं पयःफेनस्निग्धं नवकमलपत्रारुणजितम् ।

स्फुरल्लाक्षारागं १ घुसृणमसृणं नूपुरधरं ध्वजाविन्द्वब्जेष्वंकुशपविधनुश्चिह्नमतुलम् ॥ ४ ॥

हृदि ध्यामः प्रातः सुयव सुकुमारांकुर जिताम् विशालां सीतायाः कनक नववल्ली मपजयाम् ।
स्रजा पुष्पैर्मुक्तैः सगलमणि रत्नैरुपचिताम् तडिन्मूर्तिं २ पूर्तिं भुवन जनकामान्भगवतीम् ॥५॥

द्वयं ब्रूमः प्रातर्गत वयसि सीताक्षरमिदं जगद्भव्यं दिव्यं भवभयदलं मंत्र विपुलम् ।
चतुर्णां संजन्यं विधिहरिहरैर्ध्येयमनिशम् त्रयीविद्यादातृ ३ सुखदमथ सेव्यं मुनिजनैः ॥ ६ ॥

इदं पञ्चश्लोकं व्युषसि मनुजो मानसफलं धनापत्यं राज्यं लभति पतिवीरं पतिपरा ।
सुपुत्रं सुप्रज्ञां द्विजकुलमभीष्टं हरिपुरीं पटेद्भवत्या ध्यात्वा रहसि वचसाग्रेण हृदये ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीसिद्धेश्वर तंत्रे श्रीरामलक्ष्मणसंवादे प्रातःस्मरणीयपंचकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

कमल पुष्प को हाथ में धारण किये हुए, श्रीराम की बांयी ओर विराजमान, श्रीराम वल्लभा श्री जानकी देवी का उषः काल में स्मरण करना चाहिये ॥ १ ॥

प्रातः काल में श्री जनकराजकुमारी के मुखचन्द्रका मैं स्मरण करता हूं। जिनका श्रीखण्ड चर्चित सुन्दर ललाट है, कमल दल जैसे सुन्दर नयन हैं, जिनके मुखपर दर्पण की भांति श्रीराम की छबि झलकती है, जिनके कानों में ताटंक चमकता है, धनुष की भौंति टेढ़ी भौंहे हैं, कुन्द के समान स्वच्छ दांत हैं, सुन्दर कपोल हैं, अरुण ओठ हैं तथा जो मन्द-मन्द

टिप्पणी-(१) कमल कोशस्निग्धं यद्वा नवनीत स्निग्धमित्यर्थः। (२) पूर्त्तिमित्यत्र उणादि कर्त्तरिक्तिः प्रत्ययः। (३) त्रिगुण भजमानं-त्रिगुणमथ सेव्यमिति वा पाठः ॥

मुसकाती हैं, उनका हम स्मरण करते हैं ।। २ ।।

जिन करममलों में सुवर्ण के बाजूबन्द कड़ा कङ्कण धारण किये हैं, जिनके अंगूठे में यव का सुन्दर चिह्न है, जिनके नख प्रवाल की भाँति लाल रङ्ग के हैं, जिनमें सिन्दूर का रङ्ग लगा हुआ है, मणि रत्नालंकृत आभूषणों से सुशोभित श्री मिथिलेश किशोरी जू के उन कर कमलों का हम ध्यान करते हैं ।। ३ ।।

प्रातः काल उठकर सदा श्री विदेहराजकुमारी जू के युगल चरणों को मैं नमस्कार करता हूँ । जो दूध की फेन के समान चिकने तथा कोमल हैं, नवीन कमल की अरुणाई लालिमा को लज्जित करने वाले हो, जो महावर अलता लगे हुए कमल केशर के समान सुकोमल हैं तथा नूपुर धारण किये हुए हैं तथा जिन चरणों में ध्वजा-बिन्दु-कमल-बाण-अंकुश वज्र तथा धनुषादिक चिह्न सुशोभित हैं उनको प्रणाम करता हूँ ।। ४ ।।

परम सुकुमार अंकुर की कोमलता को भी जीतने वाली सुवर्ण की नवीन लता के समान गौराङ्गी विशाल पुष्प माला धारण किये एहु रत्नहार से अलंकृत, बिजली के चमकती भुवन मनोहर भक्तों की मनःकामना पूर्ण करने वाली भगवती श्री सीता जी का हृदय में प्रातः काल हम ध्यान करते हैं ।। ५ ।।

रात्रि बीतने पर प्रातः काल में परम दिव्य भव्य-भवभयहारी-महामन्त्र-अर्थ-धर्म-काम मोक्ष चारों पदार्थ प्रदायक-ब्रह्म विष्णु महादेव जिसको रात दिन स्मरण करते हैं, ब्रह्मविद्या का प्रकाश करने वाला मुनि जनों द्वारा निरन्तर सेवनीय "श्रीसीता" इस पावन नाम का हम उच्चारण करते है ।। ६ ।।

जो इन पांच श्लोकों का प्रातः काल में पाठ करता है, उसको सम्मान, सम्पूर्ण सुख, धन-पुत्र-राज्य तथा कन्या को वीर पति सुपुत्र-सुन्दर बुद्धि, ब्राह्मणों का आशीर्वाद तथा श्री हरिलोक प्राप्त होता है, इसको प्रतिदिन हृदय के प्रेम से जीभ से उच्चारण कर भक्ति पूर्वक एकान्त में ध्यान करते हुए पाठ करना चाहिये ।। ७ ।।

"यह सिद्धेश्वर तन्त्र का श्रीराम लक्ष्मण संवाद कथित श्री जानकी प्रातः स्मरण पञ्चक स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ।"

—:❀:—

।। श्री जानकीचरणरेवाश्रयणम् ।।

—:❀:—

वन्दनात्प्रणतपापकर्षिणीं सेवनादमृतवर्णवर्षिणीम् ।
संश्रयादखिलदोषमर्षिणीं श्रीजानकीचरणरेणुमाश्रये ।।

श्रीरामकान्ता-सुप्रभात स्तोत्रम्

श्री-शारदोमा प्रतिमच्छटाभिः सखीसमाराधितवारिजाङ्घ्रेः ।
वात्सल्य सम्पोषित जीवराशेः श्रीरामकान्ते ! तव सुप्रभातम् ।।१।।

सी-मानमुल्लङ्घ्य कृपापयोधे विराजिताया भुवनत्रयेऽपि ।
सम्पूर्णमाङ्गल्यगुणाकरायाः श्रीरामकान्ते तव सुप्रभातम् ।।२।।

ता-रेशकोटिप्रतिमाननाया विम्बाधरोष्ठ्या नवनीरजाक्ष्याः ।
अम्बासुनेत्राङ्क विभूषणायाः श्रीरामकान्ते तव सुप्रभातम् ।।३।।

यै-का प्रसिद्धाऽखिलशक्तिवृन्दे हितानुरक्त्या सचराचराणाम् ।
आह्लादयन्त्याः स्वरुचा स्वकान्तं श्रीरामकान्ते तव सुप्रभातम् ।।४।।

स्वा-चारसंस्थापितधर्मसेतो र्जगज्जनन्याः पदमा समन्तात् ।
आमृत्युगर्भाच्चरितार्थयन्त्याः श्रीरामकान्ते तव सुप्रभातम् ।।५।।

हा-निर्न यस्याः स्मरणेतराद्वै लाभो न यस्याः स्मरणाधिकोऽन्यः ।
क्षितिसमायाः करुणाप्लुतायाः श्रीरामकान्ते तव सुप्रभातम् ।।६।।

मन्त्रात्मकमिदं भक्त्या सुप्रभातं पठेत्तु यः ।
यतात्मा प्रत्यहं तस्य सुप्रभातं न संशयः ।।७।।

इति श्रीजानकीघाट मधुकर निवास श्रीअयोध्या निवासी पण्डित प्रवर अनन्तानन्त श्रीविभूषित स्वामी श्रीरामवल्लभाशरणजी महाराज प्रणीत श्रीरामकान्ता सुप्रभातस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।

श्री लक्ष्मी जी श्री सरस्वती जी तथा श्री पार्वती जी के समान अप्रतिम दिव्य छटा वाली प्रमुख सखियों के द्वारा समाराधित श्री चरणारविन्दवाली, अपनी वात्सल्यता से सम्पूर्ण जीव जगत् का सम्पोषण करने वाली हे श्रीरामकान्ते । आपका सदैव सुप्रभात सुन्दर मङ्गल-मय हो ।। १ ।।

त्रिभुवन में निस्सीम अपरम्पार कृपा समुद्र के समान विराजमान, सम्पूर्ण माङ्गलिक गुणगणों की खान, हे श्री राम जी की प्राणप्रिये । हे श्री जानकी जी ! आपका प्रभात अति सुन्दर मंगलमय हो ।। २ ।।

करोड़ों तारापति चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखचन्द्र वाली, पके बिम्बाफल के समान अरुण ओष्ठ वाली, नवीन कमल के समान सुन्दर नयनों वाली, माता श्री सुनयना अम्बा की गोद की शोभा बढ़ाने वाली हे श्रीरामकान्ते ! आपका सदैव सुप्रभात हो ॥ ३ ॥

अखिल ब्रह्माण्ड की शक्तियों की अधीश्वरी के नाम से जो सुप्रसिद्ध हैं, जो सचराचर जड़-चेतन सभी प्राणियों के हित करने में निरन्तर लगी रहती हैं, अपनी दिव्य शोभा सम्पत्ति से जो अपने प्राणनाथ प्रभु को आह्लादित करती रहती हैं ऐसी हे श्रीरामकान्ते आपका सदैव मङ्गलमय सुप्रभात हो ॥ ४ ॥

अपने आचरण से धर्म के सेतु का स्थापन करने वाली, तथा जीवों को गर्भ से लेकर मृत्यु पर्यन्त वात्सल्य रस से लालन पालन करके जगत जननी के पद को सदैव समुन्नत सुशोभित करने वाली हे श्रीरामकान्ते ! आपका सदैव सुप्रभात हो ॥ ५ ॥

जिसके विस्मरण से बढ़कर कोई हानि नहीं है तथा जिसके पावन संस्मरण से बढ़कर अन्य कोई लाभ नहीं है, ऐसी पृथिवी के समान क्षमाशील करुणा से भरी श्रीरामकान्ते ! आपका यह प्रभात सुन्दर मङ्गलमय हो ॥ ६ ॥

श्रीसीता मन्त्र के आद्याक्षर से संयुक्त यह मन्त्रमय श्रीजानकी जी के सुप्रभात स्तोत्र का जो पाठ करेगा उस संयमशील आत्मा का प्रतिदिन सुप्रभात ही होगा इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥ ७ ॥

सविशेष ब्रह्मनिष्ठ विद्वद्वरिष्ठ सकलगुणगरिष्ठ अपर वशिष्ठ सन्त शिरोमणि श्रीअयोध्या श्री जानकीघाट निवासी अनन्त श्री १०८ श्री स्वामी पं० श्रीरामवल्लभाशरण जी महाराज कृत श्रीजानकी सुप्रभात स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

—:❀:—

—: विघ्नकर्त्ताओं का निवारण :—

ये विघ्नकारकाः सर्वे पूजाकाले भवन्ति हि ।
दूरं गच्छतु ते सर्वे हरिनामास्त्र ताडिताः ॥

यह मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित जल अपने चारों ओर छींट देने से पूजाकाल में कुछ भी विघ्न नहीं होता है ।

❀ पूजाकाल में पुण्य स्मरण ❀

जानकीजीवनं वन्दे, माण्डवीप्राणवल्लभम् ।
उर्मिलारमणं वन्दे, कीर्तिकान्तं नमोऽस्तुते ॥

—श्रीसीताराम कैङ्कर्य रत्नमञ्जूषा

॥ श्रीमैथिलीप्राणवल्लभाय नमः ॥

—: श्रीभूमिजा प्रातः स्मरणस्तोत्रम् :—

प्रातः स्मरामि भवसिन्धु विशोषणाय ज्ञानोदयाय हृदयाब्ज विकासनाय ।
पादद्वयं सरसिजोत्तममद्वितीयं देव्या उदारमनसो हृदि भूमिजायाः ॥१॥

यज्ज्योतिरव्यय विभानिचयो मदीयमज्ञानसन्ततमः पटलावसन्नम् ।
नित्यं मनोविमलयत्यथ भूमिजाया स्तान् पादसुन्दरनखान् हृदि भावयामि ॥२॥

प्रातःस्मरामि शिव-शारद-शर्वरीश च्छायापहारि वदनं हृदि भूमिजायाः ।
बिम्बाधरं मृदु शुचिस्मितमब्जगन्धि नित्यस्थिरं नयनयोरनयो रधिश्रि ॥३॥

यास्यां कटाक्षित इह प्रतिकूल दैवोप्यत्यन्तपामर जनोऽपि गुणेतरोऽपि ।
सद्यःशिवं समधिगच्छति चक्षुषी ते प्रातःस्मरामि विमले हृदि भूमिजायाः ॥४॥

यस्याः समुत्थितमथोशुचि हास्यमास्येसद्यः प्रकाशयति मे तिमिरार्ति गूढम् ।
गेहं मनश्च परम द्वय मर्हणीयं तां भूमिजां प्रतिदिनं हृदि चिन्तयामि ॥५॥

आशां समर्पयति यन्मनसे सुखाढ्या मुल्लासयत्यहरहर्हृदयश्च यन्मे ।
तद्भूमिजा वदन निःसृतहास्य गाङ्ग नीरं मदन्तर विकारमयं करोति ॥६॥

यस्यैव सेवनविधौ हरिरीश्वरो वा ब्रह्मादयोऽपि मुनयो नहि भाग्यवन्तं ।
तत्त्वत्पदाब्जयुगलं श्रयतोऽद्य देवि भाग्यस्य मे प्रतिभटो भुवि दुर्लभोऽस्ति ॥७॥

नो वैभवेन च मनोभवजे सुखे वा नो वा सुरेन्द्र भवने भवनेऽथ विष्णोः ।
नान्यत्र कुत्रचिदपि श्रयते स्थितिं ते पादाब्जवन्दनविधौ रमते मनो मे ॥८॥

स्पर्शानुभूतिमपि यस्य सदैव लक्ष्मीनाथोऽपि दुर्लभतमां मनुते स एव ।
कारुण्य सद्रस निधिर्बलजातिशायी हस्तः कृतार्थयति मामिह भूमिजायाः ॥९॥

मातेव रक्षति सदा सदया च या मां संस्थाप्य बाहु युगलाक्षर यन्त्र तन्त्रे ।
तस्या विहेय गुणजात दरिद्र तन्व्या पादौश्रयामि सुखदाविह भूमिजायाः ॥१०॥

यत्पाद पद्म मधुलम्पटतामुपेत्य श्रीमान्हरिर्भवति माधव नामधेयः ।
अस्वामनन्तमति-शक्ति बलामहं तां श्रद्धानतेन शिरसा शरणं करोमि ॥११॥

कस्या अपि महादेव्याः सर्वमिद सहिष्णवः जयन्तुजगदाराध्यातपाद पाथोजरेणवः ॥१२॥

शारदाब्ज पदद्वन्द ज्योति जागर्तिकस्यचित्। वातकामादि कालुष्ये मदीयेचित्तचत्वरे ॥१३॥

इति श्रीसर्वतन्त्र स्वतन्त्र वेदोपनिषद् भाष्यकार सारस्वत सार्वभौम पण्डितराज
स्वामि श्रीभगवदाचार्यं विरचितम्
श्रीभूमिजा प्रातः स्मरण स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

—:❀:—

❀ श्रीमैथिलीप्राणवल्लभाय नमः ❀

॥ श्रीभूमिजा--प्रातः स्मरण स्तोत्रम् ॥

भवसागर को सुखाने के लिये, हृदय कमल को खिलाने के लिये तथा ज्ञान का उदय करने के लिये, उदार हृदय श्रीभूमिनन्दिनी के अद्वितीय दोनों श्री चरण कमलों का मैं प्रातः काल में स्मरण करता हूं ॥ १ ॥ जिसकी अखण्ड ज्योति प्रभा का समूह मेरे अन्तः करण के अज्ञान रूपी छाये हुए अन्धकार का विनाश कर मेरे मनको नित्य ही निर्मल बनाते है ऐसे श्री किशोरी जू के चरणों के सुन्दर नखों का प्रातः काल में मैं हृदय में ध्यान करता हूं ॥२॥ श्री शिव-शारदा तथा शरद के चन्द्रमा अदि के गर्व का हरण करने वाला, बिम्बा फल के समान लाल अधरों से सुशोभित, परम सुकोमल, पवित्र हास्य से सँयुक्त, कमल पुष्प के समान सुगन्धित तथा नयनों की नित्य स्थिर श्रीलक्ष्मी शोभा सम्पन्न श्री भूमिजा के मुखारविन्द का मैं प्रातः काल में स्मरण करता हूं ॥ ३ ॥ जिनकी कृपा कटाक्ष पड़ते ही अत्यन्त पामरजन जिस पर दैव विधाता भी सर्वथा प्रतिकूल ही हैं, तथा सर्व गुण रहित है वह भी तुरन्त परम कल्याण प्राप्त कर लेता है, ऐसी श्री किशोरी जी के करुणामय बिमल नेत्रों का प्रातः काल मैं स्मरण करता हूं ॥ ४ ॥ जिसके मुखचन्द्र से प्रकट हुआ पवित्र हास्य मेरे अन्धकार मय हृदय में तुरन्त दिव्य प्रकाश फैला देता है तथा जो मेरे मन का परम पूज्य अद्वितीय घर (निवास स्थान) है उन श्रीभूमि तनया जू का प्रातः काल में मैं प्रति दिन चिन्तन करता हूँ ॥ ५ ॥ जो हमारे मन में सुख से भरी हुई आशाओं को पूर्ण करता है तथा मेरे हृदय को रात दिन आनन्द उल्लास से भरता रहता है, वह श्रीभूमि नन्दिनी के मुख से निकला हुआ हास्य रूपी गङ्गाजल मेरे अन्तर के विकारों का निरन्तर विनाश करता रहे ॥ ६ ॥ जिसकी सेवा का परम लाभ प्राप्त करने के लिए ब्रह्मा-बिष्णु-महेश्वर तथा महर्षिगण भी भाग्यशाली नहीं हो सके हैं उन आपके श्री युगल चरणों का आश्रय हे देवि ! मुझे आपकी कृपा से अनायास ही हो गया है तब मेरे भाग्य की समानता करने वाला इस भूतल में अवश्य दुर्लभ ही है ॥ ७ ॥ हे माँ मैथिली जू । जब से मेरा मन आपके चरण कमलों की वन्दना में लगा है तब से न तो वैभव की इच्छा होती है, न काम वासना का सुख चाहता है, न सुरेन्द्र भवन की तथा न साक्षात् श्री विष्णु लोक की ही चाहना होती है । वह अन्यत्र कहीं भी स्थिर होना

चाहता ही नहीं है ॥ ८ ॥ जिस कर कलल का स्पर्श श्री लक्ष्मी नाथ भी सर्वदा दुर्लभ ही मानते हैं वह करुणा के रस से भरा समुद्र कमल पुष्प से भी अधिक सुकोमल है श्रीभूमिजा का हस्त कमल आज यहां कृतार्थ कर रहा हैं ॥ ९ ॥ जो माता की भांति सदैव मेरा रक्षण करती हैं, जो अपने दोनों करुणामय भुजाओं में यन्त्र तन्त्र की भांति मुझे उठाकर लाड़ प्यार से दुलार करती है उस समस्त ही दुर्गुणों से दरिद्र (रहित) श्री भूमिजाया के सुख प्रद दोनों चरणों का मैं यहां आश्रय ग्रहण करता हूं ॥ १० ॥ जिसके चरण कमलों के मधुरस पान करने में लम्पट श्रीमान् हरिका 'माधव' नामप्रद हो गया उस अनन्त बल से भरी हुई अम्बा श्री जानकी जी के चरणों में अत्यन्त श्रद्धा से मस्तक नवाकर मैं शरणागति स्वीकार करता हूं ॥ ११ ॥ सभी प्रकार के भेदों को सहन करने वाली जगत् विख्यात किसी महादेवी के चरण कमलों की रज सदा विजयी हो ॥ १२ ॥ शरद ऋतु के खिले हुए कमल की ज्योति के समान प्रकाशित किसी के श्रीयुगल चरण कमल मेरे काम कलुषित हृदय रूपी मन्दिर में सदैव जागरूक रहते हैं ॥ १३ ॥

"यह सर्वतन्त्र स्वतन्त्र वेदोपनिषद् भाष्यकार सारस्वत सार्वभौम पण्डितराज जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य स्वामी श्री भगवदाचार्य जी महाराज प्रणीत श्री भूमिजा प्रातः स्मरण स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

—: श्री राघववल्लभाजू का ध्यान :—

ध्यायेद्राघववल्लभां जनकजां चन्द्राननां चिन्मयीं,
सर्वाङ्गेषु विभूषितां वरतरैर्वस्त्रैस्तथा भूषणैः ।
नानारत्नसमुत्कहाटकमयैर्विद्युन्निभां सुस्मितां,
स्वानां सर्वपदार्थदां परतरां शक्तिसुरेशैर्नुताम् ॥ ५१ ॥
सुवर्णाभाम्बुजकरां रामालोकन तत्पराम् ।
सीतां भगवतीं ध्याये सर्वकामार्थ सिद्धये ॥ ५२ ॥

श्री जनकनन्दिनी-चन्द्रमुखी सच्चिदानन्द विग्रह । सर्वाङ्ग में सर्वोत्तम वस्त्र भूषणों से अलंकृत सोना तथा रत्नों से जटित बिजली के समान चमकते हुए अलङ्कारों से विभूषित, अपने भक्तजनों को सबकुछ देने वाली सर्वदेव वन्दिता परात्परा शक्ति श्री राघववल्लभा जू का मैं ध्यान करता हूं ॥ ५१ ॥ स्वर्ग के समान चमकती हुई गौर सुन्दरी, कर में कमल पुष्प लिये हुए श्रीरामजी की मुखछवि निरखने में निमग्न भगवती श्री सीता जी का अपने सभी शुभ मनोरथों की पूर्ति के लिये ध्यान करता है ॥ ५२ ॥

—श्रीसीताराम कैंकर्यरत्नमञ्जूषा ॥ पृष्ठ १३ ॥

।। अथ प्रातःकालीन श्रीसीता स्तवः ।।

—:‌‌‌॥०॥:—

प्रातर्नमामि रघुनायक वल्लभायाः पद्माङ्कुशादिललितं हि पदारविन्दम् ।
दिव्यं महामुनिमनो भ्रमराभि सेव्यं पापापहं सुखद मुक्तिकरं प्रणामात् ।।१।।

प्रातर्भजामि मिथिलेश सुताकराब्जं रक्तं सुरम्य विमलं शुचिकोमलञ्च ।
आपद्गताऽभयकरं भयदं भयाना मालम्बनं च वरदं पदमाश्रितानाम् ।।२।।

प्रातःस्मरामि वसुधातनुजा मुखाब्जं हास्यश्रिया विलसितं सुविशालनेत्रम् ।
मञ्जुस्वनस्य जनकं जनमोद हेतुं बिम्बाधरं रुचिर कुण्डल रम्यगण्डम् ।।३।।

प्रातःस्मरामि वसुधातनयां च दिव्यां विद्युल्लताद्युतिमतीं सुखमानिधानाम् ।
दिव्यैर्विभूषणपटैः सुविभूषिताङ्गीं ध्येयामनुग्रहमयीं मुनिभिः सुमुक्त्यै ।।४।।

प्रातर्वदामि मिथिलेश्वर कन्यकायाः सीतेतिनाम निखिलाघहरं जनानाम् ।
प्रेम्णा सकृच्च कथितं यमयातनाहृत् मुक्तिप्रदं सकल सौख्यकरं पवित्रम् ।।५।।

वैष्णव भाष्यकार श्रीवैष्णवाचार्य निर्मितम् ।
सीतास्तवमधीयाना यान्तु सीता प्रसन्नताम् ।।

।। इति प्रातःकालीन श्रीसीतास्तवः सम्पूर्णः ।।

कमल अंकुशादि ललित चिन्हों से अलंकृत, दिव्य महा मुनीन्द्रों के मन रूपी भ्रमरों से सुसेवित-पाप हारक परम सुखप्रद प्रणाम करने से मुक्ति प्रदायक श्रीरघुनाथजी की प्राण-वल्लभा के चरणारविन्दों को मैं प्रातः काल में उठकर प्रणाम करता हूं ।। १ ।। अत्यन्त सु-कोमल, लाल कमल के समान अरुण-पवित्र तथा परम निर्मल आपत्ति में पड़े हुए को निर्भय करने वाले भय को भी भयभीत करें ऐसे प्रतापी भक्तों का परम अवलम्ब, चरणाश्रितों को वरदान देने वाले श्री मिथिलेश दुलारीजू के कर कमलों का प्रातः काल में मैं भजन करता हूँ ।। २ ।।

प्रातः काल में मैं श्रीवसुधा (पृथिवी) कुमारी श्री जानकी जी के मन्द हास्य लक्ष्मी से सुशोभित सुविशाल नयनों से अलंकृत मधुर प्रियस्वर से भक्तजनों को परमानन्द उत्पन्न करने वाले बिम्बाफल के समान अरुण ओष्ठ वाले रुचिर कुण्डलों से सुशोभित सुरम्य कपोलों वाले मुखारविन्द का स्मरण करता हूं ।। ३ ।। प्रातः काल में भूमिनन्दिनी जी का जो दिव्य स्वरूपा बिजली की लता के समान द्युतिमति सुषमा की निधान दिव्य बिभूषण तथा वस्त्रों से

अलंकृत अनुग्रह स्वरूपिणी मुनिजनों द्वारा मुक्ति पद प्राप्ति के लिये सर्वदा ध्येय श्री सीता जी का मैं स्मरण करता हूं ॥ ४ ॥ जो मनुष्यों के सम्पूर्ण पापों का विनाश करने वाला है। जो प्रेम पूर्वक एक वार भी उच्चारण करने से यम यातना को नष्ट कर देने वाला है। जो परम पवित्र है, मुक्ति प्रदायक हैं तथा सकल सुख प्रदान करने वाला है ऐसा श्री मिथिलेश राजकुमारी जू के नाम का मैं प्राप्तःकाल में कीर्तन करता हूं ॥ ५ ॥

"श्रीवैष्णव भाष्यकार श्री वैष्णवाचार्य जी महाराज रचित यह प्रातः कालीन श्रीसीता स्तवः का पाठ करेंगे वे श्रीसीताजी की कृपा प्रसन्नता को प्राप्त करेंगे।"

"इति श्री प्रातः कालीन श्रीसीतास्तवः सम्पूर्णः।"

॥ श्रीरत्नसिंहासनीय श्रीसीतापञ्चायतन स्तोत्रम् ॥

—❀—

१—वन्दे विदेहतनयापदपुण्डरीकं कैशोरसौरभसमाहृतयोगिचित्तम् ।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं सम्मानशालि परिपीत परागपुञ्जम् ॥ १ ॥

२—दुर्वादल द्युतितनुं तरुणाब्ज नेत्रं हेमाम्बरांबर विभूषण भूषिताङ्गम् ।
कन्दर्पकोटि कमनीय किशोर मूर्तिं पूर्तिं मनोरथ भुवां भजजानकीशम् ॥ २ ॥

३—कर्पूर गौर वपुषं शरदिन्दु वक्त्रं नीलाम्बरं सरसिजाक्षमनन्तमाद्यम् ।
वामोर्मिलं ललितभूषण भूषिताङ्गं रामानुजं भजमनोऽभयदं निजानाम् ॥ ३ ॥

४—विश्वम्भरं भरतमम्बुजपत्र नेत्रं नीलाम्बुदाम वपुषं कनकाभ वस्त्रम् ।
भक्ताऽभयप्रदमनेक विभूषणाढ्यं जाड्यापहं सुभजतां भजमाण्डवीशम् ॥ ४ ॥

५—कैशोर मूर्तिमनुरूपमनूपरूपं पञ्चेषु सुन्दरतनुं श्रुतिकीर्तिकान्तम् ।
गौरं सुवर्ण मणिभूषणमम्बुजाक्षं पीताम्बरं भजमनोऽखिल सिद्धिहेतुम् ॥ ५ ॥

६—उद्यद्दिनेशकर रञ्जित कञ्जवक्त्रं पिङ्गारुणाब्ज नयनं नयनाभिरामम् ।
सौवर्ण वर्ण वसनं रत्नादि भूषं भक्तेष्ट कामदतरुं भज वायुसूनुम् ॥ ६ ॥

७—श्रीसीतापञ्चायतन स्तोत्रं प्रातःकाले पठेत्तुयः । इहलोके परेवाऽपि तस्य किञ्चिन्नदुर्लभम् ॥७॥

॥ इति सुन्दरीतन्त्रोक्तं श्रीरत्नसिंहासनीय श्रीसीतापञ्चायतन स्तोत्रम् ॥

श्रीरत्नसिंहासनीय श्रीसीतापंचायतन स्तोत्रम्

किशोर अवस्था की सुगन्ध से भरपूर, योगिजनों के चित्त को हरण करने वाले, त्रिविधताप को नष्ट करने वाले, परमहंस मुनिजनों से सुसेव्य, सम्मान सम्पन्न पराग पुञ्ज से शोभित, श्रीविदेह राजकुमारी जू के श्री चरण कमलों को मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥ दूर्वादिल के समान द्युति सम्पन्न शरीर वाले, नवीन कमल के खिले हुए पुष्प के समान नेत्र वाले, पीले स्वर्ण के समान पीताम्बर धारी, श्रेष्ठ भूषणों से अलंकृत, करोड़ों कामदेव से अधिक सुन्दर तथा संसार के मनोरथों की पूर्ति करने वाले श्रीजानकी पति का भजन करो ॥ २ ॥ कपूर के समान गौरवर्ण शरद् चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखचन्द्र वाले, नीलाम्बर धारी, कमल नयन, अनन्त आद्य पुरुष श्री उर्मिला जी वामाङ्ग में जिनके सुशोभित हैं ऐसे सकल विभूषण विभूषित; अपने भक्तों को निर्भयता प्रदान करने वाले श्रीरामानुज (लक्ष्मणजी) का हे मन ! सर्वदा भजन कर ॥ ३ ॥ कमल नयन विश्वम्भर नीलाम्बुज श्यामल कोमलाङ्ग स्वर्ण के समान पीले वस्त्र पहिने अनेक विभूषणों से अलंकृत; भक्तों को अभय करने वाले जडता हरण करने वाले श्री माण्डवी पति भरतजी का हे मन ! भजन कर ॥ ४ ॥ किशोर मूर्ति-अनुरूप सुन्दर स्वरूप वाले-कामदेव के समान सुन्दर शरीर वाले, गौराङ्ग-मणिभूषण भूषित, पीताम्बरधारी-श्रीश्रुतिकीर्तिकान्त-सम्पूर्ण सिद्धि देने वाले श्री शत्रुघ्न जी का हे मन ! भजन कर ॥ ५ ॥ उदित होते हुए अरुण सूर्य के समान लाल मुख कमल वाले, पीले कमल के समान नेत्र वाले, नयनाभिराम हेमवर्ण-वस्त्र रत्नालंकृत भक्तों के अभिष्ट को पूर्ण करने वाले भक्त कल्पद्रुम, श्री वायु नन्दन श्रीहनुमान जी का हे मन ! भजन कर ॥ ६ ॥ यह श्रीसीता पञ्चायतन स्तोत्र जो कोई भक्ति पूर्वक पाठ करेगा उसको इस लोक में तथा परलोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीरत्नसिंहासन के ध्यान पटल का श्रीसीता पञ्चायतनन स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीसीता समाश्रयणम् ॥

सीता मे शरणं विदेहतनया सीतां भजे सुप्रियं,
संरक्ष्योऽस्मि च सीतया जगति सीतायै नमः सर्वदा ।
सीतायाः ननु का परा श्रुतिषु सीतायाः प्रपन्नोऽस्म्यहं,
सीतायां रतिरस्तु मे शुभतरा सीते ! प्रसन्ना भव ॥ १ ॥

॥ इति श्रीसीता समाश्रयण स्तोत्रम् ॥

॥ श्रीसीतापंचायतन स्तोत्र अन्तःपुरीयम् ॥

वन्दे विदेहतनया पदपुण्डरीकं, कैशोर सौरभ समाहृत योगिचित्तम् ।
हन्तुं त्रिताप मनिशं मुनिहंससेव्यं, सन्मान शालि परिपीत परागपुञ्जम् ॥१॥
दुर्वादलद्युतितनुं तरुणाब्ज नेत्रं, हेमाम्बराम्बर विभूषण भूषिताङ्गम् ।
कन्दर्पकोटि कमनीयकिशोर मूर्त्तिं, पूर्त्तिं मनोरथभुवां भज जानकीशम् ॥२॥
सल्लक्षणैर्लक्षित दिव्यवैभवां, प्रभाजमानां द्युति दिव्य रूपाम् ।
भजेऽनिशं श्रीभरतस्य भामिनीं, सखीगणैरर्चित पाद पङ्कजाम् ॥३॥
सर्वेश्वरीं सकलसौभगतानुमूलं, सौन्दर्यसार शरदिन्दुनिभां मनोहराम् ।
श्रीलक्ष्मणस्याङ्क तले निविष्टां, तामुर्मिलां नौमि मनो वचोभिः ॥५॥
श्रीराघवेन्द्र कुलमण्डन तत्वसारां; श्रीमंसुधांशु वदनाश्रित सत्वसाराम् ।
सद्धर्मरक्षण वरिष्ठपद प्रदायिनीं; वन्दे रिपुघ्नवनितां श्रुतिकीर्तिनामाम् ॥६॥
साकेतपत्तन विलास विनोदशीलां, सौदामिनी शतसहस्र विनिन्द्यशोभाम् ।
श्रीमैथिलेन्द्रनगरी जनपूर्णसिन्धौ, प्रोल्लासदां हि किल चन्द्रकलां नमामि ॥७॥
नमामिसीतां जनकप्रसूतां नमामि रामानुज वल्लभोर्मिलाम् ॥
नमामि श्रीकैकेयि नन्दनप्रियां शत्रुघ्नपत्निं श्रुतिकीर्तिमाश्रये ॥८॥
जानकीजीवनंवन्दे-मांडवी प्राण वल्लभम् । उर्मिला रमणंवन्दे कीर्तिकान्तं नमोऽस्तुते ॥९॥
सीतापञ्चायतनस्तोत्रं सीताभक्ति प्रदायकम् । पठतां शृण्वतांसद्यः सर्वपापविनाशकम् ॥१०॥

॥ इति श्रीप्रेमनिधिसंकलितं अन्तःपुरीय श्रीसीतापञ्चायतनस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीसीतापञ्चायतन स्तोत्र अन्तःपुरीयम् ॥

श्रीविदेहनन्दिनीजू के श्रीचरण कमलों की मैं वन्दना करता हूँ । जो किशोर अवस्था की सुगन्ध से सुशोभित हैं, जो योगियों के पावन मन को हरण करने वाले हैं, जो त्रिविध ताप का निरन्तर शमन करते हैं, जिनकी मुनिगण राजहंस सेवा करते हैं, जो सभी के सम्मान रूपी पीत पराग पुञ्ज से सम्पन्न है । उन श्रीकिशोरीजू के चरणों में प्रणाम है ॥ १ ॥ दूर्वा-दल के समान जिनके श्रीअङ्ग की श्याम कान्ति है । नवीन खिले हुए कमल के समान नेत्र हैं । सोने के समान पीले पीताम्बर तथा अनेकों विभूषणों से जिनका दिव्य मङ्गल शरीर सुशोभित है । करोड़ों कामदेव से भी जिनकी कमनीय किशोर सुन्दर मूर्ति है । जो संसार के सभी मनोरथों को पूर्ति करनेवाले हैं, ऐसे श्री जानकीपति श्रीराम हे मन ! का भजन करो ॥२॥ सुन्दर लक्षणों से जिनका दिव्य वैभव सुलक्षित होता है, जिनकी कान्ति अत्यन्त दिव्य स्वरूप

में प्रकाशित हो रही है। सखीगणों द्वारा जिनके चरण कमल सदैव सुपूजित होते रहते हैं, ऐसी श्री भरत जी की भामिनी श्री माण्डवी जी का निरन्तर मैं भजन करता हूँ ॥ ३ ॥ जो सर्वेश्वरी हैं, जो सकल अनुकूल सौभाग्य की जड़ है, जो सौन्दर्यसार स्वरूपिणी हैं, जो शरद चन्द्रमा की भांति शुभमनोहरा हैं। जो श्री लक्ष्मण के अङ्क में सप्रेम विराजमान हैं उन श्री उर्मिला जू को मैं तन-मन-वचन से प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥ जो श्री राघवेन्द्र के कुल का मण्डन शृङ्गार करने वाली हैं, जो परम तत्त्व की सार स्वरूपा हैं। श्रीमान् सुधांशु (चन्द्र) के सत्व का सार स्वरूप सौन्दर्य से सम्पन्न हैं। जो सद्धर्म की रक्षा करने में सर्वश्रेष्ठ शिरोमणि सज्जन हैं, उनको अभिष्ट पद प्रदायिनी हैं, ऐसी श्रीशत्रुघ्नजी की प्राणप्रिया जिनका नाम श्री श्रुतिकीर्ति हैं उनको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥ श्री साकेत नगर के विनोद तथा विलास को निरन्तर बढ़ाते रहना ही जिनका शील स्वभाव है। हजारों बिजलियों की कान्ति को भी निन्दित करने वाली जिनके दिव्य अङ्ग की शोभा है, श्री मिथिलेन्द्र नगरी के प्रेमीजन पूर्ण समुद्र को परमोल्लास प्रदान कर जो सदैव लहराती रहती हैं, उन सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला जू को मैं नमस्कार करता हूं ॥ ६ ॥ श्री जनकनन्दिनी सीता जी को प्रणाम करता हूं। श्री रामानुज की प्राणवल्लभा उर्मिला जी को प्रणाम करता हूं। श्री कैकईनन्दन श्रीभरत जी की प्राणप्रिया माण्डवी जू को नमस्कार करता हूं। श्री शत्रुघ्न जी की पत्नी श्रीश्रुतिकीर्ति जी को मैं प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥ श्री जानकी जीवन श्रीरामजी की बन्दना करता हूं—श्री माण्डवी जी के प्राणवल्लभ श्री भरत जी की बन्दना करता हूं। श्री उर्मिलाकान्त श्रीलक्ष्मणजी की बन्दना करता हूं। हे श्री श्रुतिकीर्ति कान्त श्री शत्रुघ्न जी आपको नमस्कार है ॥ ८ ॥ यह श्रीसीता पञ्चायन स्तोत्र श्रीसीता चरणों में भक्ति प्रदान करने वाला है, इसका भक्ति पूर्वक पठन-श्रवण करने वालों का सर्वपाप नष्ट कर देता है ॥ ९ ॥

"यह श्रीप्रेमनिधि सङ्कलित "श्रीसीता पञ्चायतन स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ॥"

—:※:—

श्रीसीता कान्त कान्ति दर्शनम्

त्वदीया या कान्तिर्जनकपुर वामाभिलषिता;
जगद्वन्द्याऽनिन्द्या जनक तनया या हृदिगता।
यतीनां सर्वस्वं नव नव घना भाति ललिता,
सकृद्रामस्वामिन् ! जगदधिपते गोचरयताम् ॥ १ ॥

—श्री भगवदाचार्य स्वामिनः।

॥ अथ श्रीसीताराम चरणचिह्न पञ्चकस्तोत्रम् ॥

श्रीराम दक्षिण पदस्थ मथोर्ध्व रेखा, स्वस्त्यष्टकोण कमला हल मौशलं च ।
शेषं शराम्बर सरोजरथं सवज्रं, ध्यायेद्यवं सुरतरुं जनकामपूरम् ॥१॥
भूयोऽङ्कुशध्वज किरीटयुतं सचक्रं सिंहासनं च ललितं यमदण्डचिन्हम् ।
छत्रं सचामरनरं जयमालमेतद्, वेदाक्षिसंख्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥२॥
वामे पदे स्थितमहं सरयूं सुतीर्थं, गोपाद भूमि घटशोभितमुत्पताकम् ।
जम्बूफलार्घं शशि शंख षडस्रयुक्तं, त्रैकोणकं च गदया सहजीवमीडे ॥३॥
बिन्दुं च शक्त्यमृतकुण्ड वलित्रयं च, मीनं संपूर्णशशि वीणमहं भजामि ।
वंशी शरासन युतेषुधिराजहंस सीतापतेः श्रुतिनुतश्च सचन्द्रिकश्च ॥४॥
सीतांघ्रिपंकजमिदं हि विपर्ययेण, वामेतरश्च सुधियः परिभावयन्तु ।
चिन्हानि चाष्टजलधिप्रमितानिनित्यं, ध्यायञ्जनो रघुपतेर्लभतेसुधाम ॥५॥
यः श्लोक पञ्चकमिदं मनुजः पठेद्ध्यात्वा हृदि प्रतिदिनं रघुनन्दनांघ्रीम् ।
हित्वा बहूनि दुरितानि पुरार्जितानि, प्राप्नोत्यभीष्ट धनधर्ममथापवर्गम् ॥६॥

॥ इति श्रीसीताराम चरणचिन्ह पञ्चक सम्पूर्णम् ॥

—❀०❀—

श्रीरामजी के दाहिने चरण में-ऊर्ध्व रेखा-स्वस्तिक-अष्टकोण-लक्ष्मी-हल-मूशल-शेष-बाण-वस्त्र-कमल-रथ-वज्र-यव तथा ध्याताजनकी मनकामना पूर्ण करनेवाले कल्पवृक्ष का ध्यान करे ॥ १ ॥ पुनः अंकुश-ध्वज-किरीट-चक्र-ललित सिंहासन यमदण्ड छत्र-चमर-पुरुष तथा जयमाला-इन चौबीश चिन्हों को मैं मन में निरन्तर स्मरण करता हूँ ॥ २ ॥ बाएं चरण में विराजमान-सुन्दर श्रीसरयूतीर्थ-गोपाद-पृथिवी-कलश-तथा सुशोभित पताका-जामुन का फल-ऊर्ध्वचन्द्र-शंख-षट्कोण-त्रिकोण-गदा तथा जीव के चिन्ह को मैं पूजता हूँ ॥ ३ ॥ बिन्दु शक्ति-अमृतकुण्ड-त्रिवली-मछली-पूर्ण चन्द्रमा-तथा वीणा के चिन्ह का मैं भजन करता हूँ । वंशी-धनुष-राजहंस तथा चन्द्रिका ये चिन्ह वेद वन्दनीय श्रीसीतापति के चरण में है । ॥ ४ ॥ जो चिह्न श्रीरामजी के दाहिने चरण में हैं वे चिन्ह श्रीकिशोरीजी के बाएं चरण में है तथा जो चिह्न श्रीरामजी के बायें चरण में है वे चिन्ह श्रीकिशोरीजू के दाहिने चरण में है । सुबुद्धिवाले भक्तजनों को ऐसा विचार कर श्रीयुगल सरकार के चरणों का ध्यान करना चाहिये । ये ४८ अड़तालीस चिन्हों का ध्यान करने वाला मनुष्य श्रीरघुनाथजी के दिव्यधाम को प्राप्त होता है ॥ ५ ॥ ये पांच श्लोकों का जो मनुष्य प्रतिदिन श्रीसीतारामजी के चरणों

का हृदय में ध्यान कर पाठ करता है वह बहुत से जन्म जन्मान्तरों के पूर्वार्जित पापों को नष्टकर अपना अभीष्ट मनोरथ पूर्ण करता है, उसको अपनी इच्छित धन-धर्मादि सब वस्तुएं प्राप्त होती है ॥ ६ ॥

"यह श्रीसीताराम चरणचिन्ह पञ्चकस्तोत्र का भाषानुवाद पूर्ण हुआ ॥"

—:※:—

श्रीसीतारामजी की एकरूपता

[श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण]

अस्या देव्या यथारूपमङ्गप्रत्यङ्ग सौष्ठवम् । रामस्य च यथारूपं तस्येयमसितेक्षणा ॥

सुन्दरकाण्ड १५-५१

तुल्यशीलवयोवृत्तां तुल्याभिजनलक्षणाम् । राघवोऽर्हति वैदेहीं तं चेयमसितेक्षणा ॥

सुन्दरकाण्ड १६-५

श्री हनुमान जी ने अपने मन में कहा, श्री राम जी का जैसा स्वरूप है ठीक वैसा ही इस देवी के अङ्ग प्रत्यङ्ग का सौष्ठव (सुघडता) है अतः यही श्याम लोचनी सीता है । शील-स्वभाव-अवस्था-आचरण तथा आत्मीय भावना से श्री राघव के योग्य श्रीविदेह राजकुमारी हैं तथा इन श्याम नयनी श्री जानकी जी के योग्य श्रीराघव ही हैं ।

अनन्या राघवेणाऽहं भास्करेण यथा प्रभा ॥
अहमौपयिकी भार्या तस्यैव च धरापतेः । व्रतस्नातस्य विद्येव विप्रस्य विदितात्मनः ॥

सुन्दरकाण्ड २१-१५-७

श्री जानकी जी ने रावण से कहा—मैं श्रीराम से वैसे ही अभिन्न हूँ जैसे सूर्य से उसकी प्रभा । मैं उन्हीं पृथिवीपति श्रीराम की सुयोग्य भार्या हूँ जैसे विद्या निष्णात ब्राह्मण की विद्या उसका गौरव है उसी प्रकार सर्वलोक विश्रुत श्रीराम की मैं प्राण वल्लभा हूं ।

अनन्या हि मया सीता भास्करेण प्रभा यथा ।

भगवान् ने कहा—मुझसे सीता उसी तरह अभिन्न है जिस तरह सूर्य से उसकी प्रभा अभिन्न है ।

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥
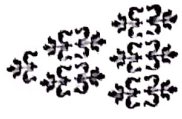
अथ श्रीसीताकवचम्
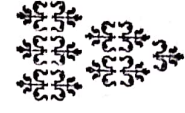
॥ श्रीलक्ष्मण उवाच ॥

कृताञ्जलिपुटो भूत्वा नत्वा शिरसि लक्ष्मणः । उवाचपरमंदिव्यं सीतायाः कवचं परम् ॥१॥
त्वत्तः श्रोतव्यमिच्छामि त्रैलोक्यमोहनं महत् । कथयस्व रघुश्रेष्ठ दिव्यंकवचमुत्तमम् ॥२॥

॥ श्रीराम उवाच ॥

शृणुवत्स महादिव्यं महामङ्गलदायकम् । महासिद्धिकरं पुंसां महासंपत्तिदायकम् ॥३॥
त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं परमाद्भुतम् । यः पठेत्सततं भक्त्या अपुत्रः पुत्रवान्भवेत् ॥४॥
अष्टाक्षरमहामन्त्रं पठेत्कवच संयुतम् । ततः सिद्धिमवाप्नोति अकीलमतुलं वरम् ॥५॥

ॐ अस्य श्रीसीतात्रैलोक्यमोहनकवचमन्त्रस्य श्रीरामऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीसीतादेवता श्रीसीताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

नीलाम्भोजदलाभिरामनयनां नीलाम्बरालंकृतां गौरांगींशरदिन्दुसुन्दरमुखीं विस्मेरबिम्बाधराम् ॥
कारुण्यामृतवर्षिणीं हरिहरब्रह्मादिभिर्वन्दितां ध्यायेद्भक्तजनेप्सितार्थ फलदां रामप्रियां जानकीम् ॥

ॐशिरोमे भूभवापातु ललाटे जनकात्मजा । नेत्रेपातु कुजा चैव वैदेही श्रुतिरक्षिणी ॥२॥
जिह्वां मे जानकीपातु ग्रीवां जनकनन्दिनी । स्कन्धौ पातु महामाया भुजौपातु सुलोचना ॥३॥
करौपातु सदासीता उरू मे राम पार्श्वगा । मध्यं पातु च पद्माक्षी नाभिं मे वनवासिनी ॥४॥
कटिंयोगेश्वरी पातु सक्थिनी मृगध्वंसिनी । ऊरू मे उर्वसी पातु जानुनी भिल्लिमोक्षिणी ॥५॥
जङ्घे वालिप्रमथिनी द्वौपादौ रावणान्तिनी । सर्वाङ्गं पातु स्वच्छाङ्गीं सदा पातु प्रबोधिनी ॥६॥
पातुविभीषण श्रीदा सद्यश्चैव दिशो दश । सीतायाः कवचं ह्येतद् देवानामपि दुर्लभम् ॥७॥
त्रैलोक्यमोहनं नाम त्रैलोक्यधनदायकम् । यः पठेत्तु ममाग्रे वै पूजाकाले प्रयत्नतः ॥८॥
सौमित्रे च शृणुष्व त्वं ददामि वाञ्छितं फलम् ॥

॥ अष्टाक्षर मन्त्रः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं सीतायै नमः ॥

अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं सर्वसिद्धि प्रदायकम् । वटवृक्षतटे पाठे अष्टादशशतेन च ॥

॥ पट्विप्रकृते जाप्यम् ॥१८००॥ त्रिशतेन पृथक्-पृथक् ॥ ९ ॥

एवं नित्यं कृते चैव वर्षपर्य्यन्त मानवः । क्षीराज्यशर्करा हव्यं गोधूम हृदयं पचेत् ॥१०॥

भोज्यमाहार एकश्च भूमिशायी जितेन्द्रियः । ब्राह्मणे दक्षिणांदत्वा नानालंकारवस्त्रदः ॥११॥

स्वधर्मनिरतः प्राणी अहिंसा सत्यवाक् पटुः । एकचित्तो भवेत्तस्य कवचं स्फूर्त्तिसंयुतः ॥१२॥

अपुत्रो लभते पुत्रं सत्यं श्रीराम भाषितम् । अयुतमेक पाठे च पुरश्चर्य्यं प्रस्तुतिकम् ॥१३॥

साक्षात्कल्पतरुः सीता ध्यायते यदि लक्ष्मण । वाञ्छितं वरदासद्यः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१४॥

॥ इति श्रीरुद्रयामल तन्त्रे श्रीराम लक्ष्मण सम्वादे श्रीरामविरचितं सीताकवचं सम्पूर्णम् ॥

—: श्रीसीता कवचम् :—

श्री लक्ष्मण जी बोले :—

हाथ जोड़कर शिर नवाकर श्रीलक्ष्मणजी ने कहा कि--हे रघुकुलशिरोमणि ! श्रीसीता जी का "त्रैलोक्य मोहन कवच" मैं आपके श्री मुख से सुनना चाहता हूँ । आप कृपा करके परमदिव्य तथा परमोत्तम श्रीसीताजी के कवच का वर्णन करें ॥ १-२ ॥

श्रीरामजी ने कहा:—

हे वत्स ! महामङ्गल दायक महादिव्य, महान् सिद्धि प्रदायक "श्रीसीता त्रैलोक्य मोहन कवच" परम अद्भुत है, इसका सतत पाठ करने से अपुत्र को भी पुत्रलाभ होता है । जो श्री जानकी जी के अष्टाक्षर महामन्त्र को इस कवच का पाठ करके जपता है वह अतुल सिद्धि प्राप्त करता है ॥ ३-४-५ ॥

अथ सङ्कल्प:—

श्रीसीता त्रैलोक्य मोहन कवच मन्त्र के श्री रामचन्द्र जी ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, श्रीसीता देवता हैं, श्री जानकी जी की प्रसन्नता कृपा प्राप्ति ही इसका विनियोग है ॥

अथ ध्यानम्:—

नील कमल पुष्प के दल के समान परम सुन्दर नयन जिनके हैं--जो नील साड़ी पहने हुई हैं, करुणामृत बरसाती रहती हैं, जिनके चरणों की ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर भी वन्दना करते हैं, गौराङ्गी शरद्पूर्णिमा के समान सुन्दर मुखवाली तथा बिम्बाफल के समान अरुण (लाल) जिनके अधर (ओठ) हैं, ऐसी भक्तजनों के अभीष्ट मनोरथ को पूर्ण करने वाली श्रीराम प्रिया जानकी जी का मैं ध्यान करता हूँ ॥ १ ॥

ॐ भूमि पुत्री मेरे शिर की रक्षा करें, जनककुमारी मेरे ललाट की, धरणीतनया मेरे नेत्रों की, तथा श्रीवैदेही मेरे कानों की रक्षा करें ॥ २ ॥ श्री जानकी जी मेरी जिह्वा की रक्षा करें तथा जनकनन्दिनी मेरी ग्रीवा (गले) की, महामाया मेरे स्कन्धों की, तथा सुलोचना

मेरी भुजाओं की रक्षा करें ॥ ३ ॥ श्री सीता मेरे हाथों की-श्रीरामजी के पास रहने वाली ऊरू (जंघा) की पद्माश्री मेरे मध्य भाग की, तथा वनवासिनी मेरे नाभि की रक्षा करें ॥ ४ ॥ योगेश्वरी मेरे कटि की रक्षा करें तथा मृगध्वंसिनी मेरे सक्थिनी की, उर्वशी मेरे ऊरु की तथा भिल्लिनी को मोक्ष प्रदान करने वाली मेरे जानुनी (घुटनों) की रक्षा करें ॥ ५ ॥ बलि का प्रमथन करने वाली मेरे दोनों पाँवों की रक्षा करें। स्वच्छाङ्गी मेरे सर्वाङ्ग की रक्षा करें, प्रबोधिनी मेरी सदैव सर्वत्र रक्षा करें ॥ ६ ॥ विभीषण को श्री प्रदान करने वाली सद्यः दशो दिशाओं में मेरी रक्षा करें। यह श्री सीता जी का कवच देवताओं को भी दुर्लभ है ॥ ७ ॥ इसका नाम "त्रैलोक्य मोहन" है यह त्रिभुवन की सम्पत्ति प्रदान करने वाला है। जो पूजा करते समय मेरे सामने ध्यान रखकर इसका पाठ करता है ॥ ८ ॥ हे लक्ष्मण ! मैं उसको सभी-वाञ्छित फल प्रदान करता हूँ। "ॐ ह्रीं श्रीं सीतायै नमः" यह श्री जानकी जी का अष्टाक्षर मन्त्र है। दश हजार जप करने से सर्व सिद्धियां प्रदान करता है, वटवृक्ष के नीचे १८०० पाठ जो नित्य करता है ॥ ९ ॥ ऐसा एक वर्ष पर्यन्त जो कोई मनुष्य करे, घी-क्षीर-शर्करा का हवन करे एक बार केवल गेहूँ का भोजन करे, भूमि पर शयन करे। जितेन्द्रिय रहे, ब्राह्मणों को दक्षिणा-वस्त्र-अलङ्कार दान करे। अपने धर्म में दृढ़ रहकर किसी प्राणी की हिंसा न करे, सत्य ही बोले, चतुराई से एकचित्त होकर बड़े उत्साह से कवच पाठ करे, उसके कवच की साक्षात् स्फूर्ति होती है, अपुत्र को पुत्र मिलता है, यह श्रीराम वाक्य सत्य है। दश हजार पाठ करने से एक पुरश्चरण हो जाता है, हे लक्ष्मण ! साक्षात् दिव्य कल्प तरु श्रीसीता जी का यदि ध्यान करे तो वह तुरन्त वरदान देकर उसके मनोरथ पूर्ण कर देती हैं यह मैं सत्य कहता हूँ सत्य कहता हूँ ॥ ९-१०-११-१२-१३-१४ ॥

"इस श्रीरुद्रयामल तन्त्र का श्रीरामलक्ष्मण सम्बाद स्वरूप श्रीराम प्रणीत यह "श्रीसीता कवच" सम्पूर्ण हुआ ॥"

—:ꕥ:—

ꕥ जगदीश्वर्यै श्रीजानक्यै नमः ꕥ

ꕥ जगदीश्वरी से शुभकामना ꕥ

विदेहकन्या मृदुलस्वभावा परादिशक्तिश्च कृपास्वरूपा।
आचार्यपादाम्बुज भक्तिनिष्ठमवत्वनिन्द्यं जगदीश्वरी च ॥

अति कोमल शील स्वभाव वाली- परात्परा आदिशक्ति कृपास्वरूपिणी, श्रीविदेहराज-कुमारीजू आचार्य चरणों में भक्तिनिष्ठा रखनेवाले निर्दोष प्रशंसनीय तुम्हारी सदा सुरक्षा करें।

—श्रीसीतारामीय श्रीमथुरादासजी महाराज

-: अथ श्रीसीतारामात्मकं कवचम् :-

।। सप्तमः पटलः ।।

॥ राजोवाच ॥

सीतारामात्मकं ब्रूहि कवचं सर्वसिद्धिदम् । नित्यं यत्पठनादेव रक्षिताङ्गो नरोभवेत् ॥१॥

॥ श्रीशिव उवाच ॥

अतिगुह्यतमं राजन् सर्वसिद्धिप्रदायकम् । कवचं परमंगोप्यं तवस्नेहाद्वदाम्यहम् ॥२॥
कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुपकीर्त्तितः । सीतारामो महाराज देवता परिकीर्त्तितः ॥३॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः । श्रीबीजं मे शिरः पातु सीतायै जठरे मम ॥४॥
स्वाहेति चरणौ पातु सर्वाङ्गं सा षडक्षरी । रामोऽव्यान्मे शिखानित्यं रामायहृदयं मम ॥५॥
पादोऽधो मे नमो रक्षेद्रामः सर्वं षडक्षरः । रमाबीजात्मिका सीता ललाटं मे सदावतु ॥६॥
प्रणवात्मा सदा पातु रामो दशरथात्मजः । वामं भ्रुवं सदा रक्षेज्जनकानन्दवर्द्धिनी ॥७॥
तामेव दक्षिणां रक्षेत्सदा दशरथप्रियः । वामनेत्रं सदा रक्षेद्रामपत्नी सनातनी ॥८॥
नेत्रं दक्षिणमव्यान्मे सीताजानिः सनातनः । कर्णं वामं सदा रक्षेत्सदा कमलवासिनी ॥९॥
दक्षिणं कर्णमव्यान्मे कमलावल्लभोऽव्ययः । सव्यं कपोलमव्यान्मे महालक्ष्मीश्चमामकम् ॥
कपोलं दक्षिणं मेऽव्याल्लक्ष्मीजानिः सदा मम । कण्ठंपातु महालक्ष्मीर्वक्षं पातु रमापतिः ॥
पार्श्वयुग्मं सदाऽव्यात्तां लक्ष्मीनारायणौ क्रमात् । जानकी जानकीजानिः दम्पती मे कटिद्वयम्
वामाञ्जङ्घां सदापातु रामपार्श्व निवासिनी । दक्षिणां जङ्घिकामव्यात्सीतादक्षिणपार्श्वगः ॥
जानुयुग्मं सदापातां भक्तानुग्रहकारिणौ । गुल्फयुग्मं सदा पातां भवबन्धविमोचिनौ ॥१४॥
सर्वाङ्गं सततं पातां भुक्तिमुक्तिप्रदायिनौ । इति ते कथितं दिव्यंकवचं सर्वकामदम् ॥१५॥
पठनादस्य राजेन्द्र सर्वरक्षाभवेन्नृणाम् । यं यं कामयते कामं तं तं काममवाप्नुयात् ॥१६॥
इदं धारणमात्रोऽहं त्रिकालज्ञो महेश्वरः । इदन्तु कवचं ज्ञात्वा सीतारामं समर्च्चयेत् ॥१७॥
स एव मनुजोलोके सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् । यस्मै-कस्मै न दातव्यं नास्तिकाय विशेषतः ॥१८॥
दातव्यंविप्रमुख्याय वैष्णवाय विशेषतः ॥ १९ ॥

॥ इति श्रीयामल सारोद्धारे मिथिलाखण्डे श्रीसीतारामात्मकंकवचं समाप्तम्
सप्तमः पटलः सम्पूर्णं ॥

—: श्रीसीतारामात्मक-कवचम् :—

श्रीविदेह महाराज ने प्रार्थना की:—

जिसका नित्य पाठ करने से मनुष्य सदैव सुरक्षित रहता है ऐसे सर्व सिद्धि प्रदाता "श्रीसीतारामात्मक कवच" को आप कृपा कर हमसे कहिये ॥ १ ॥

श्रीशङ्कर-भगवान ने कहा.—

अत्यन्त गोपनीय सर्वसिद्धि प्रदायक इस परमगुप्त कवच को आपके प्रेम के वशीभूत होकर मैं सुनाता हूँ ॥ २ ॥ इस कवच के ब्रह्म ऋषि है, अनुष्टुप् छन्द हैं। श्री सीताराम जी महाराज देवता हैं, धर्मार्थ काममोक्ष प्राप्ति में इसका विनियोग कहा गया है ॥ २-३ ॥ 'श्रीं' बीज मेरे शिर की रक्षा करे, "सीतायै" पद मेरे जठर की रक्षा करे। "स्वाहा" शब्द मेरे पावों की रक्षा करें। मेरे सर्वाङ्ग की रक्षा "श्री सीतायै स्वाहा षडक्षरी विद्या करे ॥ 'रां' मेरे शिखा की तथा 'रामाय' पद मेरे हृदय को नित्य ही रक्षा करे ॥ ४-५ ॥ 'नमः' मेरे पादतल की रक्षा करे तथा "रां रामाय नमः" षडक्षर महामन्त्र मेरे सर्वाङ्ग की रक्षा करे। "रमा बीजा-त्मिका" सीता मेरे ललाट की सदैव रक्षा करें ॥ ६ ॥ दशरथकुमार "प्रण की आत्मा राम" मेरी सदैव रक्षा करें। श्री जनक जी के आनन्द को बढ़ाने वाली मेरी बायीं भौंहें की रक्षा करें। श्री दशरथ जी के प्राणप्रिय राम मेरी बायीं भौंहे की रक्षा करें। श्रीराम पत्नी सना-तनी सीता मेरे बाए. नेत्र का सदा रक्षण करें ॥ ७-८ ॥ सनातन श्रींसीतापति मेरे दहिने नेत्र का रक्षण करें। कमल वासिनी मेरे वामकर्ण की सदैव रक्षा करें ॥ ९ ॥ कमलावल्लभ अन्त्य-यात्मा श्रीराम मेरे दहिने कान की रक्षा करें। मेरे बाए कपोल की श्री महालक्ष्मी जी रक्षा करें ॥ १९ ॥ मेरे दाहिने कपोल की श्री लक्ष्मीपति सदैव रक्षा करें। मेरे कण्ठ की महालक्ष्मी तथा मेरे वक्षस्थल की रमापति रक्षा करें ॥ ११ ॥ बायें पार्श्व की लक्ष्मी तथा दाहिने पार्श्व की श्रीमन्नारायण रक्षा करें ॥ श्रीजानकीजी तथा श्री जानकीपति मेरे कटि की रक्षा करें ॥ १२ ॥ बायीं जंघा का श्रीरामजी के पास में निवास करने वाली रक्षा करें। दाहिनी जंघा को श्रीराम के दाहिनी ओर विराजमान श्रीसीताजी हमारी रक्षा करें ॥ १३ ॥ मेरी दोनों घुटनों की भक्तों पर अनुग्रह करने वाले श्रीयुगल प्रभु सदैव रक्षा करें ॥ मेरी दोनों पिंडलियों की भवबन्धन छुड़ाने वाले दोनों प्रभु सदैव रक्षा करें ॥ १४ ॥ भुक्ति-मुक्ति प्रदाता दोनों प्रभु श्री सीताराम मेरे सर्वाङ्ग की सतत् काल रक्षा करें। इस प्रकार यह सर्वकाम प्रदायक दिव्य कवच का मैंने आपको कथन करके सुनाया है ॥ १५ ॥ हे राजेन्द्र ! इसका पाठ करने से मनुष्यों की सदैव सर्वत्र रक्षा होती है। तथा जो-जो चाहना करता है वह-वह उसको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥ इसके धारण करने से मैं त्रिकालज्ञ महेश्वर कहाता हूं। इस कवच को जानकर जो श्रीसीताराम जी की अर्चना करता है, वही मनुष्य संसार में सभी सिद्धियों का अधिपति बनता हैं। यह

जिस-तिस को नहीं देना चाहिये विशेषतः नास्तिक को कभी न देवें । विशेषतः श्री वैष्णव ब्राह्मण को देना चाहिये ॥ १७-१८-१९ ॥

"इस प्रकार श्रीयामल सारोद्धार तन्त्रान्तर्गत श्री मिथिला खण्ड का श्रीसीता-रामात्मक कवच स्वरूप यह सातवां पटल सम्पूर्ण हुआ ।"

—:※※※:—

अथ श्रीसीतापटलस्तोत्र प्रारम्भः

गृहे सीता वने सीता-सीताराम परायणी । सीता योगेश्वरी-राज्ञी-आराधिता मया ॥
सीता स्वयंभुवादेवी सीतागैभूमिनन्दिनी । विदेहतनया सीता सीता आराधिता मया ॥
सीता वाल्मीकिपुत्री च सीताबुद्धिप्रवर्द्धिनी । श्रीरामवल्लभा लक्ष्मीसीता आराधिता मया ॥
सीता विश्वस्यमाता वै सीतागुप्ता महेन्दिरा । सीतारक्षोनलाख्याता नस्त्रातु शोभना सती ॥
इदं वै हनुमत्प्रोक्तं सीतानामात्मकंमहत् । सीतास्तोत्रं पठेद्यस्तु स राम प्रियतां व्रजेत् ॥
इदं स्तोत्रं महत्पुण्यं जानक्याः पटलं शुभम् । महद्गोप्यं महद्गोप्यं न देयं प्राकृते जने ॥

॥ इति श्रीसुन्दरी तन्त्रे श्रीहनुमत्प्रोक्तं श्रीसीतापटलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीसीतापटलस्तोत्रम्

घर में सीताजी ही हैं, वन में भी श्रीसीताजी ही हैं, श्रीसीता रामपरायणी हैं । सीता योगेश्वरी हैं, तथा रानी हैं ऐसी सीता की मैं आराधना करता हूं ॥ १ ॥ सीता स्वयं ही प्रकट हुई हैं, देवी हैं वही सीता भूमिनन्दिनी हैं । सीता श्रीविदेहराजकुमारी है, मेरे द्वारा उनकी ही आराधना होती है ॥ २ ॥ श्रीसीता को पुत्री की भांति वाल्मीकि मुनि ने पाला है, सीता बुद्धि की विशेषतः वृद्धि करने वाली हैं, जो श्रीरामवल्लभा हैं, लक्ष्मी हैं ऐसी सीता का मैंने आराधन किया है ॥ ३ ॥ सीताजी विश्व की माता हैं । वही गुप्त महालक्ष्मी हैं श्री सीता को लोग राक्षस कुल का दावानल जानते हैं । वह महासती परमशोभना श्री सीता जी हम सब की रक्षा करें ॥ ४ ॥

यह श्री हनुमान जी द्वारा कहा हुआ श्रीसीतानामात्मक महान् श्रीसीता स्तोत्र का जो कोई पाठ करता है वह श्रीरामजी की प्रियता को प्राप्त करता है ॥ ५ ॥ यह महान् पुण्य स्वरूप "श्री जानकी पटल" नामक परमशुभ स्तोत्र महान् गोपनीय है सर्व साधारण प्राकृत जनों को यह नहीं देना चाहिये ॥ ६ ॥

"यह श्रीसुन्दरी तन्त्रोक्त श्रीसीता पटल नामक श्रीसीता स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ ।"

|| श्रीजानकी त्रैलोक्य मंगल कवचम् ||

[सम्मोहन तन्त्रोक्तम्--बीज प्रयुक्तम्]

|| श्रीलक्ष्मण-उवाच ||

कवचं सम्प्रवक्ष्यामि जानक्याः सर्वसिद्धिदम् ।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम् || १ ||

ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्यमङ्गलश्रीजानकी कवचस्य हनुमान् ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीजानकीदेवता । श्रींबीजम् । स्वाहा शक्तिः । मम सर्वेष्टसाधने पाठे विनियोगः । ततः ऋष्यादि न्यासं संविधाय । ॐ आह्लादिन्यै नमः । ॐ सहजानन्दिन्यै नमः । ॐ लक्ष्मणायै नमः । ॐ मदनमञ्जर्यै नमः । ॐ चारुशीलायै नमः । ॐ चन्द्रकलायै नमः । इति हृदयादिन्यासं विधायहस्ते जलमादाय श्रीसीतामन्त्रेणाभिमन्त्र्य-

ऐं ह्रीं क्लीं ॐ नमोभगवति श्रीसीते सर्वसिद्धिप्रदे मम सर्वतो ज्वल-ज्वल, प्रज्वल-प्रज्वल, मां रक्ष-रक्ष, मम सर्व यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि सिद्धिं देहि-देहि, परकृत यंत्र-मन्त्र-तन्त्र चेटकादि प्रयोगान् नाशय-नाशय, भयंनिवारय-निवारय; सर्वंअसाध्यं साधय-साधय हूं फट् स्वाहा । इति दिग्बन्धनम् । अथ ध्यानम्—

कौशेशपीतवसनामरविन्दनेत्रां रामप्रियाऽभयवरोद्य त पद्महस्ताम् ।
उद्यच्छताकर्सदृशीं परमासनस्थां ध्यायेद्विदेहतनयां सखिभिः सहस्रैः ||

इति ध्यात्वा "ऐं क्लीं ह्रीं ॐ श्रीं सीतायै स्वाहा" अष्टोत्तरशतं जप्त्व कवचं पठेत्—

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सदा पातु मस्तकं रामवल्लभा ।
ऐं आं ॐ नेत्रयुग्मं पातु मे जनकात्मजा || १ ||
ॐ ईं हं कपोलौ च क्रीं हूं ह्रीं बाहू वसुमती सुता ।
ऐं क्रूं ह्रूं ऐं मुखं मे राम रामा च ह्रीं ग्रीं ह्रीं गिरिज गिरा ||२||

श्रीं ह्रीं श्रीं हृदयं पातु ह्रीं क्रीं ऐं पातु कण्ठं हरिप्रिया । ॐ ह्रीं हुं फट् उदर मे तारा पातु, ह्स्रौं ह्रीं ह्रीं हूं, कुक्षि मे पातु कौमारी || ३ || ह्रीं श्रीं क्रीं वक्षः पातु सुलोचना । ह्रीं श्रीं ऐं नाभिनारायणी पातु, ऐं ह्रीं क्लीं गुह्यं गुह्यार्थबोधिका ||४||

ह्रीं क्लीं ऐं कटिं मे कमला पातु क्लीं ऐं ह्रीं सक्थिनी राघवप्रिया । श्रां लृं मेढ्रं च मे पातु श्रां ह्रीं क्रौं जानुनी पद्मधारिणी ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं क्रीं स्वाहा मे जंघे जनकजा पातु क्रीं क्रीं क्रीं कालिका पार्श्वयोर्मम । ह्रीं ह्रीं स्त्रीं नीला पादाङ्गुली पातु ॐ योगमाया च मे पदौ ॥ ६ ॥ ऐं क्लीं सौः ॐ ऐं हुं फट् स्वाहा पादाधः सुन्दरी पातु रामानन्द प्रदायिनी । ॐ गं हं हं सः सोऽहं स्वाहा पाताले मां यज्ञकरा ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं भूलोके रघुवल्लभा ॥ ७ ॥ ॐ रं श्रीं ह्रीं धं धनदायै स्वाहा दिक्षु सर्वासु सत्या मां ॐ ऐं ह्रीं लां हुं हुं फट् दुर्गा दुर्गति हारिणी । ॐ श्रां ह्रां जानकी पातु सर्व मन्त्रमयी शिवा ॥ ८ ॥ हुं फट् सार्धं ब्रह्माक्षरी विद्या शाबरी पातु मां सदा। ॐ श्रां ह्रीं क्रीं चूं स्वाहा क्रौं श्रां पातु घोर शस्त्रास्त्रे जानकी सर्वमङ्गला ॥ ९ ॥ द्रां ग्रीं क्लीं रक्ष रक्ष सदा राम पद प्रीति प्रदायिनी । ॐ जूँ सः पातु मां जानकी नित्यं जाग्रत-स्वप्नसुषुप्तिषु ॥ १० ॥ सीतेति द्व्यक्षरो मन्त्र ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं पातु पञ्चाक्षरी विद्या मार्गे राज-भये सदा ॥ ११ ॥ ॐ जनकजायै विद्महे भूमिजायै च धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात् । श्रीं सीतायै स्वाहा, सर्वत्र सर्वविद्याभिः गायत्री पातु सर्वगा ॥ १२ ॥

इदं तु कवचं दिव्यं बाधाशत विनाशनम् ।
सर्वसिद्धिप्रदं दिव्यं लक्ष्मणेन प्रकाशितम् ॥ १३ ॥

कपीन्द्रो धारयामास ब्रह्मास्त्रादि विनाशनम् ।
एतद् धारण मात्रेण लङ्का येन विदाहिता ॥ १४ ॥

कवचध्यान मात्रेण लङ्घिता सप्त सागराः ।
सर्वकार्यस्य सिद्धिर्हि कवच स्मरणाद्भवेत् ॥ १५ ॥

चिरंजीवी भवेल्लोके सर्वसिद्धि युतेन वै ।
त्रैलोक्य मङ्गलं नाम कवचं ब्रह्म संज्ञकम् ॥ १६ ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन कवचं देव दुर्लभम् ।
कवचस्य पाठकर्ता दृश्यते भुवि दुर्लभः ॥ १७ ॥

त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव संग्रामे विजयी भवेत् ।
मनः सिद्धिमुपागम्य ब्रह्मलोकमुपैति सः ॥ १८ ॥

राजरोग भयं नास्ति सर्व दुर्गति नाशकृत् ।
राजद्वारे श्मशाने च वने दुर्जन सङ्गमे ॥ १९ ॥

चौर-सिंह भयं न स्यात् सीतायाश्च प्रसादतः ।
अपुत्रः पुत्रवान् लोके धनार्थी धनवान् भवेत् ॥ २० ॥
सर्वान् कामानवाप्नोति नरो नारायणः स्वयम् ।
आपदस्तस्य नश्यन्ति निर्मलं च मनं भवेत् ॥ २१ ॥
बहुभूतिं च सम्प्राप्य नृपाणामधिपो भवेत् ।
कवचं मास मात्रं च प्रयतः शुचि मानसः ॥ २२ ॥
अचलां लभते शक्तिं प्रसन्ना जानकी सदा ।
इति श्रीसम्मोहन तन्त्रोक्तम् बीज प्रयुक्तम् श्रीजानकी त्रैलोक्य मङ्गलकवचम् सम्पूर्णम् ॥

—:❀:—

॥ श्रीजानकी त्रैलोक्य मङ्गल कवचम् ॥

श्री लक्ष्मण जी ने कहा—

अब मैं श्री जानकी जी के त्रैलोक्य मङ्गल कवच स्तोत्र जो मनुष्यों को सर्व प्रकार की सिद्धियां सहज में ही देने वाला है उसका वर्णन करता हूँ—

इसका सङ्कल्प-ऋष्यादिन्यास हृदयादिन्यास करके "श्रीं सीतायै स्वाहा" इस मूल मन्त्र से जल अभिमन्त्रित करके दिग्बन्धन करना चाहिये, तत्पश्चात्—

सुन्दर पीले रेशमी वस्त्र पहने-कमल के समान विशाल नयनों वाली-सदैव भक्तों को अभय वरदान देने के लिये जिनका कर कमल उठा ही रहता है ऐसी कृपामयी सैकड़ों सूर्योदय के समान अत्यन्त प्रकाशमान, सुन्दर विशाल दिव्य भव्य आसन पर विराजमान, हजारों सखियों द्वारा सुसेवित श्रीविदेह राजकुमारी जी का ध्यान करें । तत्पश्चात्—"ऐं-क्लीं-ह्रीं ॐ श्रीं सीतायै स्वाहा" इस महा मन्त्र का १०८ वार १ माला जप करके कवच का पाठ करे—

कवच पाठ की फल श्रुति—

यह सैकड़ों प्रबल बाधाओं का विनाश करने वाला सर्व सिद्धि प्रदायक श्री लक्ष्मण जी के द्वारा प्रकाशित श्री जानकी त्रैलोक्य मङ्गल कवच परम दिव्य है ॥ १३ ॥ श्रीहनुमानजी ने इसके प्रताप से मेघनाद द्वारा प्रयुक्त ब्रह्मास्त्र का निवारण कर दिया और इसके धारण करने मात्र से ही सोने की लङ्का जला दी एवं इस कवच का ध्यान करने ही सातों समुद्र लांघ गये॥ इस कवच के स्मरण करने से सभी कार्यों में शीघ्र ही सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है ॥ १४-१५ ॥

इसके पाठ करने से मनुष्य चिरंजीवी होता है तथा सर्व सिद्धि सम्पन्न बन जाता है। यह त्रैलोक्य का मङ्गल करने वाला ब्रह्म स्वरूप परम दिव्य कवच है । इसको प्रयत्न पूर्वक

गुप्त ही रखना चाहिये। यह देवताओं को भी दुर्लभ है, इस कवच का नियम पूर्वक पाठ करने वाला इस पृथिवी पर दुर्लभ ही है, परन्तु यदि कोई निष्ठा पूर्वक इसका प्रतिदिन पाठ करे तो वह त्रिभुवन को क्षुभित कर संग्राम में विजय प्राप्त करता है। तथा जीवन पर्यन्त मनमाना सुख भोग कर अन्त में ब्रह्म लोक की प्राप्ति करता है। १६-१७-१८ ॥ इसके पाठ करने वाले को राज रोगों (असाध्य भयङ्कर रोगों) का भय नहीं रहता हैं, सभी प्रकार की दुर्गति का विनाश करने वाला है। राजद्वार में (मुकदमा बाजी में) श्मशान में भूत-प्रेत से, भयंकर वन में हिंसक प्राणियों से, चोर-डकैत-शैतान-दुर्जन मनुष्यों से, किसी प्रकार का भय श्री जानकी जी की कृपा से उसको कभी नहीं होता है। अपुत्र को पुत्र तथा निर्धन को धन प्राप्त होता है; सर्व कामना पूरी होती है, मनुष्य इस लोक में ही नारायण की भाँति पुजाता हैं। उसकी सभी आपत्तियां नष्ट हो जाती हैं, मन निर्मल हो जाता है विपुल सम्पत्ति पाकर राजाओं से बढ़कर सुख प्राप्त करता है। एक महीना नियम पूर्वक पवित्र मन से पवित्र आचरण से जो पाठ करता है वह अविचल शक्ति और भक्ति प्राप्त करता है, उस पर श्री जानकी जी सदैव प्रसन्न रहती हैं ॥ १९-२०-२१-२२ ॥

"यह सम्मोहन तन्त्र का बीज प्रयोग सहित श्रीजानकी त्रैलोक्य मङ्गल स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।"

श्रीकिशोरीजी की सहचरी श्रीदक्षिणकालिका

[श्रीदेवकाली की प्रार्थना]

श्रीरामचन्द्रमुखचन्द्रचकोरकान्तां सीताङ्गभूत प्रणतार्तिहरां मनोज्ञाम् ।
राजेश्वरीं विबुधवृन्दगणाभिवन्द्यां देवीं भजे दक्षिणकालिके त्वाम् ॥ १ ॥
पापानि नाशय प्रकाशय रामलीलां प्रीतिं प्रदेहि रघुनन्दनपादपद्मे ।
विश्लेषप्रीतिरहितां दृढसख्यनिष्ठां तत्सङ्गिनां सुहृदतां शिवतत्त्वजुष्टाम् ॥ २ ॥

श्रीरामचन्द्रजी के मुखचन्द्र की चकोरी, श्रीजानकीजी की अङ्गभूता सहचरी, शरणागतों की पीड़ा हरनेवाली अतिमनोहर, देवगणों द्वारा वन्दनीय, राजेश्वरी हे श्रीदक्षिणकालिके ! (श्रीदेवकाली) मैं आपका भजन करता हूं ॥ १ ॥ आप मेरे पापों का विनाश करें, श्रीराम लीला का मेरे हृदय में प्रकाश करें, श्रीरघुनन्दन प्रभुके श्रीचरणारविन्दों में प्रीति प्रदान करें। कभी भी वियोग न होनेवाली सख्यरस की दृढ़निष्ठा प्रदान करें तथा उनके संगी-पार्षद परिकरों के संत भक्तों के साथ सौहार्दपूर्ण कल्याणप्रद तत्त्व से भरपूर मैत्री प्रदान करें ॥२॥

—श्रीस्वामी सीताप्रसादजी महाराज

श्रीजानकीत्रैलोक्यमोहनकवचम्

ॐ अस्य श्रीजानकी त्रैलोक्य मोहन कवचस्य श्रीहनूमान् ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीजानकी देवता श्रीजानकी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं सदापातु मस्तके रामवल्लभा ।
ॐ ऐं आँ अँ नेत्राभ्यां सर्वाङ्गे जनकात्मजा ॥१॥
अं ईं ईं ईं कपोलौ च बाहू वसुमती सदा ।
श्रीं श्रीं श्रीं हृदये पातु वक्षस्थल हरिप्रिया ॥२॥
तां तां तौं उदरे मे च सदापातु दृढ़व्रता ।
कौमारी कुक्षिकं पातु श्रीं ह्रूं कञ्जविलोचना ॥३॥
नाभिं नारायणीं पातु ऐं क्लीं च गुह्य देशयोः ।
कटिं च कमला पातु ह्रीं ह्रूं च राघवप्रिया ॥४॥
आं ईं ईं ईं सदापातु हस्तौ च पद्म धारिणी ।
जङ्घे जनकपुत्री च क्रीं क्रीं क्रीं रामपार्श्वदा ॥५॥
अंगुली सततं पातु ग्रीं ग्रीं ग्रीं गिरिजा गिरा ।
रां रां राँ माँ च नित्यं योग माया च सर्वगाः ॥६॥
भूमौ च नृवरा पातु रामानन्द प्रदायिनी ।
अधः पद्मकरा पातु भूलोके भृगुवल्लभा ॥७॥
सत्यवती सर्वदिक् पातु दुर्गे दुर्गति नाशिनी ।
आम्नां ह्रां चैव जानक्या सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥८॥
बुद्धौ च युवती पातु सर्व मन्त्रमयी तथा ।
घोर शस्त्रेषु रक्षांतां पुष्पतुल्यं च तद्भवेत् ॥९॥
रक्ष-रक्ष सदा रामे रतिप्रीत्या च कारिणी ।
रक्षन्तु सीतया नित्यं जाग्रत्स्वप्न सुषुप्तिषु ॥१०॥
द्वयाक्षरो महामन्त्रो सर्वतश्चतुराक्षरो ।
चतुः पञ्चाक्षरंमन्त्रं वारुणां देव कल्पकाः ॥११॥

एतद्दत्ता महत्पुण्या लक्ष्मणेन प्रभाषिता । कपीन्द्रो प्रोक्तवान् रक्षः ब्रह्मपाश निवारिणी ।
तेन सत्येन मे देव लंका येन विदाहिता । जानकी ध्यान मात्रेण लंघिताः सप्तसागराः ॥
रामकार्यं च सिद्धिः स्यात् कवचस्य प्रसादतः । चिरंजीवी भवेदेव जानकी कवचं मुदा ॥
त्रैलोक्यमोहनं नाम कवचं ब्रह्मभाषितम् । समन्त्र साक्षराभ्यां च साऽनुरूपां च ध्यापयेत् ॥
कवचं च महत्पुण्यं न देयं यस्य कस्यचित् । गोपितव्यं प्रयत्नेन कवचं ब्रह्मरूपिणम् ॥
कवचस्य पाठकर्ता दृश्यन्ते भुवि दुर्लभाः । त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव संग्रामे विजयी भवेत् ॥
मनसासिद्धि संप्राप्य ब्रह्मलोकं स गच्छति । राजरोग भयं नास्ति सर्व दुर्गति सौम्यहृत् ॥
श्मशाने राजद्वारे च वने दुर्गम संप्लवे । चौर सिंह भयं नास्ति सीतायाश्च प्रसादतः ॥
अपुत्रो पुत्रवान् लोके धनार्थी धनमाप्नुयात् । सर्वान्कामानवाप्नोति नरो नारायणः स्वयम् ॥
आपदस्तस्य नश्यन्ति निर्मलं च भवेत्तनुः । बहुभूमिं च संप्राप्य भवेच्चैव नराधिपः ॥
कवचं मासमात्रं च स्थित्वा पठति यः पुमान् । अचलां च लभेद्भूतिं प्रीता श्रीजानकीपरा ॥
ॐ सहजायै विद्महे रामपत्न्यै च धीमही तन्नः सीते प्रचोदयात् (इति पाठान्तरे) गायत्रींशतधा जपेत् ॥ २३ ॥

एतदेवहि गायत्री जानकी प्रीति वर्धिनी । गायत्री जपमात्रेण सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥२४॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेज्जानकी मनुं । शतलक्ष प्रजप्तोऽपि न मन्त्र सिद्धिदायकः ॥२५॥
आदौ प्रणव मुचार्य श्रीसीतायै तु मध्यतः । स्वाहा चान्तेतु संयुज्य मन्त्रोऽयं समुदाहृतः ॥

॥ "ॐ श्रीं सीतायै स्वाहा" ॥

'हरिः ॐ तत्सत् इति श्रीसम्मोहन तन्त्रे त्रैलोक्य मोहनं नाम
श्रीजानकीकवचं सम्पूर्णम्" ॥

विधिः—

पाठ १२०० पुरश्चरणम् । प्रातःकाले पाठः । मासमात्रेव ।

"ॐ ऐं ऐं क्लीं अमृत वैष्णवे रुद्राय अमृत संजीवनी शक्तिसहितायै श्रीजानकी-कवचमुत्कीलय- उत्कीलय शापं मोचय-मोचय अमृतेन संजीवय- संजीवय सिद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा" इति दशवारं जप्त्वा ततः कवचं पठेत् ।

टिप्पणी:-❀ ॐ जनक नन्दिन्यै विद्महे रामवल्लभायै ।
धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात् ॥ इति वा पाठः ॥

ॐ अस्य श्रीजानकी त्रैलोक्यमोहन कवचास्य श्रीहनुमानृषिः अनुष्टुप् छन्दः श्री जानक्याद्याशक्तिर्देवता ह्रीं बीजम् श्रींशक्तिः मम सर्वइष्ट सिध्यर्थे जपे विनियोगः। इति संकल्पः ॥ इत्यपि पाठान्तरे ।

ॐ जानक्यै नमः मूर्ध्नि, ॐ श्रींसीतायैनमः ललाटे । ॐ धरण्यैनमः कर्णयोः । ॐ श्रीरामप्रियायै नमः; हृदये । ॐ ह्रीं श्रींशक्तये नमः सर्वांगे,

ध्यायेच्चंपक वद्वर्णां हेमांगी नीलवस्त्रकाम्, सर्वालंकार संयुक्तां राम बामे सदा स्थिताम् ।

श्रीहनुमानृषये नमः शिरसि । अनुष्टुप् छन्दसे नमः-मुखे । श्रीजानकी आद्या-शक्ति देवतायै नमः हृदये । ह्रीं बीजायनमः नाभौ । श्रींशक्तये नमः पादयोः जपेविनियोग नमः सर्वाङ्गे"

इति ऋष्यादिन्यासः ॥

—:❀❀❀:—

❀ श्री जनकनन्दिन्यै नमः ❀

॥ श्रीजानकी त्रैलोक्य मोहन कवचम् ॥

श्री जानकी त्रैलोक्य मोहन कवच के श्री हनुमान जी ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द हैं, श्री जानकी देवता हैं, श्रीजानकीजी के प्रसन्नार्थ इसके पाठ का विनियोग है ।

ॐ श्रीं-ह्रीं-क्लीं श्रीरामवल्लभा सदैव मेरे मस्तक की रक्षा करें । ॐ ऐं आं ऊं जन-कात्मजा मेरे दोनों नेत्र तथा सर्वाङ्ग की रक्षा करें ॥ १ ॥ ऊं ईं ईं ईं वसुमती मेरे दोनों कपोल तथा दोनों बाहुओं की सदा रक्षा करें । श्रीं श्रीं श्रीं हरिप्रिया मेरे वक्षस्थल तथा हृदय की रक्षा करें ॥ २ ॥ तां ताँ तौ दृढ़व्रता मेरे उदर की रक्षा करें । श्रीं-ह्रीं कञ्जविलोचना कौमारी मेरी कुक्षि (कोख) की रक्षा करें ॥ ३ ॥ ऐं क्लीं नारायणी मेरी नाभि तथा गुह्य प्रदेश की रक्षा करें ॥ ह्रीं ह्रीं कमला राघव प्रिया मेरे कमर की रक्षा करें ॥ ४ ॥ आँ ईं ईं ईं पद्म धारिणी मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें । क्रीं क्रीं क्रीं जनक पुत्री राम पार्श्वदा मेरे जँघाओं की रक्षा करें ॥ ५ ॥ ग्रीं ग्रीं ग्रीं गिरिजा गिरामेरी अंगुलियों की रक्षा करें । रां रां राँ योगमाया-सर्वगा मेरी नित्य ही रक्षा करें ॥ ६ ॥ नारियों में श्रेष्ठा-रामानन्द प्रदायिनी मेरी भूमि पर रक्षा करें । अधः लोक में पद्मकरा तथा भूलोक में भृगुवल्लभा मेरी रक्षा करें ॥ ७ ॥ सत्यवती सभी दिशाओं में दुर्ग कोट किल्ला में दुर्गति नाशिनी मेरी रक्षा करें ॥ आम्नां-ह्रां जानकी जी का यह मन्त्र मनुष्यों की सर्व-प्रकार से रक्षा करने वाला है ॥ ८ ॥ सर्व मन्त्रमयी युवती बुद्धि की रक्षा करें । घोर शस्त्रों के प्रहार के समय वे

मेरी ऐसी रक्षा करें कि वह (ब्रह्मास्त्रादिका) घोर अस्त्र भी पुष्प के समान कोमल हो जाय ॥ ६ ॥ श्रीराम में रति-प्रीत करने वाली आप मेरी सदैव रक्षा करें । जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति आदि सभी अवस्थाओं में नित्य ही "श्रीसीताराम" पञ्चाक्षर ये महामन्त्र देवकल्प वृक्ष के समान हैं ये सर्वत्र हमारी रक्षा करें ॥ ११ ॥

यह महापुण्य रूपा रक्षा श्रीलक्ष्मणजी ने हनुमान जी से कहा है, कपीन्द्र हनुमान जी ने इसका पाठ किया तो मेघनाद के द्वारा प्रयुक्त ब्रह्मपाश से मुक्त हो गये ॥ १२ ॥ इसी के महत् पराक्रम से हे देव ! मैंने लङ्का जलायी तथा सातों समुद्र लाँघ लिये यह मात्र श्रीजानकी जी के ध्यान का ही प्रभाव था ॥ १३ ॥ इस कवच की कृपा से श्रीराम कार्य की सिद्धि होती है, प्रसन्नता पूर्वक श्रीजानकी कवच का पाठ करने से मनुष्य चिरंजीवी होता है ॥ १४ ॥ त्रैलोक्य मोहन नाम का यह कवच ब्रह्मा का कहा हुआ है इसका पाठ मन्त्र सहित-अक्षरों के सहित जैसा लिखा है उसी प्रकार पढ़ाना चाहिये ॥ १५ ॥ यह महापुण्य प्रद कवच जिसको तिसको नहीं देना चाहिये । यह ब्रह्म स्वरूप कवच को सदा गुप्त रखने का प्रयत्न करना चाहिये ॥ १६ ॥ इस कवच का पाठ करने वाले इस भूतल पर दुर्लभ ही दीखते हैं, यदि कोई सविधि पाठ करे तो वह तो त्रिभुवन को क्षुब्ध कर सकता है तथा संग्राम में विजय प्राप्त करता है ॥ १७ ॥ मन कामनाओं को सिद्ध कर अन्त में ब्रह्मलोक में वह जाता है । राज रोगों का उसको भय नहीं रहता है, हे सौम्य ! यह सभी दुर्गतियों का हरण करने वाला है ॥ १८ ॥ श्मशान में राजद्वार में-दुर्गभवन में-नदी समुद्र की घोर तरङ्गों में-सिंह तथा चोरों के बीच में श्री सीता जी की कृपा से उसको कुछ भी भय नहीं रहता है ॥ १९ ॥ अपुत्र को पुत्र तथा निर्धन को धन प्राप्त होता है, इसकी कृपा से सभी काम मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा नर नारायण के समान हो जाता है ॥ २० ॥ उसकी सब आपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं, उसका शरीर निर्मल हो जाता है, बहुत सी भूमि प्राप्त कर वह राजा के समान सुखी हो जाता है ॥ २१ ॥ एक स्थान पर स्थिर रहकर जो एक मास पर्यन्त प्रति दिन पाठ करता है वह मनुष्य अविचल लोक विभूति प्राप्त करता है तथा उस पर श्री जानकी जी परम प्रसन्न होती हैं ॥ २२ ॥ "ॐ सहजायै विद्महे रामपत्न्यै च धीमही तन्तः सीते प्रचोदयात् ।" इस गायत्री का १०८ बार जप करे ॥ २३ ॥ यह श्री जानकी गायत्री श्री जानकी जी की प्रीति बढ़ाने वाली है, कायत्री का जप करने से ही सर्व सिद्धि प्रदान करती है ॥ २४ ॥ इस कवच को बिना जाने समझे जो जानकी जी के मन्त्र का सौ लाख जप करे तो भी मन्त्र (लौकिक) सिद्धि प्रदायक नहीं होता है ॥ २५ ॥ पहले प्रणव का उच्चारण करें तब श्री सीतायै मध्यम में कहे अन्त में 'स्वाहा' कहे यह "ॐ श्री सीतायै स्वाहा" श्री जानकी जी का मन्त्र कहा गया है ।

❀ हरिः ॐ तत्सत् शान्तिः ❀

"श्री सीताराम पञ्चाङ्गान्तर्गत श्री सम्मोहन तन्त्र का त्रैलोक्य मोहन श्रीजानकी कवच सम्पूर्ण हुआ ।"

अस्य विधिः—

"ॐ ऐं ऐं क्लीं०" इस उत्कीलन मन्त्र का १० बार जप करे, प्रातः काल में पाठ प्रारम्भ करे, एक मास में बारह सौ १२०० पाठ पूरा करे तो पुरश्चरण हो जाता है।

विनियोग का दूसरा प्रकार भी है यथाः—

(ॐ अस्य श्री जानकी त्रैलोक्य मोहन कवचस्य श्री हनुमान ऋषिः) इत्यादि मूल में लिखा है तथा न्यास एवं ध्यान भी लिखा है सो कर लेना उत्तम है।

श्रीधनुर्बाणाष्टकम्

॥ शिवपार्वत्यावूचतुः ॥

राम ब्रह्म राजपुत्र हस्तेऽन्जस्रं विराजितौ। सूर्यानन्त प्रभावन्तौ धनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥

असुराणां घातकौ च सुराणां भयनाशकौ। निहितेभ्यो मोक्षदौ च धनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥

स्वचिह्नबाहु मूलेभ्यः सीतारामांघ्रि भक्तिदौ। श्रीराममुष्टि सौभाढ्यौ धनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥

ध्यातानन्दकरौदिव्यौ योगीनांध्यान दुर्लभौ। नित्यं रामायुधाख्यौ तौ धनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥

मम शूलाच्छक्ति शूलात्विष्णुचक्रात्परात्परौ। दिव्यन्तौ राममुष्ट्या श्रीधनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥

रासे श्रीरामचन्द्रस्य चार्वांगाभिनयेंगिते। चलच्चमत्कृता वेतौ धनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥

श्रीरामवनिताभिश्च तद्विश्लेषे समर्चितौ। स्पृसन्तीनां मोदकरौ धनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥

असुरेभ्यो भीतिप्रदौः सुरेभ्यः शरणं प्रदौ। भूमिभार हरावेतौ धनुर्बाणौ नमाम्यहम् ॥८॥

॥ इति धनुर्बाणाष्टकम् ॥

—:०:—

अम्बां किशोरीं भजे

श्रीरामेण तादात्म्यतामुपगतां कल्याणधामां शुभां—
लीलाजगद्धारिणीम्।
सर्वैश्वर्ययुतां गुणैकनिलयां
ब्रह्मादिभिर्वन्दितां—
आम्नायान्त विभावनीय चरितां
श्रीदेवीं मिथिलाधिराज तनयां अम्बां किशोरीं भजे ॥

—श्रीरघुवराचार्य स्वामिनः ॥